

रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी प्रणीत—

श्रीमहावाणी

के

सेवा-सुख

की

रसिक-बोधिनी-टीका

टीकाकार—

डॉ० प्रेमनारायण श्रीवास्तव

* श्रीमन्नित्यनिकुञ्जविहारिणे नमः *

* श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः *

रसिकराजराजेश्वर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी प्रणीत–

श्रीमहावाणी

के

सेवा-सुख

की

रसिक-बोधनी-टीका

* सखीरूपाचार्य-नाम-रत्नावली स्तवः *

श्लोक—

नमस्तस्मै भगवते कृष्णायाकुण्ठमेधसे ।
राधाऽधरसुधासिन्धौ नमो नित्यविहारिणे ॥१॥

आभास दोहा—

राधाऽधर रस सिन्धु नित, जो विहरत सुख खान ।
मति अकुंठ श्रुति वदति जिहि, नमो कृष्ण भगवान ॥१॥

भावार्थ—

जिनकी मेधा-शक्ति अकुण्ठित है, जो समस्त ऐश्वर्यों के अधिष्ठाता हैं तथा जो श्रीप्रियाजी के अधर-सुधा-रस-सिन्धु में सदा विहार करते हैं, उन भगवान् श्रीकृष्ण को बारम्बार नमस्कार है ॥१॥

श्लोक—

राधां कृष्णस्वरूपां वै कृष्णं राधास्वरूपिणम् ।
कलात्मानं निकुंजस्थं गुरुरूपं सदा भजे ।।२।।

आभास दोहा—

कृष्ण स्वरूप सु राधिका, राधा-कृष्ण स्वरूप ।
गुरु रूप कल आतमा, भजहु निकुञ्ज सु भूप ।।२।।

भावार्थ—

श्रीराधा कृष्ण-स्वरूपा हैं और श्रीकृष्ण राधा-स्वरूप हैं। ये श्रीयुगलकिशोर एक ही आत्मा की दो कलाएँ हैं। नित्य निकुञ्ज में स्थित इन प्रियाप्रियतम श्रीराधामाधव की दिव्य जोड़ी का मैं निरन्तर परम गुरु (श्रीहंस भगवान् के) रूप में भजन करता हूँ ।।२।।

श्लोक—

हरिणीं हारिणीं हीणां, हरितां चतुरक्रियाम् ।
कौमारीं सततं वन्दे, तप्तचामीकरप्रभाम् ।।३।।

आभास दोहा—

हरिणी हारिणी हरित अरु, हीणा चार स्वरूप ।
वन्दहुँ सनकादिक सखी, कनकाङ्गी जु अनूप ।।३।।

भावार्थ—

तप्त स्वर्ण के समान जिनकी अङ्गकान्ति है, जो नित्य किशोरी हैं तथा मृगों के समान जिनके नेत्र हैं ऐसी हरिणीजी,

लजीले स्वभाव वाली श्रीह्लीणाजी, हरित वर्ण की साड़ी धारण करने वाली, परम व्यवहार-कुशला श्रीहरित।जी तथा सबके मन का हरण करने वाली श्रीहारिणीजी की हम (श्रीसनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार के रूप में) सदा वन्दना करते हैं ॥३॥

श्लोक—

मुग्धां स्निग्धां विदग्धाञ्चा-सन्दिग्धां चतुरक्रियाम्
वन्देऽरुणिक्रियाभासां, देवर्षिप्रमुदाकृतिम् ॥४॥

आभास दोहा—

मुग्धा स्निग्धा विदग्धा, संदिग्धा सखि चार।
बन्दहुँ नारद रूपिणी, अरुणाङ्गी सुखकार ॥४॥

भावार्थ—

जो स्वभाव से भोली हैं, सब पर जिनका अपार स्नेह है, सम्पूर्ण कलाओं में जो दक्ष हैं, अपने परमाराध्य श्रीयुगल-किशोर के प्रति पूर्ण निष्ठा के साथ जो सेवा में तत्पर हैं, अरुण-कुमार श्रीनिम्बार्क को दिव्य प्रकाश देने वाली तथा जो बा।ह्य रूप से देवर्षि नारद की प्रसन्न मूर्ति को धारण करती हैं, उन मुग्धादि सखी की (श्रीनारदजी के रूप में) हम वन्दना करते हैं ॥४॥

श्लोक—

शिञ्जन्नूपुरपादपद्मयुगलां हंसीं गतिं बिभ्रतीम्।
चञ्चत्खंजनमंजुलोचनयुगां पीनोल्लसत्कन्धराम्

शुम्भत्कांचनकंकणद्युतिमिलत्पाणौचलच्चामरम् ।
कुर्वाणां हरिराधिकोपरिसदा श्रीरंगदेवीं भजे ।।५

आभास दोहा—

पद सरोज नूपुर बजत, हंसी जस मद चाल ।
खंजन गंजन दृग ललित, कंध सुपीन विशाल ।।
कंकण युत कर चमर लै, ढोरत युगल सुअंग ।
भजहु सु मोहन महल की, गुरुवर देवी रंग ।।५।।

भावार्थ—

जिनके युगल चरणारविन्दों से नूपुर की मधुर ध्वनि हो रही है, हंसी के समान जिनकी मनोहर चाल है, खञ्जन पक्षी के समान जिनके चञ्चल एवं मनोहर नेत्र हैं, पुष्ट एवं विशाल जिनके स्कन्ध हैं, चमकीले सोने के कंगन जिनके करों में दमक रहे हैं, प्रियाप्रियतम श्रीराधामाधव के ऊपर जो चँवर डुला रही हैं उन श्रीरङ्गदेवीजी के रूप (में श्रीनिम्बार्क भगवान्) का हम सदा भजन करते हैं ।।५।।

श्लोक—

नव्यां नूतनचीरधारणपरां नीलप्रभाद्योतिताम् ।
नीलेन्दीवरदीर्घसुन्दरदृषां नीलं निरीक्षद्घनम् ।।
वृन्दारण्यनिकुंजवाससुदितं राजीवनेत्रंहरिम् ।
ध्यायन्तीं धरणिस्थिरेण मनसा श्रीनव्यवासां भजे।।६

आभास दोहा—

नूतन वस्त्र सुधारिणी, नीलमणि द्युति अंग।
नील कमल दृग जहँ लखत, दर्शत नील अभंग॥
मोहन महल निकुञ्ज में, स्थिर ध्यान ललाम।
नव्यवास शुभ नामनी, भजहु सुदेवी वाम॥६॥

भावार्थ—

जो नये वस्त्रों को धारण किये हैं तथा नई जिनकी अवस्था है, श्याममयी आभा से जो देदीप्यमान हैं, नील-कमल के समान जिनके सुन्दर एवं विशाल नेत्र हैं तथा जो मोहन-महल में स्थित चित्त से कमल-नयन श्रीकृष्ण का सदा ध्यान करती हैं, उन नव्यवासा सखी (के रूप में श्रीनिवासाचार्य) की हम वन्दना करते हैं॥६॥

श्लोक—

वचनेऽमृतसागरायतीं गमने,
मत्तसुरद्विपायतीम्।
हसनेऽमलमौक्तिकायतीं सततं,
श्रीसखिविश्वभां भजे॥७॥

आभास दोहा—

कलवच अमृत सिन्धु जस, ऐरावत जस चाल।
भजहु हँसन मुख मुक्त जस, श्रीविश्वाभा बाल॥७॥

भावार्थ—

अमृत सिन्धु रस के सदृश जिनकी मधुर बोली है, मद-

मत्त गजराज के समान जिनकी चाल है, निर्मल मुक्ताओं के समान जिनकी मनोहर हँसन है, उन विश्वाभा सखी (के रूप में श्रीविश्वाचार्य) का मैं स्मरण करता हूँ ॥७॥

श्लोक—

उत्तमाङ्गपरिरक्षणस्थिरा-
मुत्तरोत्तररसप्रदायिनीम् ।
स्वामिनीप्रणयपूरनिर्भरा-
मुत्तमां च शिरसाऽभिवादये ॥८॥

आभास दोहा—

युगल अंग रक्षण परा, उत्तम रसद रसाल ।
प्रिया प्रेम पूरित हृदय, नमो उत्तमा बाल ॥८॥

भावार्थ—

जो प्रियाजू के उत्तम अङ्गों की रक्षा में सदा सावधान रहती हैं, उत्तरोत्तर नवल रस प्रदान करने वाली हैं तथा जो प्रियाजी की दिव्य प्रेम-राशि में मस्त रहा करती हैं उन उत्तमा-सखी (के रूप में श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी) को हम सिर से नमस्कार करते हैं ॥८॥

श्लोक—

निजदासविलासदायिनीं,
निजनाथैकगुणौघगायिनीम् ।
वयसा नयनेन्दुहायिनीं सुविलासां,
शिरसा नतोऽस्म्यहम् ॥९॥

आभास दोहा—

रास विलास प्रदायनी, निज मुख प्रिय गुण गान।
द्वादशाब्द बय बिलासा, नमो शिरसि सुख दान ॥६॥

भावार्थ—

जो अपनी सखी-सहचरी को सदा प्रेम-विलास प्रदान करने वाली हैं, जिन्हें अपने प्राणधन-जीवन प्रिया-प्रियतम के गुण-समूहों के गान में ही आनन्दानुभव होता है तथा जो अपनी मनोरम वय के कारण नवोदित चन्द्र-छटा को भी पीछे छोड़ देने वाली हैं, हम उन सुविलासा सखी (के रूप में श्रीविलासाचार्यजी) को मस्तक झुकाकर नमस्कार करते हैं ॥६॥

श्लोक—

रससागरपारधोरणीं रसरूपामृतचन्द्रतोरणीम्।
सरसस्मितहास्यवादिनीम्,
सरसां रासकरीं भजामहे ॥१०॥

आभास दोहा—

रस सागर तरि तारिणी, रस अमृत शशि सार।
सरस स्मित सुख भाषनी, भजहुँ सु सरसा नारि ॥१०॥

भावार्थ—

जिन्हें श्रीवृन्दावन-रस-सागर की पारगामिनी कहा जाता है तथा जो रस-स्वरूप वृन्दावनचन्द्र (श्रीप्रियाप्रियतम) की अमृत-माधुरी का सदा आस्वादन करती रहती हैं, जिनके

मधुरालाप में सरस मुस्कान एवं हास्य की अनोखी छटा छायी रहती है, रास-विलास में जिनकी परम रति है, हम उन सरसा सखी (के रूप में श्रीस्वरूपाचार्य जी) का सेवन करते हैं ॥१०॥

श्लोक—

मधुरां मधुरप्रभाषिणीं,
हरिराधारतिरंगसाक्षिणीम् ।
शशिकोटि विकाशसुस्मितां,
प्रणमामि प्रणतात्मनि स्थिताम् ॥११॥

आभास दोहा—

युगल सुरत रति साक्षणी, मधुर प्रभाषिण बाल ।
चन्द्रकोटि मुख सस्मिता, मधुरा नमो रसाल ॥११॥

भावार्थ—

मधुर बोलना जिनका स्वभाव है, श्रीप्रियाप्रियतम की अन्तरङ्ग-लीला के दर्शन का जिन्हें सौभाग्य प्राप्त है, करोड़ों चन्द्रमाओं के विकास की भाँति जिनकी मधुर मुसकान है तथा प्रणतपाल प्रियतम के मधुर चिन्तन में जो अवस्थित हैं, उन मधुरा सखी (के रूप में श्रीमाधवाचार्य जी) का हम चिन्तन करते हैं ॥११॥

श्लोक—

भवतापहरां भयापहां,
भवपाथोधितरीं दयापराम् ।

दलिताम्बुजनेत्रशालिनी-

मतिभद्रांमनसास्मरेमुदा ॥१२॥

आभास दोहा—

भव सागर तारण तरी, भव त्रय ताप सुकाल ।

दया परायण कमल दृग, चिन्तहु भद्रा बाल ॥१२॥

भावार्थ—

जो जन्म-मरणादि सांसारिक ताप एवं सम्पूर्ण भयों को दूर करने वाली हैं, संसार-सागर से पार पाने में जो नौका-रूप हैं, विकसित कमल के समान जिनके नेत्र हैं, उन मंगलमय करुणामयी भद्रा सखी (के रूप में श्रीबलभद्राचार्यजी) का हम प्रसन्नता से स्मरण करते हैं ॥१२॥

श्लोक—

निजवर्गमधुव्रतावलीढं,

कमनीयाङ्गुलिपल्लवप्ररूढम् ।

स्वजनामलमानसप्रसूतं,

प्रियपद्मापदपंकजं स्मरामि ॥१३॥

आभास दोहा—

निज सुवर्ग मधुकर वृत, अंगुलि पल्लव मंजु ।

स्वजनअमल मन जन्य जो, जय पद्मा पद कंजु ॥१३॥

भावार्थ—

कमल रूप से जिनकी उत्पत्ति निज प्रेमियों के निर्मल मानस-सरोवर में हुई है, जिनकी अंगुलियाँ कमल के नव-पल्लवों

के समान सुन्दर हैं, अपने परिकर में रूप-रसिक भ्रमरों के द्वारा जिनका आस्वादन होता है, उन पद्मा सखी (के रूप में श्री पद्माचार्यजी) के युगल चरण-कमलों का हम सदा स्मरण करते हैं ॥१३॥

श्लोक—

श्यामां श्यामवयोन्वितां परिलसन्
नीलाम्बरं विभ्रतीम् ।
आकर्णायतनेत्रपंकजभरै रालस्यमातन्वतीम् ॥
लीलालोलमनंगरंगमधुर व्यापारभारावहाम् ।
राधाकृष्णमुखारविन्दमतुलं,
संचिन्तयन्तीं भजे ॥१४॥

आभास दोहा—

श्याम सुवय नीलाम्बरी, आकर्णायत नैन ।
युगमुख ध्यान परायणी, जय श्यामा सुख दैन ॥१४॥

भावार्थ—

श्रीश्यामसुन्दर के अनुरूप जिनकी मनोहर अवस्था है, नील-वर्ण का वस्त्र जिन्होंने धारण कर रक्खा है तथा जो दीर्घ नेत्र-कमलों की भार से अलसायी हुई-सी प्रतीत होती हैं, जो लीला-विलास में चञ्चल, श्रीश्यामसुन्दर की मधुर-लीलाओं का आनन्दानुभव करने वाली हैं उन श्यामा सखी (के रूप में श्रीश्यामाचार्यजी) का हम भजन करते हैं ॥१४॥

श्लोक—

वीणा-वादनतार-तान-मधुरत्वाविष्करित्रीं मुदा।
श्रीवृन्दावनचन्द्रकृष्णविलसत्
पादाम्बुजध्यायिनीम् ॥
राधाहारविलासभारकुशलां कुन्देन्दुभासामुखीम्।
इच्छाशक्तिरतां हरेः प्रियतरां,
श्रीशारदां सम्भजे ॥१५॥

आभास दोहा—

वीणा वादत युगल ढिग, इच्छा शक्ति कृपालि।
युग विलास कुशला सदा, भजहु शारदा आलि ॥१५॥

भावार्थ—

जो वीणा की मधुर तरङ्गों का आविष्कार करने वाली हैं, जिन्हें वृन्दावनचन्द्र श्रीश्यामसुन्दर के मनोहर चरणारविन्दों में ही सर्वाधिक आनन्दानुभव होता है, जो प्रियाजी के रस-विलास के सम्पादन में कुशल हैं, कुन्द-इन्दु सम जिनका मुख है, श्रीयुगल की इच्छा के जो अनुकूल हैं हम उन शारदा सखी (के रूप में श्रीगोपालाचार्य जी) का भली-भाँति भजन करते हैं ॥१५॥

श्लोक—

करेणोत्तरीयं हसन्तीं दधानां,
द्वितीयेन फुल्लारविंदं वहन्तीम्।

लसत्पीनवक्षोजसत्पुष्पहारां सदा,
संस्मरेऽहं कृपालामुदाराम् ।।१६

आभास दोहा—

इक कर धृत उत्तरीय जिहिं, दूजे कमल रसाल ।
पुष्प हार जिहिं उर सुभग, सुमिरहुँ सखी कृपाल ।।१६।।

भावार्थ—

जिन्होंने एक हाथ में श्रीश्यामसुन्दर के उत्तरीय (पीताम्बर) को पकड़ रक्खा है और दूसरे हाथ में जो सुविकसित सुन्दर कमल धारण किये हैं, जिनके उन्नत एवं पुष्ट वक्षःस्थल पर पुष्पहार शोभायमान है, उन हँसती हुई परमोदार कृपाला सखी (के रूप में श्रीकृपालाचार्य जी) का हम स्मरण करते हैं ।।१६।।

श्लोक—

रणच्चारुपादांबुजन्यासनिर्जिद्-
गजेन्द्रामुरोमौक्तिकस्फारहारां ।
सुधामाधुरीहारिमन्दस्मितास्यां,
भजे देवदेवीं सुरप्रार्थ्यदास्याम् ।।१७।।

आभास दोहा—

सिंजन्नूपुर पाद जित, गज गति मौक्तिक हास्य ।
भजहुँ देव देवी अलि, सुर प्रार्थित जिहिं दास्य ।।१७।।

भावार्थ—

जिनके चरण-कमलों से नूपुर की मधुर ध्वनि निकल रही है, जो अपनी मदमाती चाल से गजराज को भी मात दे रही हैं, जिनके वक्ष:स्थल पर मोतियों का हार चमक रहा है, जो मन्द-मन्द मुसकान बिखेर रही हैं, देवता भी जिनकी दासता के लिये लालायित हैं, उन देव-देवी सखी (के रूप में श्रीदेवाचार्यजी) का हम भजन करते हैं ॥१७॥

श्लोक—

स्फुरत्सुन्दरोदारमंदारहार-
स्तनद्वन्दभारावसीदत्सुमध्याम् ।
लसद्धस्तविन्यस्तताम्बूलपात्रां,
भजे सुन्दरीं सुन्दराकारछत्राम् ॥१८॥

आभास दोहा—

कल्प पुष्प धृत हार गल, लचकति कटि कुच-भार ।
पीक दान कर सुन्दरी, भजहुँ सु छत्राकार ॥१८॥

भावार्थ—

जिनके वक्ष:स्थल पर सुन्दर मन्दार का हार सुशोभित हो रहा है, उरोजों के भार से जिनकी क्षीण-कटि चलने में लचकती है, जिनके कर-कमलों में ताम्बूल-पात्र सुशोभित है तथा जो सुन्दर छत्र संयुक्त हैं उन सुन्दरी-सखी (के रूप में श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी) का हम चिन्तन करते हैं ॥१८॥

श्लोक—

पादारविन्दं शिथिलं दधाना,
पद्मालया पद्मपरागरंजिता ।
पद्मानना पद्मकुचाभिरामा नमामि,
तस्याः पदपंकजं सदा ॥१६॥

आभास दोहा—

पद्मानन सुठि पद्म कुच, पद्म पराग सुरंज ।
पद्मालय श्रीसहचरी, नमो तासु पद कंज ॥१६॥

भावार्थ—

कमल के समान जिनका मुख है और कमल के समान ही जिनके स्तन हैं, कमल पराग से जो रंजित है, मन्द गति से चलने वाली उन पद्मालया सखी (के रूप में श्रीपद्मनाभ-भट्टाचार्य जी) को हम सदा नमस्कार करते हैं ॥१६॥

श्लोक—

अनाप्नुवंस्तनमुखचन्द्रमस्तुलां,
विधुर्गतः खं त्रपयाब्जराजः ।
जलेऽपतन्नात्तमुखाम्बुजश्री
स्तामिन्दिरांचेतसिभावयामि ॥२०॥

आभास दोहा—

मुखचन्द्र छवि चन्द्र लख, लज्जित गयऊ अकास।
लख मुखाब्ज जल अब्जपति, जय इन्दिरा रस रास ॥२०

भावार्थ—

जिनके मुख की अद्वितीय शोभा की समता न कर सकने के कारण चन्द्रमा लज्जित हो आकाश की ओर चला गया, कमल भी पानी में प्रवेश कर गया उन इन्दिरा सखी (के रूप में श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी) का हम हृदय से जय-गान करते हैं ॥२०॥

श्लोक—

कामाङ्गनाकोटिमनोज्ञरूपां,
मुखप्रभानिर्जितरात्रिभूपाम् ।
स्वीयप्रियास्नेहनिधानकूपां,
रामांस्मरेकृष्णमनोनुरूपाम् ॥२१॥

आभास दोहा—

मुख शोभा जित चन्द्रमा, कोटि काम तिय भूप।
प्रिया स्नेह पात्री सदा, सुमिरहु रामा रूप ॥२१॥

भावार्थ—

जिन्होंने अपने मुख की ज्योति से चन्द्र-ज्योति को भी जीत लिया है, कोटि-कोटि काम प्रिया (रति) के समान जिनका

मनोहर रूप है, जिन पर श्रीप्रियाजी का अपार स्नेह है तथा जिनका श्रीश्यामसुन्दर के मन के अनुरूप चलने का ही संकल्प है, हम उन रामासखी (के रूप में श्रीरामचन्द्र भट्टाचार्यजी) का स्मरण करते हैं ।।२१।।

श्लोक—

प्रावृट्प्रफुल्लनवचारुकदम्बपुष्प-
हारामुखद्युतिविनिर्जित चन्द्रतारा ।
कान्ताङ्गसंगजनितांकनिदर्शनाय-
वामाकरोदभिलसन्मुकुरं स्वसख्याः ।।२२।।

आभास दोहा—

कुसुमित वर्षा ऋतु कदम, हार द्युति जित चन्द ।
दर्पण कर युग दरस हित, जय रामा जग वन्द ।।२२।।

भावार्थ—

वर्षा ऋतु में कुसुमित मनोहर कदम्ब पुष्पों का हार जिनके वक्षःस्थल पर शोभायमान है, जो अपनी मुख-ज्योति से चन्द्र-छटा को भी जीत चुकी हैं तथा जो श्रीप्रियाजी को उनके सुरत-चिन्हों का दर्शन कराने के लिए अपने हाथ में सदा दर्पण लिये रहती हैं, उन रामा सखी (के रूप में श्रीवामनभट्टाचार्यजी) का हम पुनः पुनः स्मरण करते हैं ।।२२।।

श्लोक—

कृष्णामहमभिवन्दे युगलपदांभोजभावनामुदितां ।
कृष्णरसायनतृप्तां साक्षादिवसिन्धुजां ललिताम् ।२३

आभास दोहा—

युग पद ध्यान परायणी, कृष्ण रसायन तृप्त ।
वन्दे कृष्णा सहचरी, द्वितीय श्री जनु दीप्त ।।२३।।

भावार्थ—

जो श्रीयुगल चरण-कमलों के ध्यान में सदा आनन्दित तथा श्रीकृष्णरूपी रसायन में ही सदा पगी रहती हैं, साक्षात् लक्ष्मी के समान प्रदीप्त उन कृष्णा सखी (के रूप में श्रीकृष्ण-भट्टाचार्य जी) को हम नमस्कार करते हैं ।।२३।।

श्लोक—

यमुनातीरनिकुञ्जे मधुकरपुंजेविनिद्रतरुवृन्दे ।
पद्मामहमभिवन्दे रटतीं कृष्णेति कृष्णेति ।।२४।।

आभास दोहा—

जमुना तट कुसुमित तरु, मधुकर गुंजित कुंज ।
कृष्ण कृष्ण निज मुख रटत, बन्दहुँ कृष्णा मंजु ।।२४।।

भावार्थ—

श्रीयमुना की निभृत निकुञ्ज में, जहाँ भौंरे गुञ्जार करते हैं, ऐसे एकान्त स्थल में अहर्निश श्रीकृष्ण-नाम रटने वाली पद्मा सखी (के रूप में श्रीपद्माकर भट्टाचार्यजी) की हम वन्दना करते हैं ।।२४।।

श्लोक—

अयुतायुतेंदुरूपां सकलसखिमालिकानूपाम् ।
वन्देऽहं श्रुतिरूपां कोटिस्मरकांति माख्याम् २५

आभास दोहा—

अयुतायुत श्रुति रूपिणी, माला सखी अनूप ।
बन्दहुँ काम सु कोटि छवि, श्रुतिरूपा सुख रूप ॥२५॥

भावार्थ—

कोटि-कोटि चन्द्रमा तथा करोड़ों कामदेवों के समान रूप वाली, निज सखी परिकर में अनुपमेय, श्रुति स्वरूपा सखी (के रूप में श्रीश्रवणभट्टाचार्य जी) की हम आराधना करते हैं ॥२५॥

श्लोक—

मदनमोहन मोहनसुन्दर-स्मित-
विलासकलासुकुतूहलाम् ।
प्रमुदितेनहृदात्वभिवादये,
मनसिभागवतींभगवत्प्रियाम् ॥२६

आभास दोहा—

मदनमोहन मोहन हँसन, युगविलास सुखदान ।
प्रमुदित उर प्रणमहुँ मनसि, भागवती हरिप्रान ॥२६॥

भावार्थ—

कोटि-कोटि काम के मन का भी मन्थन करने वाले श्रीश्यामाश्याम के दिव्यातिदिव्य लीला-विलास का निरन्तर आस्वादन करने वाली श्रीभागवती सखी (के रूप में श्रीभूरि-

भट्टाचाय जी) को हम बड़ी प्रसन्नता के साथ मन-ही-मन नमस्कार करते हैं ।।२६।।

श्लोक—

वसंतकालोदयपुष्पितानि,
द्विसंध्यरागायितपंकजानि ।
प्रियप्रियाचारुपदाम्बुजेषु प्रीत्यर्पयंतीं
प्रणमामि माधवीम् ।।२७।।

आभास दोहा—

ऋतु वसन्त मधि अध खिले, कमल सु निजकर धारि ।
युगल पदाम्बुज अर्चती, बन्दहुँ माधव नारि ।।२७।।

भावार्थ—

वसन्त ऋतु की दोनों सन्ध्याओं में फूलने वाले लाल-लाल कमल के फूल को जो बड़ी श्रद्धा के साथ प्रियाप्रियतम के चरण-कमलों में समर्पित करती हैं, उन माधवी सखी (के रूप में श्रीमाधवभट्टाचार्य जी) को हम प्रणाम करते हैं ।।२७।।

श्लोक—

यच्छोभाभरजलधौ विधिमुख-
विवुधालयं ययुः सुचिरम् ।
असितायाश्चतदास्यं शारद-
विधुमण्डलाकृतिं ध्याये ।।२८।।

आभास दोहा—

रूप सिन्धु जिहिं कर लखत, बस्त्रादिक सुर वृन्द ।
गयउ निजालय असित सो, ध्यावहुँ मुख छवि चन्द ।।२८

भावार्थ—

जिनके मुख के शोभा-सिन्धु में देवताओं की शोभा का भी चिरकाल के लिए विलय हो गया है, शरद् ऋतु के चन्द्रमा के समान मनोहर आकृति वाली उन असिता सखी (के रूप में श्रीश्यामभट्टाचार्य) के मुख-कमल का हम ध्यान करते हैं ।।२८।।

श्लोक—

भृङ्गारभारं विविधं विधाय,
प्रातः स्थिताया निजदेवतायाः ।
मुखारविंदैकनिरीक्षणाय,
गुणाकरीदर्पणमाचकार ।।२९।।

आभास दोहा —

धार भार भृङ्गार सब, महल स्थित लस प्रात ।
बन्दहुँ देवी गुणाकरी, दर्पण युगल दिखात ।।२९।।

भावार्थ—

प्रातःकाल में अपने परमाराध्य श्रीप्रियाप्रियतम का विविध प्रकार से श्रृङ्गार कर जो उन्हें दर्पण दिखाती हैं, उन गुणाकरी सखी (के रूप में श्रीगोपालभट्टाचार्य जी) को हम नमस्कार करते हैं ।।२९।।

श्लोक—

द्विजराजकलाविराजमानां,
　　मुखशोभाजितफुल्लकंजलक्ष्मीं ।
मृगराजकटिं मृगायताक्षिम-
　　हमीडे सततंसुवल्लभाख्याम् ॥३०॥

आभास दोहा—

मृगनैनी मृगराज कटि, मुख शोभा जित कंज ।
करत सु स्तुति वल्लभहिं, युग सेवा सुख मंजु ॥३०॥

भावार्थ—

चन्द्रमा की कलाओं के समान जिनकी शोभा बढ़ती ही रहती है, ऐसे अपने मुख-चन्द्र की शोभा से, विकसित कमल की शोभा को भी जिन्होंने पराजित कर दिया है, सिंह के समान जिनकी क्षीण कटि है और मृग के समान जिनके सुन्दर नेत्र हैं, उन सुवल्लभा सखी (के रूप में श्रीबलभद्रभट्टाचार्य जी) की हम सदा स्तुति करते हैं ॥३०॥

श्लोक—

शारदीयविधुबिम्बमुखाभां,
　　कुंदपंक्तिरदनश्रियमेकाम् ॥
तुङ्गपीनकुचभारविनम्रामा-
　　नतोऽस्मिशशिगौररताङ्गीम ॥३१॥

आभास दोहा—

कुन्द दशन शरदेन्दु मुख, तुंग पीन कुच भार।
नमत नमो गौराङ्ग सखी, सब सुषमा को सार ॥३१॥

भावार्थ—

शरद-कालीन चन्द्रमा के समान जिनके मुख की आभा है, कुन्द-पंक्ति के समान जिनकी दन्तावली की शोभा है, जो उन्नत एवं पुष्ट स्तनों के भार से झुकी-सी प्रतीत होती हैं, चन्द्रमा के समान जिनका अङ्ग-अङ्ग गोरा है, उन गौराङ्गी सखी (के रूप में श्रीगोपीनाथभट्टाचार्य जी) को हम भली-भाँति नमस्कार करते हैं ॥३१॥

श्लोक—

मयूरपिच्छद्युतिहारिचामर,
प्रभा-तिरस्कारिनिजप्रियायाः।
संगुम्फयंतींविलसत्कराभ्यां-
धम्मिल्लभारंप्रणमामिकेशीम् ॥३२॥

आभास दोहा—

मोरपिच्छ चामर द्युति, हारिण प्रिया सुकेशि।
गुम्फित करणी तिनहि नित, बन्दहुँ केशि सुवेशि ॥३२॥

भावार्थ—

मयूर-पिच्छ की शोभा तथा चमर-प्रभा को भी मात देने वाली, अपनी प्राण-वल्लभा के सुन्दर केशों को अपने

सुकुमार कर-कमलों से सँवारने वाली केशी सखी (के रूप में श्रीकेशवभट्टाचार्यजी) को हम प्रणाम करते हैं ॥३२॥

श्लोक—

जगत्पवित्रं कुरुते हि यस्या,
दृगंतपातो वितनोति सौख्यम् ।
श्रीस्वामिनीस्नेहनिधानभूतां,
श्रीकृष्णमित्रांप्रभजे पवित्राम् ॥३३॥

आभास दोहा—

जासु पात दृग जग सुखद, करत जु सदा पवित्र ।
प्रिया सनेह निधान मय, भजहुँ सुदेवि चरित्र ॥३३॥

भावार्थ—

जिनका दृष्टिपात सारे विश्व में विकीर्ण होकर पवित्रता तथा सुख का विस्तार करता है, जिन पर श्रीप्रियाजी के स्नेह-वारि का सदा वर्षण होता रहता है तथा जो श्रीश्यामसुन्दर को भी प्रिय हैं, उन पवित्रा सखी (के रूप में श्रीगाङ्गलभट्टाचार्यजी) का हम स्तवन करते हैं ॥३३॥

श्लोक—

काश्मीरपंकांकितहृत्सरोजां,
संभावितश्रीपतिपत्सरोजाम् ।
विनिद्र रक्तोत्पललोचनाभां,
सदा स्मरेचेतसि कुंकुमाभाम् ॥३४॥

आभास दोहा—

कुंकुम पंकाङ्कित हृदय, हरि पद ध्यान अभंग ।
रक्त कमल दृग सोहनी, सुमिरहुँ कुंकुम अंग ।।३४।।

भावार्थ—

जिनका हृदय-कमल कुंकुम के पङ्क से अङ्कित तथा श्रीश्यामसुन्दर के सुर-मुनि दुर्लभ चरणारविन्दों से युक्त हैं, कुंकुम के समान बिकसित लाल-कमल के सदृश जिनका वर्ण है, उन कुंकुमा सखी (के रूप में जगद्‌विजयी श्रीकेशवकाश्मीरी भट्टाचार्यजी) का बड़ी प्रसन्नता के साथ हम स्मरण करते हैं ।।३४।।

श्लोक—

समस्तनानाविधदेवतागणै-
विरञ्चिगंगाधरशारदादिभिः ।
मूर्द्धाभिर्वंद्यारुणपादपद्मां श्रीश्रीहितां,
संततमानतोऽस्मि ।।३५।।

आभास दोहा—

विधि शिव शारद देवगण, वन्दित चरण रसाल ।
गुरु स्वरूप वन्दहुँ सतत, सो श्रीहितू कृपाल ।।३५।।

भावार्थ—

ब्रह्मा, शिव, शारदा तथा अन्य देव-देवियाँ जिनके अरुण-चरण-कमलों की वन्दना सदा अपने मस्तक झुकाकर

किया करती हैं, उन विश्व-हितकारिणी हितू सखी (के रूप में गुरुवर्य श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी) की मैं बारम्बार वन्दना करता हूँ ॥३५॥

श्लोक—

विलोहितप्रांतविशाललोचनां,
मुखप्रभापूर्णनिशाकरोपमां ।
सच्चामरालंकृतहस्तपंकजांश्रीरंगदेवीं,
मनसा स्मरामि ताम् ॥३६॥

आभास दोहा—

पूर्ण चन्द्र जस मुख प्रभा, रक्तपंक्ति दृग छवि ।
चमरालंकृत कर कमल, सुमिरहुँ पुनि रंगदेवि ॥३६॥

भावार्थ—

पूर्ण चन्द्र की भाँति आनन्ददायक जिनके मुख की प्रभा है, जिनके विशाल नेत्रों के प्रान्त भाग लालिमा लिये होने के कारण बड़े ही मनोहर हैं, जिनके कर-कमलों में सुहावना चमर शोभित है, उन श्रीरंगदेवी सखी (के रूप में श्रीश्री निम्बार्काचार्यजी) का हम पुनः सदा मन से स्मरण करते हैं ॥३६॥

॥ इति श्रीसखीनामरत्नावली स्तोत्र सरस-
अनुवादसहिता समाप्तम् ॥

अथ श्रीपद-विलास-निकुञ्ज-रहस्य

दोहा—

जै जै श्रीहितु सहचरी, भरी प्रेम रस रंग।
प्यारी प्रीतम के सदा, रहत जु अनुदिन संग ॥१॥
अष्टकाल बरनन करूँ, तिनकी कृपा मनाय।
महावाणी सेवा जु सुख, अनुक्रम तै दरशाय ॥२॥
सखी नाम रत्नावली, स्तोत्र पाठ तहँ कीज।
पुनि गुरु सखिन कृपा जु लहि, जुगल सेव चित दीज ॥३
प्रात काल ही ऊठि कें, धारि सखी कौ भाव।
जाय मिलै निज रूप सों, याकौ यहै उपाव ॥४॥
मोहन-मन्दिर चौक में, मिलि सब सखी समाज।
बीन बजावहिं गावहीं, मधुर मधुर, सुर साज ॥५॥

भावार्थ—

महावाणीकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्य अपने गुरुवर्य युगल-शतककार श्रीश्रीभट्टदेवाचार्य जी का श्रीहितूसहचरी के रूप में यशोगान करते हुए कहते हैं—

श्रीहितूसहचरीजी की सदा ही जय हो, जो प्रेम-रस-रंग से भरी हुई हैं तथा जो दिन-रात रसिक दम्पती श्रीप्रिया-प्रियतम के साथ रहती हैं। उन्हीं की दया मनाकर मैं श्रीमहावाणी के सेवा-सुख का अष्टकालीन सेवा-क्रम से वर्णन करता हूँ। साधक को चाहिये कि सर्वप्रथम "सखीनाम-रत्ना-

वली-स्तोत्र" का पाठ करे, पुनः सखी-रूप निज गुरुदेव की कृपा-प्राप्त कर श्रीयुगलकिशोर की सेवा में अपने चित्त को लगा दे। निशान्तकाल※ में श्रीमोहन-महल के चौक में जहाँ सभी सखियों का समाज जुड़ा हुआ है तथा जो शयन करते हुए श्रीप्रियाप्रियतम को जगाने के लिये सुर-ताल के सभी साज सजाकर वीणा-वादन करती हुई मधुर-मधुर गीत गा रही हैं। ऐसे सखियों के समाज में साधक भी प्रातःकाल गुरु प्रदत्त रूप से सखी-भाव धारण कर जा मिले। श्रीप्रियाप्रियतम की अष्टकालीन-सेवा में पहुँचने का मात्र यही साधन सर्वोपरि है।

दोहा—

जै मृगनयनी राधिके, रंग रंगीली बाल।
गोरी कंचन बेलि ज्यों, लपटी श्याम तमाल ॥१॥

पद— ताल चरचरी—भैरव राग

जयति जयति भामिनी रँगीली राधिके।
वल्लभा विहारीजू की गुन अगाधिके॥
लपटि रही लाल जू के ललित अंग सोहनी।
तरु-तमाल कनक-बेलि छबि विमोहिनी॥

※ निशान्तकाल-विहार का समय रात्रि ३.३६ से ६ बजे तक माना गया है।

कामिनी कुरंगनैंनी कोकिल-कल-बैनी ।
कला कोटि कोबिदे सलौनी सुख दैनी ॥
सहजही सुहागभरी गरबीली गोरी ।
जीवनि धन हितू कि श्रीहरिप्रिया किशोरी ॥१॥

भावार्थ—

सुरत-केलि-जन्य रंगों से अनुरञ्जित, कोक-कलादि गुणों में अगाधा, परमकमनीय उन श्रीराधिकाजी की सदा ही जय हो, जो श्रीबिहारीजी की प्राण-वल्लभा हैं । जिस प्रकार स्वर्ण-लता, श्याम-तमाल वृक्ष से लिपटी हुई अत्यन्त शोभायमान लगती है, उसी प्रकार श्रीप्रियाजी श्रीलालजी के अङ्गों से आवेष्टित हो मूर्तिमान छवि का भी विमोहन कर रही हैं। किशोरावस्था वाली, मृगनैनी, कोयल के समान मधुर-स्वर बोलने वाली, करोड़ों कोक-कलाओं में चतुर, अपने सलोने रूप से प्रियतम को सहज ही में आनन्द प्रदान करने वाली, गौराङ्गी श्रीप्रियाजी ने श्रीलालजी के सदृश प्रियतम को प्राप्त कर लिया है । यही कारण है कि ये सौभाग्य से भरपूर तथा गर्वीली हैं । श्रीहरि की प्राण-वल्लभा श्रीकिशोरीजी श्रीहितू सखीजी की तो जीवनाधार ही हैं ॥१॥

दोहा—

रसिक बिहारीलाल की, जीवनि प्राण अधारि ।
रसिक रसीली रस भरी, अलबेली सुकुमारि ॥२॥

पद— ताल चंपक–राग भैरव

रसिक रसीली राधा रस ही सों भरी है।
रसिक बिहारीजू की जीवनि की जरी है ॥
अलबेलीजू में ऐसी अधिकता है कोई।
पीवत ही पिवत लाल तृपति न होई ॥
सनी है सुहाग भाग प्रेम रगमगी है।
प्रीतम पियारे संग सब निशि जगी है ॥
कौन-कौन अंग की अनूपता जु कहिये।
श्रीहरिप्रियादासी होइ सदा संग रहिये ॥२॥

भावार्थ—

श्रीप्रियाजी में श्रीलालजी की तीव्र आसक्ति का एकमात्र कारण रस ही है। श्रीप्रियाप्रियतम को जगाते समय सखियाँ उसीका निर्देश करते हुए गा रही हैं—

परम रसीली श्रीराधा प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर के रस को भोक्ता होने के नाते रसिक तो हैं ही, लालजी के उपभोग्य रस से आपूरित भी हैं। प्रियतम के प्राणों का पोषण करने के कारण ही आप श्रीरसिकबिहारीजी के लिए संजीवनी बूटी के सदृश हैं। निश्चय ही अलवेली श्रीकिशोरीजी में मधुर-रस की ऐसी अनिर्वचनीयता है, जिसका अहर्निश पान करने पर भी लालजी कभी तृप्त नहीं होते। लालबिहारीजी को प्राप्तकर

ही ये सौभाग्य-सीमन्तनी हैं, उन्हींके प्रेम-रंग में निमग्न रहती हैं। रात्रि-पर्यन्त प्रियतम के साथ सुरत-केलि के कारण उनके अंग-प्रत्यंगों से रस का निर्झरण हो रहा है। उनके किसी भी अंग की अनूपता का वर्णन करना सम्भव नहीं है। श्रीहरिप्रियाजी कहती हैं कि मेरी एकमात्र यही अभिलाषा है कि मैं उनकी दासी होकर सदा उनके साथ रहूँ ॥२॥

दोहा—

सब निशि बीती खेल में, तउ उर अधिक उमंग।
ऐसे नवलकिशोर बर, हियरें बसौ अभंग ॥३॥

पद— ताल चर्चरी–राग भैरव

खेलें नवलाल खेल नवल बाल संग।
बीती सब निशा तउ अधिक उर उमंग ॥
पल पल में बढ़ें चौंप सहज सुरति रंग।
उपजत अति चाव हाव-भाव भृकुटि भंग ॥
नव किशोर साँवरौ किशोरी गोरी अंग।
श्रीहरिप्रिया हियें बसौ अविचल अभंग ॥३॥

भावार्थ—

श्रीनवलकिशोर-किशोरी ने सुरत-क्रीड़ा करते सारी रात्रि व्यतीत कर दी है, फिर भी सहज सुरति-रंग में अनुरञ्जित होने के लिए उनकी उमंग प्रतिक्षण बढ़ती ही चली जाती है।

जिसके परिणाम स्वरूप रस की चाह में हाव-भावों द्वारा मधुर वार्तालाप करते हुए परस्पर कटाक्षपात करते हैं। श्रीहरिप्रिया सखी प्रार्थना करते हुए कहती हैं कि नवलकिशोर-किशोरी की यह श्यामल-गौर मूर्ति सदा मेरे हृदय में निश्चल रूप से बसी रहे ॥३॥

दोहा—

बोलत सी आ नाह यों, मधुर मधुर मृदुबाल ।
सुख आसन राजैं ललित, रलित रंग सँग लाल ॥४॥

पद—   राग भैरव

लाल संग रंग रलित ललित बाल ललकें।
सुरति रंग के तरंग अंग अंग झलकें ॥
शशिमुखि शशिकांति आह नाह मधुर बलकें।
गोरे गंड दशन खंड कामिनि कल कलकें ॥
बैठे हैं सुखासन पिय छाजैं छबि छलकें।
उर विशाल अति रसाल मोतिमाल रलकें ॥
अरुन बरन चरन वर विवसन ढर ढलकें।
श्रीहरिप्रिया देखत जहाँ लागत नहीं पलकें ॥४॥

भावार्थ—

श्रीलालजी के साथ श्रीप्रियाजी ललित-रस-केलि में छकी-पगी विहार कर रही हैं। दोनों श्रीप्रियाप्रियतम रस-

सागर में इतने निमज्जित हैं कि उनके अंग-प्रत्यंगों से सुरत-रंग की तरंगे तरङ्गायित हो रही हैं। जो चन्द्रमुखी हैं तथा जिनका हृदय चन्द्रकान्त-मणि-सदृश सदा द्रवीभूत रहता है, ऐसी अलबेली श्रीप्रियाजी सुरत-विहार के समय शीतकारादि मधुर-मधुर अव्यक्त शब्दों द्वारा प्रियतम श्यामसुन्दर को अपने अधीन कर रही हैं। गोरे गण्डों पर दसनखण्ड के कारण कोमल-कोमल किलकारियाँ भर रही हैं। सुखासन पर विराजमान प्रियतम की छवि छलकी पड़ रही है। उनके विशाल वक्षःस्थल पर सुन्दर मोतियों की माला झोटा ले रही है। महावर के रंग से रञ्जित श्रीप्रियाजी के चरण-तलों की शोभा श्रीलालजी के अधरों पर (चरण चुम्बन के कारण) ढुलकी पड़ रही है। श्रीहरिप्रिया सखी श्रीप्रियाप्रियतम की ऐसी अनुपम छवि का अनिमेष दृष्टि से पान कर प्रमुदित हो रही हैं ॥४॥

* अनुरागिनि दिव्यगंधा मद्याभास *

दोहा—

प्रिया-बदन सुषमा सदन, रह्यो प्रेम परिपूरि।
जा मधि प्रीतम प्राण की, सरबस जीवनि मूरि ॥६॥

पद— निताला

प्रिया-मुख सुषमा कौ आगार।
जा मधि लाड लडे कौ सरबस अंग अनंग उद्गार ॥
जीवनि प्रान प्रान-जीवनि को अधर सुधा सुख-सार

पीवत परम तृषातुर पल-पल बाढ़त प्रेम अपार ॥
रंग रँगीले रदन बदन में सोहत सुखद सुढार ।
हँसत जबै कछु लसत ललित लुनिताई मनहर मार।
गोरे गंड अरुनता तिन बिच अद्भुत अमल उदार।
मनु संपुट मधि लै अनुरागहि भरि राख्यौ भरतार।
श्यामल विन्दु चिबुक श्रुति भूषन नासा बेसरि चार
बडरे नैन सु अंजन खंजन गंजन गरब पहार ॥
बरनी जात न बरुनी भौंहें सोहैं आड़ लिलार।
शीशफूल सीमन्त चन्द्रिका चिकुर चतुर चित हार॥
गुही श्याम मखतूल पीठ पर बेनी विरह विदार।
निज कर रची नवल नव नायक सुंदरवर सुकुमार॥
दुखदरनी हिय हरनी श्यामा सकल सुखन विस्तार।
निरखि हरखि श्रीहरिप्रिया,
सहचरी बलिबलि बारंबार ॥५॥

भावार्थ—

श्रीप्रियाजी का मुख साक्षात् सुषमा का आगार है। जिसमें श्रीलाड़लेकिशोर का सर्वस्व समाया है। अर्थात् श्री प्रियाजी के मुख-कमल को देखकर ही प्रियतम श्यामसुन्दर के हृदय में कामोद्दीपन होता है। उस मुख-कमल में प्रियतम

श्यामसुन्दर की प्राण-जीवनी अधर-सुधा-रसरूपी संजीवनी बूटी समाई हुई है। परम तृषावान होकर जिसका बारम्बार पान करने पर प्रियतम के हृदय में प्रतिक्षण प्रेम-रस की अभिवृद्धि हो रही है। पान की पीक से रञ्जित दन्तावली अत्यन्त शोभायमान तथा सुखदाई लगती है। थोड़ा सा मुसकाने पर जब इसका विकास होता है तो रस के ललित-लावण्य का दर्शन कर करोड़ों कामदेव मोह को प्राप्त होते हैं। निर्मल, अद्भुत तथा विशाल गोरे कपोलों में स्वाभाविक लालिमा को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, मानो भरतार श्री लालजी ने मणि-संपुट में अनुराग भरकर रख दिया हो ! श्री प्रियाजी की ठोड़ी पर श्यामल-विन्दु, कानों में कर्णफूल तथा नासिका में सुन्दर नथ सुशोभित हैं। उनके दीर्घ नेत्रों में आँजा गया अञ्जन खञ्जन पक्षी के गर्व-गरूर का भंजन करने वाला है। उनकी वक्र भौहों की सुन्दरता का तो वर्णन ही नहीं किया जा सकता। माथे पर आड़ का टीका भी अति सुहावना लगता है। शीशफूल, सीमन्त, चन्द्रिका तथा चिकने केशों ने तो चतुर चूड़ामणि श्रीलालजी का चित्त ही चुरा लिया है। श्रीप्रियाजी की पीठ पर विरह का विदारण करने वाली काली रेशम से गूँथी गई वेणी, जिसे नवलकिशोर सुन्दर-वर नायक श्रीश्याम-सुन्दर ने अपने सुकुमार हाथों से गूंथा है, अति सुहावन-मन-भावन लगती है। इस प्रकार श्रीश्यामाजी प्रियतम श्यामसुन्दर के हृदय का हरण करने वाली, अतृप्ति जन्य समस्त दुःखों को

विदीर्ण कर सर्व सुखों का विस्तार करने वाली हैं। रसिक दम्पती के इस विलास का दर्शन कर श्रीहरिप्रिया सहचरी परम हर्षित हो बलिहारी जाती हैं ॥५॥

दोहा—

श्रमकन वन तन बनि रहे, गहे लाड गंभीर।
विहरत सेज विहार विवि, सुरत समर रनधीर॥

पद— राग–भुपाली

कुंवर दोउ सुरत-समर रनधीर।
मध्य सेज विहार विहरत रही सुधि न शरीर॥
स्वेद कन वन गन मगन मन धनी धन बिनु चीर।
उमंग अँग अँग अनंग रंग सो रहे रँगि वर वीर॥
बदन विधुवर विसद सुंदर स्रवत अमृत सीर।
तृषित पीवत तृपति होत न क्योंहूँ अमित अधीर॥
महा लालचि लाड़िले छबि भरे गहर गंभीर।
हितू श्रीहरिप्रिया हरषत निरखि निपटहि नीर॥६

भावार्थ—

दोनों कुँवर-किशोरी सुरति-समर के धीर-गम्भीर योद्धा हैं। सुरति-सेज पर नित्य-विहार-रस में लीन इन्हें अपने शरीर की भी सुधि नहीं है। वस्त्राभूषणों से धनीमानी होने पर भी उनसे विरहित हो सुरति-समर में इतने आसक्त हैं कि परिश्रम के कारण अपने अङ्गों पर झलक रहे स्वेद बिन्दुओं का भी

मार्जन नहीं कर पाते ! अंग-प्रत्यंगों में कामोद्दीपन होने के कारण दोनों योद्धा दिव्य काम के रङ्ग में अनुरञ्जित होकर सदा उमंग में भरे रहते हैं। जिस प्रकार चन्द्रमा से अमृत झरता रहता है, उसी प्रकार इन दोनों के सुन्दर मुख-चन्द्रों से सौन्दर्य-रस का निर्झरण सदैव होता रहता है। तृषातुर होकर उस दिव्य-रस का निरन्तर पान करते रहने पर भी कभी उससे तृप्त नहीं होते, अपितु सदा आकुल-व्याकुल बने रहते हैं। इन श्रीयुगलकिशोर की छवि का कोई पार नहीं है, तो भी परस्पर में रूप-माधुरी-पान के लालची बने ही रहते हैं। श्रीहितु सहचरी एवं श्रीहरिप्रिया सखी श्रीयुगलवर की अनुपम झाँकी का अत्यन्त निकट से दर्शन कर हर्षित हो रही हैं ॥६॥

* अनुरागिनि रत्नकला मध्याभास *

दोहा—

मन चीते कारज भये, रन जीते जुगलाल।
उरझि रहे अँग अंग यों, कंचन बेलि तमाल॥

पद— राग—भुपाली

रङ्ग रङ्गीले छैल छबीले।
राजत दोऊ रसिक रसीले॥
रति-रण जीति जोरि जुगराज।
किये सफल मन वांछित काज॥

सजे सगबगे सहज सिंगार।
रस रगमगे जगमगे अपार॥
मनु उरझी तरु कंचन बेली।
यों सोहें श्रीहरिप्रिया सहेली॥७॥

भावार्थ—

सुरति-रंग में रंगे, छवि-से भरे, रस में पगे दोनों रसिक-वर अति शोभायमान लगते हैं। सुरत-समर में इनके मनोरथ पूरे हो गये हैं। परस्पर क्रीड़ा के कारण इनके विग्रह सगवगे-से हो रहे हैं। इस समय इनका सहज-शृङ्गार दर्शनीय है। दिव्य रस से अनुरञ्जित होने के कारण इनके सभी अङ्ग जगमगा रहे हैं। ये कुँवर-किशोरी परस्पर में इस प्रकार शोभायमान हैं मानों स्वर्णलता श्याम-तमाल से उलझ गई हो॥७॥

दोहा—

लाल भामते जीयके, लसौ बसौ हिय धाम।
स्यामा सहज सनेहनी, सहज सनेही स्याम॥

पद— राग—विभास

सहज सनेही स्यामा-स्याम।
मोहें कोटि कोटि रति-काम॥
अंग अंग आभा अभिराम।

लाड़ लड़ीले जागे याम॥

लाल भावतौ श्रीराधा भाम।
विलसौ श्रीहरिप्रिया हिये धाम ॥८॥

भावार्थ—

स्वाभाविक स्नेहासक्त श्रीश्यामाश्याम अपने अङ्ग-प्रत्यङ्ग की आभा से करोड़ों रति-कामदेवों को मोहित कर रहे हैं। सुरति-विलास में लीन ये दोनों लाड़िली-लाल पिछले प्रहर से जाग रहे हैं। भाँवते श्रीलालजी तथा भामिनी श्रीलाड़िलीजी की यह विलसित जोड़ी श्रीहरिप्रिया सखी के हृदय-मन्दिर में सदा विराजमान रहे ॥८॥

दोहा—

प्यारी जीवनि प्यारे की, प्यारौ प्यारी प्रान।
रंगमहल में विलसहीं, दोऊ एक समान ॥

पद— राग–विभास

प्यारीजू प्यारे की जीवनि,
प्यारौ प्यारी प्रान अधार।
प्यारी प्यारे कें उरमाला,
प्यारौ प्यारी कें उरहार ॥
प्यारी प्यारे रंग महल में,
रँग भरे दोउ करत विहार।
रंग भरी निरखत हरषत हियें,

श्रीहरिप्रिया सकल सुखसार ॥६

भावार्थ—

श्रीप्रियाप्रियतम दोनों सुरति रंग में रँगे-पगे रङ्ग-महल में नित्य-लीला-विहार में संलग्न हैं। ये दोनों एक-दूसरे के लिए प्राणाधार-स्वरूप हैं। यही कारण है कि प्रियाजी प्रियतम के हृदय की माला बनकर सदा उनके हृदय से लगी रहती हैं तथा प्रियतम श्यामसुन्दर भी श्रीप्रियाजी के गले का हार बनकर सदा उनके वक्ष:स्थल पर विराजमान रहते हैं। श्रीयुगल की इस अनुराग-लीला से अनुरञ्जित श्रीहरिप्रियासखी उनके सकल सुख-सार स्वरूप विहार का दर्शन कर प्रफुल्लित हृदय हो रही हैं ॥९॥

※ अनुरागिनि विश्वाभा मध्याभास ※

दोहा—

कुंज भवन में करत दोउ, सुरत रंग रतिकेलि।
उरझि रहे सुरझत नहीं, तन-तन मन-मन मेलि ॥

पद— तिताला—केदार राग

नित नव कुंज भवन में केलि।
करत हैं दंपति सुख-संपति अति,
रसिक-रसिकिनी रति-रस रेलि ॥
उरझि रहे सुरझत नहिं क्योंहूँ,
दोउजन तन-तन मन-मन मेलि।

तृषित न होत तृषातुर चितवत,
हितु जहाँ श्रीहरिप्रिया सहेलि ॥१०॥

भावार्थ—

नित्य-नव-कुञ्ज-भवन में सुरत-सेज पर रस-रंग में क्रीड़ा-रत सुख की सार-सम्पत्ति-स्वरूप रसिक-रसीली दम्पती की यह जोड़ी अपने तन-से-तन मिलाकर परस्पर इस प्रकार उलझ गई है कि किसी प्रकार से सुलझायी नहीं जा सकती। नव-नम्पती के इस विलास-रस का अपने अत्यन्त तृषित नेत्रों से पान करने पर भी श्रीहितुसहचरी तथा श्रीहरिप्रियासखी को तृप्ति नहीं हो रही है ॥१०॥

दोहा—

सुरति रंग के रंग में, रहे रंग अँग-अंग।
अद्भुत आज विराजहीं, प्यारी प्रीतम संग॥

पद— राग केदार

रँगे दोऊ सुरति रङ्ग के रङ्ग।
रङ्ग रँगीले आज विराजत,
प्यारी प्रीतम संग॥
सोहत भूषन-बसन रंगमय,
शिथिल भये सब अंग।

हितु सखि श्रीहरिप्रिया,
विलोकत उर में अधिक उमंग ।।११

भावार्थ—

ये श्रीयुगलकिशोर सुरति-रंग में रँगे हुए आज अत्यन्त शोभा को प्राप्त हो रहे हैं। सुरत-सेज पर विराजमान इन श्रीप्रिया-प्रियतम के केलि-जन्य परिश्रम के कारण सभी अङ्ग शिथिल हो रहे हैं तथा वस्त्राभूषण भी अस्त-व्यस्त हो गये हैं। श्रीहितु एवं श्रीहरिप्रिया सहचरी अपने हृदय में अत्यन्त उमङ्ग भरकर इन युगल दम्पती का दर्शन कर रही हैं ।।११।।

दोहा—

अंग अंग बस ह्वै रहै, जद्दपि श्याम सुजान ।
तद्दपि पीवत प्यार सों, अधर-सुधा रस पान ।।

पद— राग भैरव

प्रीतम प्यार सों पीवत अधर सुधारस ।
अलबेली के मुख अंबुज सों लगे चसन चस ।।
भोइ रहे प्यारी जू के रंग ही,
होइ रहे अंग-अंग बस ।
अति उदार श्रीहरिप्रिया,
स्वामिनी प्रगट करत जस ।।१२

भावार्थ—

यद्यपि प्रियतम श्यामसुन्दर बड़े-नागर हैं, उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग सुरति-केलि-जन्य रस में सदा सराबोर रहते हैं तथापि वे अलबेली श्रीप्रियाजी के मुखकमल-मकरन्द-पान की स्पृहा से प्रीति-पूर्वक उनके अधर-सुधा-रस का पान करने में अनुरक्त हैं। श्रीप्रियाजी के रंग में रँगे-पगे होने के कारण उनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग श्रीलाड़िलीजी के अङ्ग-प्रत्यङ्गों के वशीभूत हो रहे हैं। इस प्रकार श्रीहरिप्रिया स्वामिनी श्रीलाड़िली-लाल की इस रसमयी परिपाटी के यश का अत्यन्त उदारता पूर्वक उद्घाटन कर रही हैं ॥१२॥

दोहा—

आरस तजिये जाउँ बलि, लगी भुरहरी हौंन।
त्यौं त्यौं पौंढ़त तानि पट, बानि परी यह कौंन॥

पद— राग विभास

परी बलि कौन अनौखी बानि।
ज्यों-ज्यों भोर होत है,
त्यौं-त्यौं पौढ़त हौ पट तानि॥
आरस तजहु अरुनई उदई,
गई निसा रति मानि।
श्रीहरिप्रिया प्रान-धन-जीवनि,
सकल सुखनि की खानि॥१३॥

भावार्थ—

भोर हो जाने पर भी श्रीप्रिया-प्रियतम अलसाई मुद्रा में शैया पर पौढ़े हुए हैं। सहचरियां मंगल-गान करती हुईं उन्हें उठा रही हैं। श्रीहरिप्रियासखी कहती हैं—

हे श्रीप्रिया-प्रियतम ! आप दोनों के इस अनोखे स्वभाव कीं बलिहारी है ! जैसे-जैसे भोर-काल हो रहा है, वैसे-ही-वैसे आप दोनों पट (ओढ़नी) तान-तानकर सोने का उपक्रम कर रहे हैं। न जाने आप दोनों की यह अनोखी बानि कैसे पड़ गई ? पूर्व दिशा में अरुणाई फूटने लगी है। सूर्योदय होने वाला है। रात्रि सुख-विलास कर चली गई है। हे प्राणधनजीवनी ! आप ही हमारे प्राण-धनजीवन-स्वरूप तथा सम्पूर्ण सुखों की खानि हैं। (यह विचार कर) हमें सफल मनोरथ कीजिए अर्थात् आलस्य का परित्याग कर जागृत होइये ।।१३।।

दोहा—

सुनि सहचरि के वचन प्रिय, उठी सुरति सुख लूटि।
सँभरि सेज तें सुभट ज्यों, विजयी होय वधूटि ।।

पद— राग विभास

ललन सँग सोय उठी सुख लूटि।
सुरत समर में सुभट लाड़ लड़ि,
सरबस लीनौं घूँटि ।।

सिथिल कंचुकी उभय कुचन पर,
रहि कच आवलि छूटि।
श्रीहरिप्रिया स्वामिनी श्यामहि,
सुबस किये जुध जूटि ॥१४॥

भावार्थ—

सखी की मधुर-वाणी सुनकर श्रीप्रियाजी प्रियतम के सङ्ग सुरति-सेज से उठ-बैठती हैं। उस समय की शोभा का वर्णन करती हुईं श्रीहरिप्रिया सखीजी कहती हैं—

ललन के संग ललना श्रीप्रियाजी सुख लूटकर, सोकर उठ बैठी हैं। सुरत-सागर में वीर योद्धा की भाँति जूझकर श्री लाड़िलीजी ने श्रीलालजी का मानो सब कुछ लूट लिया है। इस सुरत-समर में श्रीप्रियाजी की कँचुकी शिथिल पड़ गई है, अलकावलि खुलकर वक्ष:स्थल पर बिखरी हुई है। इस प्रकार श्रीहरिप्रिया स्वामिनी ने सुरत-समर में जूझकर प्रियतम श्यामसुन्दर को अपने अधीन कर लिया है ॥१४॥

दोहा—

सब निसि लूटी सुरत सुख, प्रान प्रिया हरि संग।
भाग सुहाग सची रची, रसिक रवन के रंग ॥

पद—

राची रसिक रवन के रंग।
श्रीराधा रमनी रस रूपा अमित अनूपा अंग ॥

भाग सुहाग भरी भरिभामिनि उर अनुराग अभंग।
सारी रैन सुरत सुख लूटी प्रान प्रिया हरि संग ।।१५

भावार्थ—

रसिक शिरोमणि श्रीश्यामसुन्दर के अनुराग से अनुरञ्जित है हृदय जिनका, ऐसी श्रीप्रियाजी परम सौभाग्य से भरपूर हैं। श्रीहरिप्रियाजी कहती हैं—

जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग अपरिमेय रस से ओत-प्रोत तथा रूप-लावण्य से युक्त होने के कारण अनुपम हैं, ऐसी श्रीराधिका-किशोरी रसिक शिरमौर श्रीश्यामसुन्दर के अनुराग-रंग से अनुरञ्जित होने के कारण अत्यन्त शोभा को प्राप्त हो रही हैं। भामिनीजी श्रीप्रियाजी का हृदय प्रियतम श्यामसुन्दर के प्रति अक्षय अनुराग से भरा होने के कारण वे परम भाग-सुहाग से भरी हुई हैं। वे प्रियतम की प्राणवल्लभा हैं। क्योंकि उन्होंने प्राण-प्यारे के संग सारी रात सुरत-केलि-जन्य सुख का आस्वादन किया है ।।१५।।

दोहा—

जय नवरङ्ग विहारिनी, नववासा सुखकारि।
जय श्रीहरिप्रिया स्वामिनी, श्रीराधा सुकुमारि ।।

स्तोत्र— राग भैरव

जय जय श्री नवरङ्ग विहारिनि।

जय जय नववासा सुख कारिनि ।।

जय जय श्री नवकेलि परायनि ।
जय जय विश्वानंद विधायनि ॥
जय जय श्रीवृन्दावन रानी ।
जय जय परमोत्तम सुखदानी ॥
जय जय श्री मुख अद्भुत शोभा ।
जय जय निज विलास रस गोभा ॥
जय जय श्री प्रीतम की प्यारी ।
जय जय सरस सरूप उज्यारी ॥
जय जय श्री राधा गुण गोरी ॥
जय जय मधुरा मधु रस बोरी ।
जय जय श्रीअति अमित अनूपा ।
जै जै सहज सुभद्र स्वरूपा ॥
जै जै श्री मोहन मनहारी ।
जै जै पद्मा प्रान अधारी ॥
जै जै श्री अह्लादिनि देवी ।
जै जै श्यामा सब-सुख सेवी ॥
जै जै श्री पिय-वल्लभ राधा ।
जै जै सारद सब सुख साधा ॥

जै जै श्री नव नित्य नवीना ।

जै जै परम कृपाल प्रवीना ॥
जै जै श्री सब सुख की धामा ।
जै जै देव देविका नामा ॥
जै जै श्री लावनिता देसा ।
जै जै सुन्दरि सरस सुवेसा ॥
जै जै श्री कल कोकिल बैनी ।
जै जै पद्मा हरि सुख दैनी ॥
जै जै श्री गुन रूप गँभीरा ।
जै जै ऐंदिरा हरि हीरा ॥
जय जय श्री छबि कोटि छबीली ।
जय जय रामा हिये बसीली ॥
जय जय श्री आनन्द अभिरामा ।
जय जय वामा सब सुख धामा ॥
जय जय श्री मोहन मन हरनी ।
जय जय कृष्णप्रिया सुख करनी ॥
जय जय श्री रङ्ग रूप रसीली ।
जय जय पद्माभा प्रतिपाली ॥
जय जय श्री रस बरषा करनी ।
जय जय श्रुति रूपा श्रुति बरनी ॥

जय जय श्री परिपूरन कामा ।
जय जय भागवती भुवि भामा ॥
जय जय श्री ससि कोटि प्रकासी ।
जय जय माधवि हिये निवासी ॥
जय जय श्री वृन्दावन वसिता ।
जय जय असित सिता रस रसिता ॥
जय जय श्री जस जग विख्याता ।
जय जय गुन आकरि सुख दाता ॥
जय जय श्री महा प्रेम प्रसिद्धा ।
जय जय विसद वल्लभा रिद्धा ॥
जय जय श्री गुन गन आगारा ।
जय जय गौरांगी आधारा ॥
जय जय श्री कञ्चन दिवि अंगी ।
जय जय कुंवरि सुकेसि सुरंगी ॥
जय जय श्री छबि चित्र विचित्रा ।
जय जय पावन करन पवित्रा ॥
जय जय श्री अलि अलक लड़ैती ।

जय जय कुमकुम कला बड़ैती ॥

जय जय श्री नवनित्य नवेली।
जय जय सुखदा हितू सहेली॥
जय जय श्रीराधा निज नामिनि।
जय जय श्रीहरिप्रिया जय स्वामिनि॥१६

भावार्थ—

प्रस्तुत स्तोत्र में श्रीप्रियाजी के स्तवन के साथ ही श्रीरङ्गदेवी, नव्यवासा सहचरी से लेकर श्रीहरिप्रिया सहचरी पर्यन्त सखी-परिकर की भी वन्दना गाई है। इस सखी-परिकर के रूप में श्रीनिम्बार्काचार्य से लेकर श्रीहरिव्यासदेवाचार्य पर्यन्त आचार्य परम्परा का परिचय भी मिलता है। श्रीहरि-प्रियासखी (श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी) कहती हैं—

स्वामिनी श्रीराधासुकुमारी की सदा ही जय हो जो नवरंग-विहारिणी श्रीरङ्गदेवीजी, श्रीनव्यवासाजी को सदा सुख प्रदान करती हैं ॥१॥ नव-केलि परायण श्रीप्रियाजी की सदा ही जय हो जो विश्वभा सखी का आनन्द-विधान करती हैं ॥२॥ श्रीपरमोत्तमा सखी को सुख प्रदान करने वाली, श्रीनिजविलासा सखी के लिये रस-भूमि स्वरूपा, श्रीसरसा सखी के रूप को प्रकाशित करने वाली, श्रीमधुरा सखी को माधुर्य रस में निमग्न करने वाली, श्रीसहजसुभद्र सखी के लिये मंगल-स्वरूपा, श्रीपद्मा सखी की प्राणाधारा, श्रीश्यामा सखी तथा शारदा सखी के लिये सर्व सुख प्राप्ति स्वरूपा, वृन्दावनरानी मुखारविन्द की

अद्‌भुत शोभा से युक्त, प्रियतम के लिए प्राण-वल्लभा, गौरांगी, सर्व गुण सम्पन्ना, श्रीमोहन के मन का भी हरण करने वाली, परमाह्लादिनी-शक्ति-रूपा श्रीराधिका किशोरी की सदा ही जय हो! परम प्रवीण श्रीकृपाला सखी के लिये नित्य-नवीना, श्रीदेवदेवी सखी के लिये सर्व सुखों की भूमि स्वरूपा, सुन्दर वेश धारण करने वाली श्रीसुन्दरीसखी के लिए परम सुन्दरी, श्री पद्मासखी को दर्शन मात्र से सुख प्रदान करने वाली, कोकिल-कल-बैनी, श्रीइन्दिरासखी के लिए रूप-गुण में गम्भीर, श्री रामासखी के हृदय में विराजने वाली, परम छबीली, श्रीबामा-सखी को सर्व सुख प्रदान करने वाली, आनन्द-माधुर्य से युक्त, श्रीकृष्णप्रिया सखी को भी सुख प्रदान करने वाली, श्रीपद्माभा सखी का पोषण करने वाली, रूप-रंग में परम रसीली, श्रुतियाँ भी जिनका गान करती हैं, ऐसी श्रुतिरूपासखी पर दिव्य रस का वर्षण करने वाली सुकुमारी श्रीराधिकाकिशोरी की सदा ही जय हो! समृद्धिशाली श्रीभागवतीसखी के लिए परिपूर्ण-कामा, श्रीमाधवीसखी के हृदय में निवास करने वाली, कोटि-चन्द्र की आभा से युक्त, श्रीअसितासखी को रस-सिक्त करने वाली, वृन्दावनवासिनी श्रीगुणाकर सखी को सुख प्रदान करने वाली, स्वयश में जगद्विख्यात, श्रीवल्लभासखी को समृद्धि देने वाली, प्रेम-रस-सरोवर के रूप में प्रसिद्ध, श्रीगौराङ्गी सखी की प्राणाधारा, परम गुणों की राशि, श्रीसुकेशीसखी को प्रेम-रंग से रञ्जित करने वाली, कंचन के समान दिव्य वर्ण धारण करने

वाली, श्रीपवित्रासखी को पवित्र करने वाली, चित्र-विचित्र छवि से युक्त श्रीकुमकुमा सखी के लिये कला-स्वरूपा, अलकलड़ैती, श्रीहितूसखी को सुख-प्रदान करने वाली, श्रीहरिप्रिया सखी की स्वामिनी, नित्य नवीनी श्रीप्रियाजी, जिनका निज नाम श्रीराधा है, उनकी सदा ही जय हो ॥१६॥

दोहा—

नित्य किशोरि किशोर दोउ, नित्य कामिनी कंत ।
नित विलास विलसत दोऊ, नित नव भाव अनंत ॥

स्तोत्र— राग भैरवी

जय श्रीराधा नित्य निशोरी,
रसिकविहारी नित्य किशोर ।
जय श्रीराधा पिय चितचोरी,
प्रीतम प्रान प्रिया चित चोर ॥
जय श्रीराधा राजति गोरी,
गुन मन्दिर वर सुंदर श्याम ।
जय श्रीराधा रसिकिनि जोरी,
रसिक रसीलौ सब सुखधाम ॥
जय श्रीराधा रूप अगाधा,
मनमोहन सोभा नहिं पार ।
जय श्रीराधा हरनी बाधा,

बाधा हर हरि प्रानअधार ॥
जय श्रीराधा अति सुकुंवारी,
अति अद्भुत प्यारौ सुकुंवार ।
जय श्रीराधा पिय की प्यारी,
प्यारी को पिय परम उदार ॥
जय श्रीराधा कृष्णवल्लभा,
राधावल्लभ कृष्ण कृपाल ।
जय श्रीराधा कृपा सुल्लभा,
दयानिधे हरि दीनदयाल ॥
जय श्रीराधा नैंन बिसाला,
कृष्ण कमल-दल नैंन बिसाल ।
जय श्रीराधा रूप रसाला,
रङ्ग रङ्गीलौ रूप रसाल ॥
जय श्रीराधा परम प्रवीना,
चित सुख चातुर परम प्रवीन ।
जय श्रीराधा नित्य नवीना,
नीरज नैंन सुनित्य नवीन ॥
जय श्रीराधा रति रस रङ्गी,
कृष्ण कोटि कंदर्प सुरङ्ग ।

जय श्रीराधा मणि कनकांगी,
मरकत मनि मोहन मृदु अंग ।।
जय श्रीराधा रवनी कवनी,
रहसि रवन रस जोरि विचित्र ।
जय श्रीराधा दुख दवदवनी,
दुख दव दवन प्रवीन पवित्र ।।
जय श्रीराधा बारिज बदनी,
बारिज बदन वृन्दावनचंद ।
जय श्रीराधा सब सुख सदनी,
सब सुख सदन सदानँद कंद ।।
जय श्रीराधा लावनि ललिता,
लावनि ललित लाड़िलौलाल ।
जय श्रीराधा सब सुख सलिता,
सब सुख सलित सदा सब काल ।।
जय श्रीराधा सहज स्वरूपा,
सकल सिरोमनि सहज स्वरूप ।
जय श्रीराधा अमित अनूपा,

अद्भुत आभा अमित अनूप ।।

जय श्रीराधा कंता कामिनी,
कंत कामिनी राधा कंत।
जय श्रीराधा हरिप्रिया स्वामिनी,
विलसत नवनव भाव अनंत ।।१७।।

भावार्थ—

सखियाँ भोर काल में शयन से उठे हुए, श्रीप्रिया-प्रियतम का स्तुति-गान करती हैं। श्रीहरिप्रियासखीजी कहती हैं—

जिन्होंने एक दूसरे के चित्त को चुरा लिया है उन नित्य किशोरी श्रीराधा और नित्य किशोर श्रीरसिकबिहारीलाल की सदा ही जय हो। गौर वर्ण की आभा से युक्त, रस में सराबोर, रूप-अगाधा, समस्त बाधाओं का हरण करने वाली, अत्यन्त सुकुमारी, प्रियतम की प्राणवल्लभा, कृपा सुलभा, विशाल-नेत्री, रूप-रसाला, परमप्रवीणा, नित्य नवीना, रतिरसरङ्गी, मणि कनकाङ्गी, परम रमणी, दुःख रूपो दावानल का दमन करने वाली, वारिजवदनी, सर्व सुखों की खानि, परम लावण्य से युक्त, सर्व सुख सलिता, सहज स्वरूपा, अमित अनूपा, कंत-कामिनी तथा श्रीहरिप्रियास्वामिनी श्रीराधा की सदा ही जय हो।

रसिक शिरोमणि, सर्व सुखों के धाम स्वरूप, मन को मोह लेने वाले, परम शोभा से युक्त, अपने आश्रितजनों का

दुःख-हरण करने वाले, रसिकों के प्राणाधार, परमसुकुमार, श्री प्रियाजी के प्रति परम उदार, कृपा की वृष्टि करने वाले, दीन-दयालु, कमलदल के समान विशाल नेत्रों वाले, अनुराग रङ्ग से रञ्जित हृदय वाले, रूप-रस-सौन्दर्य से युक्त, परम नागर, नित्य-नवलकिशोर, करोड़ों कामदेवों के समान सुन्दर, मरकत-मणि के समान मृदुल अङ्गों वाले, रमण-विहारी, दुःखरूपी दावानल का दमन करने वाले, वारिजवदन, वृन्दावनचन्द्र, परमानन्दकन्द, सर्व सुखों की खानि, लाड़लड़ीले, रूप-लावण्य से युक्त, सब कालों में सुख-वर्षण करने वाले, सर्व-शिरोमणि, सहज-स्वरूप अद्भुत आभा से युक्त, श्रीराधकंत तथा नित्य विहार की नई-नई एवं अनन्त भावनाओं से युक्त प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर की सदा ही जय हो ।।१७।।

दोहा—

अलबेले आँगन खरे, अंस अंस भुज धारि ।
लै दरपन दिखरावहीं, ह्वै सनमुख सहचारि ।।

पद— राग—भैरव

अति अलबेले आँगन ठाढ़े ।
भुजा परस्पर अंसनि दीने,
सुरति रंग में भीने गाढ़े ।।
पलटे पट आभूषन अंगन,
उर नख रेखा अद्भुत सोहें ।

पीक कपोल अधर वर अंजन,
हार बार उरझे मन मोहें ॥
आलस बलित अरुन दृग अंबुज,
छैल छबीले रस में पागे।
लै दरपन श्रीहरिप्रिया सहचरि,
ठाढ़ी युगल कुँवर बर आगे ॥१८॥

भावार्थ—

परस्पर गलबाँही डाले मोहन-महल के चौक में खड़े हुए रसिक दम्पती को सखियाँ दर्पण दिखाती हैं। श्रीहरिप्रिया सहचरी कहती हैं—

अति अलबेले सुकुमार रसिक दम्पती परस्पर गल-बाँही दिए, सुरति-रंग में गाढ़-भाव से अनुरञ्जित, मोहन-महल के चौक में खड़े हैं। रस की प्रगाढ़ता में ये अपनी सुध-बुध खो बैठे हैं। इन्होंने अपने वस्त्राभूषणों को भी उलट-फेर कर पहन लिया है। इनके उर पर उभरे हुए नख-क्षत के चिह्न अद्‌भुत शोभा को प्राप्त हो रहे हैं। कपोलों पर पीक और श्रेष्ठ अधरों पर अंजन लगा हुआ है। परस्पर में उलझी हुई हार और अलकावलि की शोभा मन को मोह रही है। आलस्य युक्त होने के कारण इन दोनों के नेत्र अरुण-कमल की भाँति लालिमा लिए हुए हैं। इस प्रकार की अद्‌भुत छवि से भरे रस में पगे छैल-छबीले श्रीप्रिया-प्रियतम के सम्मुख श्रीहरिप्रिया सहचरी अपने हाथों में दर्पण लेकर खड़ी हैं ॥१८॥

दोहा—

रति रस चिह्न सँवारही, सहचरि निज पट छोर ।
ज्यों-ज्यों सकुचत जात हैं, नागर नवल किसोर ।।

पद—　　　　राग—भैरवी

निशि के रति रस चिह्न सँवारति,
　　ज्यों-ज्यों सकुचत नवलकिसोर ।
रङ्गदेवी अति रङ्ग रँगीली,
　　लै पोंछति निज पट के छोर ।।
याही रस में मगन निरंतर,
　　नहिं जानत कित रजनी भोर ।
सोभा निरखि हितू श्रीहरिप्रिया,
　　दंपति पर डारें तृन तोर ।।१६।।

भावार्थ—

श्रीरङ्गदेवीजी मोहन-महल के आँगन में खड़े हुए श्री प्रिया-प्रियतम के रति-चिह्नों को अपनी चूनरी से पोंछ रही हैं। इस शोभा का वर्णन करती हुई श्रीहरिप्रिया सहचरी कहती हैं—

रसिक दम्पति श्रीप्रिया-प्रिययम के रात्रि के सुरति-केलि-जन्य चिह्नों को अति रंग-रँगीली श्रीरङ्गदेवीजी ज्यों-ज्यों अपनी चूनरी से पोंछ कर सँवारती हैं, त्यों-त्यों नवलकिशोर श्रीश्यामसुन्दर सकुचते जाते हैं। ये श्रीनवलकिशोर-किशोरी

नित्य-विहार-रस में इतने रगे-पगे रहते हैं कि इन्हें दिन-रात का भी पता नहीं चल पाता। इनकी ऐसी शोभा-निरख श्रीहितू और श्रीहरिप्रिया सहचरी (दृष्टि-दोष से बचाने के लिए) इन युगल दम्पति पर तृण तोड़कर डाल रही हैं ॥१६॥

मंगला-भोग-आरती के पद

(समय प्रातः ४.३० से ५.३० तक)

दोहा—

मुख सोधन मुख बसन करि, मङ्गल भोग अरोग।
आरति हित बैठे दोउ, श्रीहरिप्रिया संयोग ॥

पद— राग—भैरवो

मुख सोधन सुख कुंज सदन में,
करत बिहारी-बिहारनि दोऊ।
अलबेली अनिमिष अँखियन सों,
सुन्दर बदन निहारनि दोऊ॥
करि मुख बसन असन मंगल,
आरोगि अँचय जल-झारनि दोऊ।
श्रीहरिप्रिया बैठाय सिंहासन,
सज आरति सहचारनि दोऊ ॥२०

भावार्थ—

मोहन-महल के आँगन में चारों ओर आठ कुंजें हैं जिनमें श्रीप्रिया-प्रियतम की मंगला से लेकर शयन पर्यन्त अष्ट

कालीन सेवा सम्पन्न होती है। प्रस्तुत पद में सखियाँ मोहन-महल की उत्तर दिशा में अवस्थित मंगल कुंज में श्रीप्रियाप्रियतम की मंगला-आरती की तैयारी कर रही हैं। श्रीहरिप्रिया सहचरीजी कहती हैं—

श्रीप्रिया-प्रियतम मंगलमय कुंज-भवन में पधारकर मुख-शुद्धि करते हैं। उस समय श्रीरसिकविहारी-विहारिणी अपनी निर्निमेष चञ्चल दृष्टि से एक-दूसरे के सुन्दर मुख-कमल को निहारते हैं। मुख धो लेने के पश्चात् श्रीप्रिया-प्रियतम वस्त्र से अपना मुख पोंछकर मंगल-भोग आरोगते हैं। भोग आरोग लेने पर सखियाँ स्वर्ण-झारी में जल लेकर दोनों को आचमन कराती हैं। फिर उन्हें सिंहासन पर विराजमान कर उनकी आरती सजाती हैं ॥२०॥

दोहा—

मंगल आरति वारहीं, मंगल रंग रँगीलि।
मंगलमय मुख छबि निरखि, मंगल दृग उनमीलि ॥

पद— राग–भैरवी

मंगल कुंज में मंगल आरति।
मंगल रंग रँगीली वारति ॥
मंगल मुख अरबिंद निहारति।
मंगल मूरति हिय में धारति ॥
मंगल सब सहचरि अनुसारति।

मंगल मोद विविध बिस्तारति ।।
मंगल चौंर लिये कर ढारति ।
मंगल मनसिज मन मनुहारति ।।
मंगल जय जय शब्द उचारति ।
मंगल श्री हरिप्रिये विचारति ।।२१।।

भावार्थ—

मंगल-कुञ्ज में सखियाँ सिंहासन पर विराजमान श्रीप्रिया-प्रियतम की मंगल-आरती उतार रही हैं। श्रीहरिप्रिया सखी कहती हैं—

मंगल कुञ्ज में मंगल अनुराग से रञ्जित सखियाँ श्रीप्रिया-प्रियतम की मंगल-आरती उतारकर रसिकदम्पति पर अपने को न्योछावर कर रही हैं। उनके मंगलमय मुखारविन्द को निहारती हुई उस मंगलमय छवि को हृदय में धारण करती हैं। इस प्रकार मंगल का अनुसरण करती हुई मंगलरूप सखियाँ विविध प्रकार से मंगल का विस्तार कर रही हैं। मंगलमय चँवर को हाथ में लेकर उन पर डुला रही हैं। कामदेव भी इस मंगल की प्राप्ति के लिए मन-ही-मन मनुहार कर रहा है। किंवा मंगलमय दिव्य काम ही रसिकदम्पति का इष्ट है। अतः सखियाँ भी उस दिव्य कामदेव की मनुहार कर मंगल का साज सजा रही हैं। वे सभी मंगलमय शब्दों से जय-जयकार

करती हुई श्रीप्रिया-प्रियतम के लिए मंगल कामनाएँ कर रही हैं ।।२१।।

* अनुरागिनि विलासावलि मध्याभास *

दोहा—

कमलनैन बस-कारिनी, नित्य किशोरी बाम ।
सुजस उजागरि नागरी, जय राधा सुख धाम ।।

पद—

जय राधा जय सब सुख साधा,
जय जय कमलनैन बस करनी ।
जय स्यामा जय सब सुख धाम्रा,
जय जय मनमोहन मन हरनी ।।
जय गोरी जय नित्यकिसोरी,
जय जय भागनि भरी सुभामिनि ।
जय नागरि जय सुजस उजागरि,
जय जय श्रीहरिप्रिया जय स्वामिनी ।।२२

भावार्थ—

मंगल-आरती उतार कर सखियाँ श्रीप्रिया-प्रियतम का स्तुति-गान करती हुई कहती हैं—

सर्व-सुखों की सिद्धिरूपा, कमलनयन श्रीलालजी को वश में करने वाली श्रीराधाकिशोरी की सदा ही जय हो।

सर्व सुखों की धाम स्वरूपा, श्रीमनमोहन के मन का हरण करने वाली श्रीश्यामाजू की सदा ही जय हो। सौभाग्य-चिह्नों से भरपूर परम सुन्दरी, नित्यकिशोरी, गौरवर्णी श्रीराधा की सदा ही जय हो! जो श्रीहरिप्रियाजू की स्वामिनी हैं, (प्रियतम की परमाह्लादिनी शक्ति के रूप में) जिनका सुयश चारों ओर फैल रहा है, ऐसी परम नागरी श्रीराधाकिशोरी की सदा ही जय हो ।।२२।।

दोहा—

एक रंग में रँगे दोउ, एक प्रान द्वै गात।
बदन बिलोकत परस्पर, छिन बिछुरें न सुहात ।।

पद — राग विलावल

बदन बिलोकनि में न अघात।
पल न लगें पल रहे थकित ह्वै,
डगभरि चल्यौ न जात ।।
दोउ दोउन के प्रान जीवनिधन,
छिन बिछुरे न सुहात।
एक रंग रँगि रहे रँगीले,
एक प्रान द्वै गात ।।
महा सुकुँवार किशोर-किशोरी,
जोरी अति अवदात।

निरखति श्रीहरिप्रिया सहचरी,
उर आनँद न समात ।।२३।।

भावार्थ—

ये श्रीप्रिया-प्रियतम 'एक प्राण द्वै देही' हैं। एक क्षण का वियोग भी इन्हें असह्य है। श्रीहरिप्रिया सखी कहती हैं—

परस्पर मुखारविन्द के दर्शन से ये श्रीकिशोर-किशोरी कभी तृप्त नहीं होते। इनकी पलकें एक पल के लिए भी नहीं लगतीं। निरन्तर रस-विलास के कारण ये इतने चकित-थकित हो गए हैं कि एक पग भी आगे रखना इनके वश की बात नहीं है। परस्पर का वियोग इन्हें असह्य है। वस्तुत: एक-दूसरे के प्राण-जीवन-धन ही जो ठहरे! ये दोनों 'एक प्राण द्वै देही' होने के कारण एक ही अनुराग-रंग में रगे-पगे हैं। अत्यन्त सुकुमार एवं अति सुन्दर श्रीकिशोर-किशोरी की जोड़ी का दर्शन कर श्रीहरिप्रिया सखी के हृदय में आनन्द नहीं समा रहा है ।।२३।।

दोहा—

नैनन नैन मिलावहीं, कहि कहि बैन रसाल ।
रसिकन को धन सहज दोउ, लाड़ लड़ीले लाल ।।

स्तोत्र— राग विलावल

लाल दोउ लाड़लड़ीले हो कहत परस्पर बैंन।

सुनि सुनि घुमि घुमि रीझि रीझि,

नैननि सों लावत नैन ॥
अति अनुराग सुहाग भाग रस,
भीनें नागर नेह ।
कोटि कोटि रति अनँग अंग में,
झलकत रंग अछेह ॥
मनमोहन मनमोहिनी,
सहजहिं स्यामल गौर ।
श्रीहरिप्रिया रसिक जन कौ धन,
जोरी जुगलकिसोर ॥२४॥

भावार्थ—

रसिकदम्पती की रसकेलि का वर्णन करती हुई श्रीहरिप्रिया सखी कहती हैं—

रसविलास के समय रस भरी बातों में लीन श्रीलाड़िलीलाल अपने नेत्रों को पुनः पुनः रीझ-रीझ कर एक-दूसरे से लगाते हैं। नेह-सागर में डूबे ये नागरी-नागर अति-अनुराग-सुहाग-भाग-रस से भींग रहे हैं। यही कारण है कि इन दोनों के अङ्ग-प्रत्यङ्गों से कोटि-कोटि रति-कामदेवों को भी तिरस्कृत करने वाली दिव्य-रस की अक्षय तरंगें तरंगायित हो रही हैं। सहज ही में मन को मोहन करने वाली श्रीयुगलकिशोर की यह गौर-श्यामल जोड़ी श्रीहरिप्रिया सखी तथा रसिकजनों के लिए प्राण-धन स्वरूप है ॥२४॥

दोहा—

लाई कुंज सनान में, निज सहचरि समुझाय।
पहिराये पट पोंछि अँग, यथारीति अह्नवाय॥

पद— राग भैरवी

निज सहचरि समुझाये दोऊ।
न्हान कुंज में आये दोऊ॥
मनि चौकी पधराये दोऊ।
उबटनाँ उबटाये दोऊ॥
सरस सुगंध लगाये दोऊ।
सौरभ नीर न्हवाये दोऊ॥
मृदुल अंग अँगुछाये दोऊ।
पाटंबर पहराये दोऊ॥
करन सिंगार सुहाये दोऊ।
श्रीहरिप्रिया हुलसाये दोऊ॥२५॥

भावार्थ—

यद्यपि श्रीयुगलकिशोर नित्य-विलास-सुख को नहीं छोड़ना चाहते तथापि स्नान का समय जान सखियाँ समझा-बुझाकर श्रीप्रिया-प्रियतम को स्नान-कुञ्ज में स्नान कराने के लिये लाती हैं। वहाँ मणि-जटित चौकी पर बिराजमान कर उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गों में उबटन लगाती हैं। फिर सरस सुगन्धित

द्रव्य पदार्थ लगाकर सौरभ युक्त जल से स्नान कराती हैं। स्नान करा, कोमल वस्त्रों से उनके सुकुमार अङ्गों को पोंछकर वस्त्र धारण कराती हैं। फिर शृङ्गार की अभिलाषा से श्री हरिप्रिया सहचरी उल्लसित हृदय हो उन्हें शृङ्गार-कुञ्ज में ले जाती हैं ॥२५॥

शृङ्गार-भोग-आरती के पद
(समय प्रातः ७.३० से ६.३० तक)

दोहा—

अंस भुजा दीनें दोऊ, भीने रंग अपार।
करन सिंगार सुहावते, आये कुंज सिंगार॥

पद— राग भैरवी

करन सिंगार सिंगार-कुंज में,
आये अलबेले दोउ प्यारे।
चटकभरी चटकति चरननि में,
पावरियाँ सोहें नैंन अन्यारे॥
बिथुरे बार अंस भुज दीने,
सुरति रंग में भीनें भारे।
श्रीहरिप्रिया पधराय सिंहासन,
बरन बरन आभरन संवारे॥२६॥

भावार्थ—

श्रीप्रिया-प्रियतम परस्पर गलबाँही दिए, शरीर पर

वस्त्र लपेटे, चरणों में चट्टी पहने शृङ्गार-कुञ्ज की ओर बढ़ रहे हैं—

अलबेले श्रीप्रिया-प्रियतम शृङ्गार करने के उद्देश्य से शृङ्गार-कुञ्ज में पधार रहे हैं। एक-दूसरे से मिले हुए इनके नेत्र बड़े सुहावने लग रहे हैं। चरणों में पहनी हुई चटकीली चट्टियाँ चलते समय चट्-चट् की मधुर ध्वनि कर रही हैं। स्नान के कारण बिखरी हुई अलकावली अत्यन्त शोभायमान लगती है। सुरति-रंग में रंगे-पगे, गाढ़-आलिंगन में बँधे, परस्पर गलबाँही दिए चल रहे हैं। इन श्रीप्रिया-प्रियतम को शृङ्गार-कुञ्ज में सिंहासन पर पधराकर श्रीहरिप्रिया सहचरी ने वर्ण-वर्ण के वस्त्राभूषणों से इन श्रीयुगलवर का शृङ्गार किया ॥२६॥

दोहा—

देखि देखि सखि कहत यों, कैसे बनें उदार।
जीवनि हितु-जन-जियन की, नखसिख सजि सिंगार॥

पद—   राग भैरवी

नख-सिख सजि सिंगार विराजे।

लै दरपन दिखरावति सुंदरि,
कैसे आज उदार विराजे॥
देखि देखि सोभा अँग अँग की,
उमँगे उरनि अपार विराजे।

श्रीहरिप्रिया हितू जन-जिय को,
जीवनि प्रान अधार बिराजे ॥२७

भावार्थ—

सखियाँ शृङ्गार-कुञ्ज में शृङ्गार करके विराजमान श्रीप्रिया-प्रियतम की रूप-माधुरी का पान कर रही हैं—

शृङ्गार-कुञ्ज में नख-शिख से शृङ्गार कर सिंहासन पर विराजमान रसिकदम्पति को सहचरियाँ दर्पण दिखला-दिखला कर प्रमुदित हो रही हैं। अति उदार श्रीयुगलवर की रूप-माधुरी कैसी मनोहारिणी लग रही है ? सखियों के हृदय तो इनकी शोभा निरख-निरख कर मानो उमगे पड़ रहे हैं। श्री युगलकिशोर की यह जोड़ी श्रीहितु सहचरी तथा श्रीहरिप्रिया सहचरी के लिये तो मानो प्राणाधार स्वरूपा है ॥२७॥

दोहा—

प्रेम पुलकि अँग अंग में, देत हेत जुत कौर।
भोग सिंगार अरोगहीं, सुकुंवारन सिरमौर ॥

पद— राग भैरवी

बैठे दोउ सुकुंवार सिरोमनि,
आरोगत हैं भोग सिंगार।
चामीकर चौकी पर सुंदरि,
आनि धरयौ सहचरि भरि थार ॥

आदर सहित देत कर कौरनि,
कमल बदन करि करि मनुहार।
श्री हरिप्रिया प्रसंसि परसपर,
प्रेम पुलकि अँग-अँग अपार ॥२८॥

भावार्थ—

शृङ्गार-भोग-कुञ्ज में श्रीप्रिया-प्रियतम को शृङ्गार-भोग आरोगते देख सखियाँ कहती हैं—

दोनों रसिक-सिरमौर सुकुमार किशोर-किशोरी शृङ्गार-भोग-कुञ्ज में शृङ्गार-भोग आरोग रहे हैं। रत्न-जटित स्वर्णिम चौकी पर सखियों ने स्वर्ण-थाल में भोग की सारी सामग्री सजा कर रख दी है। ये परस्पर मनुहार करते हुए एक-दूसरे के मुख-कमल में ग्रास दे रहे हैं। इस प्रकार भोग-आरोगते समय प्रेम-रस-चर्चा में लीन पारस्परिक प्रशंसा के कारण इनके अंग-प्रत्यंग रोमाञ्चित हो रहे हैं ॥२८॥

दोहा—

अचवन अचवावति बियें, हितू हियें हुलसाय।
रोरी तिलक बनावहीं, बीरी भोग लगाय ॥

पद—

लै झारी अचवन अचवावति।
हितू सहेली हित को चित को,

समझि समझि हियरें हुलसावति ॥

दै मुख-बासु बिसाखा बीरी,
लै लै ललिता भोग लगावति।
श्री हरिप्रिया तिलक मस्तक रचि,
नीराजनि की सोंज सजावति॥२६

भावार्थ—

श्रृङ्गार-भोग आरोगने के पश्चात् रत्न-जटित स्वर्ण-झारी से श्रीहितु सहचरी श्रीप्रिया-प्रियतम को (जल से) आचमन कराती हुई उल्लसित हृदय हो रही हैं। मानो श्रीयुगल की अन्तर की बात उन्होंने जान ली हो ! उसी समय श्रीविशाखाजी ताम्बूल की लगी हुई बीरियों को सुगन्धित द्रव्य से सुवासित कर श्रीललिताजी को देती हैं और श्रीललिताजी बड़े प्रेम-पूर्वक श्रीप्रिया-प्रियतम को उन बीरियों का भोग लगाती हैं। फिर श्रीहरिप्रियाजी ने बड़ी ही रुचि से श्रीयुगलवर के मस्तकों पर रोली का टीका लगाकर श्रृङ्गार-आरती की सामग्री एकत्र की ॥२६॥

दोहा—

सजि लाई आरति सखी, अग्रवर्त्ति कर दीय।
अद्भुत रीति उतारहीं, निरखि निरखि छबि बीय॥

पद— राग भैरवी

मूरतिमान सिंगार सहचरी,
सजि लाई आरति सिंगार की।

आनि दई कर अग्रवर्त्ति कें,
कहा कहों शोभा कनक थार की ॥
अद्भुत रीति उतारति वारति,
निरखि सुछबि बिबि वर उदार की।
श्रीहरिप्रिया पुलक अँग अँग में,
बाढ़ी उर उमँगनि बिहार की ॥३०॥

भावार्थ—

सखियाँ श्रीयुगलवर की शृङ्गार-आरती उतारती हैं—

शृङ्गार-आरती-सजाकर लाने वाली सखी ऐसी मनोरम प्रतीत हो रही है मानो साक्षात् शृङ्गार-रस ने सहचरी का रूप धारण कर लिया हो! उस शृङ्गार-आरती के थाल को सखी ने श्रीरंगदेवीजी के हाथों में सौंप दिया। आरती से सजे हुए उस स्वर्ण थाल की शोभा तो देखते ही बनती थी! कही नहीं जा सकती! शृङ्गार-आरती के उस थाल को अपने हाथों में लेकर श्रीरङ्गदेवीजी बड़ी ही अनोखी रीति से श्रीयुगलकिशोर की शृङ्गार-आरती उतार रही हैं। उस समय की उनकी छवि को बारम्बार निहारती हुई अपने मन-प्राणों को श्रीयुगल-जोड़ी पर न्योछावर कर रही हैं। प्रेम-विहार की तीव्र लालसा के कारण श्रीहरिप्रियाजी का तो हृदय ही उमड़ पड़ा! उनका अङ्ग-प्रत्यङ्ग इस प्रेम-वैचित्र्य के कारण रोमाञ्चित हो उठा ॥३०॥

दोहा—

यह सुख दै सब सखिन कों, सहज सुरत-रस लीन।
कुंजन कुंजन बिहरहीं, निज इच्छा आधीन॥

पद—　　　　　　राग आसादरी

चले तहाँ तें उरन उमहियाँ।
बिहरत कुंजन कुंजन महियाँ॥
चाल मराल दियें गरबँहियाँ।
तिरछी चितवनि निरखत छँहियाँ॥
आस पास सोहें सब सहियाँ।
जुगल चंदमुख रुष चष चहियाँ॥
कोउ कर चौंर मोरछल गहियाँ।
अप-अपनी सब सोंज सजहियाँ॥
वर विहार वै सम बिहरहियाँ।
श्रीहरिप्रिया प्रमोद प्रदहियाँ॥३१॥

भावार्थ—

इस प्रकार सखियों को सुख-प्रदान करते हुए श्रीप्रिय प्रियतम मोहन-महल से निकलकर भिन्न-भिन्न कुञ्जों में विहा करते हैं—

रसिकदम्पती श्रीयुगलकिशोर परस्पर गलबाँही दि विभिन्न कुंजों में विहार कर रहे हैं। उनकी मराल जैसी चा

बड़ी सुहावनी लग रही है। यद्यपि वे परस्पर गाढ़ालिंगन किये हुए हैं तथापि प्रेमासक्ति के कारण श्रीलालजी श्रीप्रियाजी की भूमि पर पड़ती हुई परछाईं का बंक चितवन से विलोकन करते हुए मानो वृन्दावन-भूमि को बड़भागिनी बताते हैं। उन श्री रसिकदम्पती के चारों ओर सहचरियाँ शोभायमान लग रही हैं। वे बड़ी चाह से श्रीयुगलवर के मुखारविन्दों के रुख को पुनः पुनः देख रही हैं। उनमें से कोई सखी चँवर ढुरा रही है तो कोई मोरछल लिये हुए है। सभी सखियाँ अपनी-अपनी सेवा की सामग्री सम्हाले हुये हैं। इस प्रकार दोनों सम वयस्क कुंज-विहार करते हुए श्रीहरिप्रिया समेत सभी सखियों का आनन्द-प्रमोद बढ़ा रहे हैं ॥३१॥

दोहा—

रंगद रसदादिकन मन, सहज करत संचार।
कुंजबिहारीलाल यों, बिहरत कुंजबिहार ॥

पद— राग आसावरी

कुंजबिहारी कुंजबिहारिनि कुंजबिहार बिहारें री।
रंगद रसद रहसि वसुदादिक,
रमत सुरुचि अनुसारें री।
अमृत कुंज कौ अमृत लै लै,
पी पी प्रान प्रतिपारें री ॥

फल कल चल दल थल विथलनि,
में श्री हरिप्रिया संचारें री ।।३२।।

भावार्थ—

श्रीप्रिया-प्रियतम कुंज-प्रति-कुंज में विहार कर रहे हैं। ये कुंजें आठ प्रकार की हैं। श्रीहरिप्रिया सहचरी कहती हैं—

श्रीकुञ्जविहारी-विहारिणी कुञ्जविहार करते हुए नाना कुञ्जों का अवलोकन कर रहे हैं। कभी तो वे कंचन-मणि कुञ्ज में और कभी मर्कत-मणि कुञ्ज में विहार करते हुए रहस्य कुञ्ज में पहुँचकर रस भरी बातें करते हैं, तो कभी केलि-कुञ्ज में पहुँचकर नाना भाँति से क्रीड़ा करते हैं। केलि-श्रम का निवारण करने के लिये वे अमृत-कुञ्ज में पहुँचकर अमृत-रस का विविध-भाँति से पान करते हैं। वे कभी फल-कल कुञ्ज में, कभी चल-दल कुञ्ज में तो कभी थल-विथलनि-कुञ्ज में विहार करते हुये परस्पर रुचि-अनुसार प्रेम-रस का संचार करते हुए अत्यन्त शोभायमान लगते हैं।

विशेष भाव—

श्रीप्रिया-प्रियतम के उक्त कुञ्जविहार का दर्शन रसिक-जन उनके नित्यविलास में ही करते हैं। किंवा प्रिया-प्रियतम का पारस्परिक अङ्ग-प्रत्यङ्गों में विलास ही उनका कुञ्जविहार है। अर्थात् कभी प्रियतम श्यामसुन्दर श्रीप्रियाजी की विग्रह-रूपी कञ्चनमयी कुञ्ज (रंग-कुञ्ज) में तो कभी श्रीप्रियाजी

प्रियतम की विग्रह-रूपी मर्कतमणि कुञ्ज (रसद-कुञ्ज) में विहार करती हैं। कभी दोनों रति-पति-कुञ्ज (रहसि-कुञ्ज) में विलास करते हैं। कभी परस्पर देह-रूपी पृथ्वी पर (वसुदा-कुंज में) रुचि अनुसार रमण करते हैं। कभी परस्पर अधर-सुधारस (अमृत-कुंज) का पान करते हुए अपने-अपने प्राणों का पोषण करते हैं। कभी हृदय (फलकल-कुंज) में ही आनन्द विभोर रहते हैं, तो कभी उदर-रूपी (चलदल) कुंज में विहार करते हैं। कभी अङ्ग-प्रत्यङ्गों की सीमारूपी (थल-विथलनि) कुंज में बड़ी कठिनाई से विहार करते हैं। गाढ़-आलिंगन में किसी कारण से व्यवधान पड़ना ही थल-विथलनि-कुंज है। इस प्रकार श्रीप्रिया-प्रियतम निकुंज-विहार करते हुए अन्तरंगा सखियों को आनन्द-विभोर कर रहे हैं ।।३२।।

तृतीय-याम-राज-भोग-आरती के पद
(पूर्वाह्न प्रातः ८.२४ से १०.४८ तक)

दोहा—

विधि पूर्वक आदर सुरुचि, आरोगन रस पुंज।
हितू सखिनि के हेत करि, आये भोजन कुंज ।।

पद— राग वृन्दावनी सारंग

भोजन कुंज में आये दोऊ भोजन करन सुहाये री।
हितू सहेली हित चित अनुसरि,
करि आदर पधराये री ।।

विधि पूर्वक बैठे आसन पर,
अंग अंग सचुपाये री।
श्रीहरिप्रिया आरोगत रुचिसों,
विविध भोग मन भाये री ।।३३।।

भावार्थ—

इस प्रकार कुंजविहार कर श्रीप्रिया-प्रियतम राज-भोग आरोगने के लिये भोजन-कुंज में पधारते हैं। श्रीहितु सहचरी ने श्रीयुगलकिशोर को प्रेम-रुचि-अनुसार आदरपूर्वक आसन पर विराजमान कराया। वे दोनों एक ही आसन पर अंग-से-अंग मिलाकर बैठे हुए अपूर्व सुख प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही श्रीहरिप्रिया सहचरी द्वारा परोसे गये विविध प्रकार के व्यंजनों को रुचि-अनुसार आरोगते हुए अत्यन्त शोभायमान लग रहे हैं।।३३।।

दोहा—

सामा सजि सब सहचरि, परसत परम रसाल।
निज-निज रुचि भोजन करत, दोउ लाड़िलीलाल।।

पद— राग सारंग

भोजन करत लाड़िली लाल।
रतन जटित कंचन चौकी पर,
आनि धरचौ सहचरि भरि थाल।
छप्पन भोग छतीसों षटरस,

लेह्य चोष्य भछि भोज्य रसाल ।
जैंवत जाहि सराहि सरस अति,
परसत रंग रंगीलो बाल ॥
जे जे बिंजन कर पलवनि ते,
छुवति छोबीलो छई छबि जाल ।
ते ते बिंजन ताहि ठौर ते,
लेत छबीलौ होत निहाल ॥
इहि विधि राजभोग आरोगत,
सुख संभोगत नैंन विशाल ।
श्री हरिप्रिया परस्पर दोऊ,
परम प्रवीन प्रेम प्रतिपाल ॥३४॥

भावार्थ —

राजभोग आरोगते हुए श्रीप्रिया-प्रियतम अत्यन्त शोभायमान लग रहे हैं । श्रीहरिप्रिया सहचरी कहती हैं—

सहचरियों ने रत्न-जटित कञ्चन-चौकी पर कञ्चन-थाल में भोजन की विविध सामग्री सजाकर रखी है । श्रीलाड़िलीलाल भोग आरोग रहे हैं । भोग-सामग्री में छप्पन प्रकार के भोज्य पदार्थ, छत्तीस प्रकार के व्यञ्जन, छः प्रकार के रस इस प्रकार लेह्य, चोष्य, भक्ष्य और भोज्य आदि सभी प्रकार की सामग्री अलग-अलग रखी हुई है। रसिकदम्पती भोग

आरोगते हुए विविध प्रकार से भोज्य-सामग्री की प्रशंसा कर रहे हैं। रंग-रँगीली सहचरियाँ रुचि-अनुसार सामग्री ला-लाकर परोस रही हैं। छवि की जाल स्वरूपा, परम छबीली श्रीप्रियाजी जिन-जिन व्यञ्जनों का स्वकर-कमलों से स्पर्श करती हैं, छैल-छबीले श्रीलालजी उन सभी व्यञ्जनों को उठा-उठाकर श्रीप्रियाजी को अरुगवा कर स्वयं आरोगते हुए अपने को सफल मनोरथ मानते हैं। इस प्रकार विशाल नेत्रों वाले श्रीलाड़िली-लाल राजभोग आरोगते हुए परम सुख प्राप्त कर रहे हैं। वस्तुतः ये दोनों परस्पर प्रेम-प्रति-पालन में परम प्रवीण हैं ॥३४॥

दोहा—

अचवन करि श्री हरिप्रिया, बीरी मुख में लीनि।
हित प्रमोद भरि मोद सों, तिहि छिन आरति कीनि॥

पद— राग सारंग

अचवन करि आरोगे बीरी।
हित प्रमोदिका आरति कीरी॥
निरखि निरखि छबि नैनन नीरी।
भई सखियनकी अँखियाँ सीरी॥
मुदित महामन मोद मतीरी।
जै जै उचरति धरत न धीरी॥
श्री हरिप्रिया जोरी नवलीरी।
अलबेली अरु लाड़लड़ोरी॥३५॥

भावार्थ—

राजभोग के पश्चात् आचमन कर श्रीप्रिया-प्रियतम सुगन्धित बीरी (ताम्बूल) आरोगते हैं—

श्रीयुगलकिशोर के आचमन के बाद बीरी आरोग लेने पर श्रीहितु सहचरीजी ने उनकी आरती उतारी। श्रीप्रिया-प्रियतम की छवि का अत्यन्त निकट से अवलोकन कर सखियों के नेत्र शीतल हो जाते हैं। उनका तन-मन मोद से पुलकित हो रहा है। आनन्दातिरेक से वे श्रीयुगलवर की जय-जयकार कर रही हैं। प्रेम से पुलकित वे सखियाँ बावली-सी हो उठी हैं। भला क्यों न हों ? श्रीहरिप्रिया की यह जोड़ी अत्यन्त अलबेली, नवेली और लाड़लड़ीली जो ठहरी ! ॥३५॥

दोहा—

पीवत पानी वारि के, जुगलचंद छबि देखि।
अलकलड़े सुकुंवार जै, कहि कहि बचन विशेखि॥

पद— राग सारंग

जै जै अलकलड़े सुकुँवार।
जै जै नित्यकिशोरी जोरी जीवनि प्रान अधार॥
जै जै मोहन की उरमाला जै राधा उरहार।
जै जै श्रीहरिप्रिया जुगल पर पीवत पानी वार॥३६

भावार्थ—

श्रीयुगलकिशोर-किशोरी की छवि निरख सखियाँ उनके ऊपर जल फेर कर जल-पान कर रही हैं—

अलक लड़ैती सुकुमारी श्रीराधा तथा अलक लड़ैती सुकुमार श्रीश्यामसुन्दर की सदा ही जय हो ! यह नित्यकिशोर-किशोरी की जोड़ी ही हमारे प्राणों के लिए एकमात्र आधार है। श्रीराधा किशोरी के गले के हार स्वरूप मनमोहन श्री श्यामसुन्दर की जय हो ! तथा प्रियतम मोहन के उर की माल-स्वरूपा श्रीराधिका किशोरी की सदा ही जय हो !! इस प्रकार जय-जय का मधुर शब्दोच्चारण कर श्रीहरिप्रिया सहचरी अलबेले श्रीयुगलकिशोर पर जल फेर कर उसका पान करती हैं ।।३६।।

दोहा—

चले अंस भुज दीनि दोउ, करी हंस गति हीन ।
सुख आसन रंग भीनि बनि, बैठे परम प्रवीन ।।

पद— राग सारग

चले दोउ अंसनि भुज दीनें ।
चाल मराल करी गति हीनें ।।
श्रमित जानि प्रीतम रस लीनें ।
मुकट छाँह प्यारी पर कीनें ।।
बैठे सुख आसन रंग भीनें ।
श्रीहरिप्रिया दोउ परम प्रवीनें ।।३७।।

भावार्थ—

राजभोग-शृङ्गार-आरती के उपरान्त श्रीप्रिया-प्रियत

शयन करने के लिए शयन-कुञ्ज में पधारते हैं। उस समय की शोभा का वर्णन करती हुई श्रीहरिप्रिया सहचरी कहती हैं—

राज-भोग-आरती के पश्चात् श्रीप्रिया-प्रियतम परस्पर गलबाँही दिये मंथर-गति से शयन-कुञ्ज की ओर बढ़े-चले जा रहे हैं। उस समय की उनकी गति मराल-गति को भी लज्जित कर रही थी। मार्ग में धूपादि से उन्हें कष्ट न हो, इसलिये सखियाँ उन दोनों पर छत्रादि से छाया किये हुए हैं। तब भी सुकुमारी श्रीप्रियाजी को मार्ग में अत्यन्त श्रमित जान, प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर सेवा-सुख प्राप्ति के भाव से श्रीप्रियाजी पर अपने मुकुट की छाया करते चल रहे हैं! शयन-कुञ्ज में पहुँच कर परम प्रवीण श्रीकिशोर-किशोरी बड़े अनुराग-भाव से सुख-सेज पर आसीन हुए ॥३७॥

* अनुरागिनि सुरंगांगा मध्याभास *

दोहा—

मध्यकाल दिन जानि के, उन्मादनि उन्मादि।
सब सनमुख ह्वै रुख गहें, कहें जै नमो आदि॥

स्तोत्र—   राग सारंग

जै नमो राधा रसिकिनी।
जै नमो मृदु मधु मुसिकिनी॥
जै नमो प्रीतम वल्लभा।
जै नमो प्रानन सुल्लभा॥

जै नमो पिय मन रंजनी ।
जै नमो बिरह विभंजनी ॥
जै नमो प्रेम पयोधिनी ।
जै नमो रति रस बोधिनी ॥
जै नमो सब सुख सागरी ।
जै नमो सब गुन आगरी ॥
जै नमो अद्भुत आननी ।
जै नमो मन हर माननी ॥
जै नमो चंदप्रभा हरा ।
जै नमो प्रेमा परपरा ॥
जय नमो कोकिल कलरवा ।
जय नमो भव भंजनि भवा ॥
जय नमो बीरी चर्बिता ।
जय नमो गुननिधि गर्बिता ॥
जय नमो अधर प्रवालनी ।
जय नमो रदन सुढालनी ॥
जय नमो नासा चटकनी ।
जय नमो पिय मन अटकनी ॥
जय नमो नकबेसरि धरा ।

जय नमो प्रीतम मन हरा ॥
जय नमो नैन विसालिनी ।
जय नमो रूप रसालिनी ॥
जय नमो अंजन अंजिता ।
जय नमो खंजन गंजिता ॥
जय नमो ईछन आतुरा ।
जय नमो चितवनि चातुरा ॥
जय नमो भोहें सोहनी ।
जय नमो पिय मन मोहनी ॥
जय नमो श्रुति ताटंकनी ।
जय नमो अलकनि बंकनि ॥
जय नमो आड ललाटिका ।
जय नमो दिव्य सुहाटिका ॥
जय नमो सीस सुफूलनी ।
जय नमो नील दुकूलनी ॥
जय नमो सुभ सीमंतिनी ।
जय नमो रस बरसंतिनी ॥
जय नमो सुख सरसंतनी ।

जय नमो सुभ दरसंतनी ॥

जय नमो गण्ड उदारनी ।
जय नमो चिबुक सुचारनी ॥
जय नमो कंठ अदूषना ।
जय नमो जगमग भूषना ॥
जय नमो कंचुकि कस बनी ।
जय नमो नवरंग रस सनी ॥
जय नमो उरज सुढारनी ।
जय नमो मणिगण हारिनी ॥
जय नमो मुक्ता दामिनी ।
जय नमो अति अभिरामनी ॥
जय नमो उदर सुबेसनी ।
जय नमो नाभि सुदेसनी ॥
जय नमो सुँदरि ग्रीवनी ।
जय नमो सोभा सींवनी ॥
जय नमो बाहु बिचित्रनी ।
जय नमो परम पवित्रनी ॥
जय नमो चूरी चित्रनी ।
जय नमो मोहन मित्रनी ॥
जय नमो कंकन कंचना ।

जय नमो महा रस संचना ॥
जय नमो पहुँचि प्रभाउका ।
जय नमो अगनित भाउका ॥
जय नमो हरिकर पानी ।
जय नमो रत्न विधाननी ॥
जय नमो मणि मुद्रावली ।
जय नमो नग हीरावली ॥
जय नमो नख चंद्रावली ।
जय नमो परम प्रभावली ॥
जय नमो करतल कलितनी ।
जय नमो रङ्ग सुललितनी ॥
जय नमो कृस कटि राजनी ।
जय नमो किंकिनि बाजिनी ॥
जय नमो पृथुल नितंबिनी ।
जय नमो मन अवलंबिनी ॥
जय नमो जंघ सुकेलनी ।
जय नमो प्रीतम झेलिनी ॥
जय नमो जानु सुहेतकी ।

जय नमो पिंडुरी केतकी ॥

जय नमो जेहरि हेमकी ।
जय नमो मूरति प्रेमकी ।।
जय नमो गुल्फ सुसाजिता ।
जय नमो नूपुर बाजिता ।।
जय नमो एडी अद्भुता ।
जय नमो रंग सु संयुता ।।
जय नमो पद पद पानभा ।
जय नमो सब सुख दानभा ।।
जय नमो अंगुरी चारुभा ।
जय नमो सुखद सुढारुभा ।।
जय नमो हँसक अनवटा ।
जय नमो सोहत सुभ घटा ।।
जय नमो नखमणि विसदनी ।
जय नमो पद तल रसदनी ।।
जय नमो कंता कामिनी ।
जय नमो नवघन दामिनी ।।
जय नमो छबि चंपकतनी ।
जय नमो सहजहिं सुखसनी ।।

जय नमो गौरांगी प्रिया ।

जय नमो श्यामा शुभ श्रिया ॥
जय नमो रास बिलासनी ।
जय नमो रहसि हुलासनी ॥
जय नमो प्रेम प्रकासनी ।
जय नमो नेह निवासनी ॥
जय नमो रंग बिहारिनी ।
जय नमो पिय-हिय हारिनी ॥
जय नमो पिय उर धारनी ।
जय नमो रस विस्तारिनी ॥
जय नमो अखिलानंदनी ।
जय नमो बल्लभ-बंदनी ॥
जय नमो पिय मन फंदनी ।
जय नमो परमाकंदनी ॥
जय नमो जीवनि जीयकी ।
जय नमो प्रेमा पीयकी ॥
जय नमो प्रेम प्रदायका ।
जय नमो नागरि नायका ॥
जय नमो रति रमनीयका ।
जय नमों अति कमनीयका ॥

जय नमों प्रगलभ भक्तिदा ।

जय नमों तुरिय विरक्तिदा ॥
जय नमों निगमागम सदा।
जय नमों रसिकानंददा ॥
जय नमों राधा नामिनी।
जय नमों हरिप्रिया स्वामिनी ॥३८॥

भावार्थ—

प्रस्तुत स्तोत्र में रसिकसिरमौर-प्रियतम श्यामसुन्दर की प्राणवल्लभा परम रसिकिनी श्रीप्रियाजी की विरदावली (यशोगान) करती हुई श्रीहरिप्रिया सहचरीजी कहती हैं—

परम रसिकिनी मंद-मृदुल मुस्कान से युक्त, प्रियतम-वल्लभा, शरणागत जन को सहज में ही सुलभ होने वाली, प्रियतम के अतृप्ति जन्य विरह को नष्ट कर उनके मन का रञ्जन करने वाली श्रीराधिकाकिशोरी की जय हो! प्रेम-पयोधिनी, रति-रस-बोधिनी, सर्व सुखों की सागर-स्वरूपा, सर्व-गुण-आगरी, प्रियतम के मन का हरण करने वाली अद्भुत मुख-शोभा से युक्त, चन्द्र-कान्ति को भी हतप्रभ करने वाली, प्रेम की परम्परा का निर्वाह करने वाली, कोकिल-कल-बैनी, भव-भय भंजनी श्रीप्रियाजी की जय हो! वीरी-पान से युक्त शोभावाली सर्व गुणों की निधिरूपा, प्रेम-वैशिष्टच के कारण परम गर्वीली प्रवाल की अरुणिमा से युक्त अधरों वाली, सुन्दर एवं समान दन्त-पंक्ति की शोभा से युक्त, चटक-पक्षी (गोरैया) की-सी सुन्द

नासिका वाली, प्रिय के मन का आकर्षण करने वाली, कमल सदृश-विशाल नेत्रों वाली, रूप-रस में अद्वितीया, सुन्दर अञ्जन से रञ्जित नेत्रों से खञ्जन-पक्षी के चपल नेत्रों का भी गञ्जन करने वाली, अपनी चतुर एवं आतुर चितवन से श्रीलालजी की ओर देखने वाली, सुन्दर भौंहों से प्रियतम के मन का आकर्षण करने वाली श्रीप्रियाजी की जय हो !!! जिनकी वक्र अलकावली है, कानों में सुन्दर झूमके, मस्तक पर आड का टीका तथा शीशफूल शोभायमान है, नीली साड़ी धारण करने वाली, सौभाग्य सीमतिनी, रस का वर्षण करने वाली श्रीलड़ैतीजी की जय हो !!! अपने शुभ-दर्शन से सुख का संचार करने वाली, उदार कपोलों एवं सुन्दर ठोड़ी वाली, प्रकृति-दोष-विरहित कण्ठ में जगमगाते आभूषण धारण करने वाली, श्रीलालजी को नित्य-नवीन रस प्रदान करने वाली, कंचुकी जिनके सुढार वक्ष:स्थल पर कसी हुई है, जिनके उन्नत उरोजों पर मणियों व मोतियों के हार शोभित हैं, सुन्दर पोशाक से सुसज्जित जिनका उदर है तथा जिनकी गम्भीर नाभि है ऐसी श्रीप्रियाजी की सदा ही जय हो !! सुन्दर-ग्रीवा वाली, शोभा की सीमा, परम-पवित्रा, विचित्र-बाहुनी, जिनके कर-कमलों में रंग-विरंगी चूड़ियाँ, स्वर्ण-कंकण तथा कलाई में पहुँची शोभायमान हैं, अनन्त भावों से महारस का सिञ्चन करने वाली, प्रियतम की अंतरंगा होने के कारण जिनका हस्तकमल सदैव प्रियतम के हाथ में रहता है, जो मणि-माणिक्य की खानि हैं तथा जो

हीरा आदि नगों से जटित मुद्रिकाएँ धारण करने वाली हैं; उन श्रीप्रियाजी की जय हो !! नख-चन्द्र-छटा से युक्त परम प्रभाव वाली, सुललित मेंहदी रञ्जित हथेलियों वाली, पृथुल नितंबिनी, बजती हुई किंकणी से युक्त क्षीण कटि वाली, प्रियतम के मन का मोहन करने वाली, प्रियतम को झेलने वाली कदली के समान सुन्दर जाँघों वाली, गोल-गोल जानुओं वाली, केतकी के सदृश पिंडुरियों वाली, पैरों में स्वर्ण का जेहरि आभूषण धारण करने वाली, प्रेम की साक्षात् मूर्ति, जिनके गुल्फों (टखनों) से नूपुरों की ध्वनि गूँज रही हैं, महावर से युक्त जिनकी सुन्दर एड़ियाँ हैं, चरण-फूलों की कान्ति से युक्त सुढार अँगुलियों वाली, जिनमें धारण किये गए बिछुये बज रहे हैं, जिनकी चरण-नख रूपी मणियाँ चमक रही हैं, अत्यन्त ही सुकुमार रस भरे जिनके चरण-तल हैं, ऐसी कंता-कामिनी, नव-घन-दामिनी, चम्पकतनी, किशोरावस्था वाली, गौरांगी, मंगलमयी शोभा से युक्त, नित्यरासविलासिनी, निकुञ्ज-रसोल्लासिनी, परम-प्रेम-प्रकाशिनी, नित्य-नेह-निवासिनी, रास-रंग विहारिणी, पिय-हिय-हारिणी, पिय-उर-धारिणी, रस-विस्तारिणी, अखिलानंददायिनी, वल्लभवंदनी, प्रियतम को प्रेम-पाश में बांधने वाली, श्रीलालजी की परम जीवनि स्वरूपा, प्रिय के साथ ही रमण करने वाली प्रियतमा, प्रेम-प्रदान करने में परम चतुरा, कमनीय अङ्गों वाली, परा-भक्ति-प्रदात्री, समाधि अवस्था से भी वैराग्य को देने वाली, वेद भी जिनके तत्त्व को

नहीं जानते, जो रसिक-चक्र-चूड़ामणि श्रीश्यामसुन्दर को आनन्द प्रदान करने वाली हैं, जिनका नाम श्रीराधा है तथा जो श्री हरिप्रिया सहचरीजू की स्वामिनी हैं ऐसी श्रीराधिका किशोरीजू की सदा ही जय हो ! जय हो !! जय हो !!! ॥३८॥

दोहा—

श्रीहरिप्रिया स्वामिनी प्रणमि, पुनि प्रणमों प्रियाप्रान ।
कमल नैन श्रीकृष्ण कहि, बरनत बिबिध बिधान ॥

स्तोत्र— राग सारंग

जै श्रीकृष्ण कमलदल लोचन,
दुख मोचनि मृगलोचनि राधा ।
जै श्रीकृष्ण श्यामघन सुंदर,
दिव्य छटा तन गोरी राधा ॥
जै श्रीकृष्ण रसीलौ नागर,
रसिक रसीली नागरि राधा ।
जै श्रीकृष्ण छबीलौ दूलह,
नवल छबीली दुलहिनि राधा ॥
जै श्रीकृष्ण मनोहर मूरति,
परम मनोहर मूरति राधा ।
जै श्रीकृष्ण सदा सुखसागर,
सहज सदा सुखसिंधुनि राधा ॥

जै श्रीकृष्ण रधिकाबल्लभ,
कृष्णबल्लभा रसिकिनि राधा।
जै श्रीकृष्ण प्रिया मनमोहन,
प्रान प्रिया मनमोहनि राधा॥
जै श्रीकृष्ण चारु चंद्रानन,
सुधासदन ससि बदनी राधा।
जै श्रीकृष्ण पदम परिपूरन,
पूरन परम पदमनी राधा॥
जै श्रीकृष्ण तमाल तरुन छबि,
कनक लता छबि छाजति राधा।
जै श्रीकृष्ण मीन मन मानहु,
निरमल जल जनु जीवनि राधा॥
जै श्रीकृष्ण नित्य नवरंगी,
नवरंगनि रंगभीनी राधा।
जै श्रीकृष्ण सुकोमल सीवां,
अति सुकुंवारी सीवां राधा॥
जै श्रीकृष्ण अमित गुण आगर,
अति अद्भुत गुन आगरि राधा।

जै श्रीकृष्ण विशाल विभाकर,
रूप रसाल प्रभाकर राधा ।।
जै श्रीकृष्ण सुभग सुभ सुंदर,
सरस सुभग सुभ सुंदरि राधा ।
जै श्रीकृष्ण विलास विसारद,
विसद विलास विच्छनि राधा ।।
जै श्रीकृष्ण दिव्यदुति कंद्रप,
कोटि दिव्य रति राजति राधा ।
जै श्रीकृष्ण किसोर नित्य नव,
नित्य नवीन किसोरी राधा ।।
जै श्रीकृष्ण नीलमणि आभा,
कंचनमणि आभा अति राधा ।
जै श्रीकृष्ण लाड़िलौ प्रीतम,
प्यारी प्रिया लाड़िली राधा ।।
जै श्रीकृष्ण सिरोमनि सर्वस,
सर्व सिरोमनि सुंदरि राधा ।।
जै श्रीकृष्ण अखिल परमापर,
परमापर प्रानेसा राधा ।

जै श्रीकृष्ण कलपतरु तरवर,
तरतम कलप तरोवरि राधा ॥
जै श्रीकृष्ण हरे हरि स्वामी,
श्रीहरिप्रिया स्वामिनी राधा ॥३६॥

भावार्थ—

प्रस्तुत स्तोत्र में श्रीप्रियाजी के प्राण-सर्वस्व श्रीलालजी की जय बोलती हुई सखियाँ रसिकदम्पति श्रीश्यामाश्याम युगल का यशोगान करती हुई कहती हैं—

कमल-दल-लोचन श्रीकृष्ण साथ उनके अतृप्ति-जन्य विरह का मोचन करने वाली मृग-नयनी श्रीराधा किशोरी की जय हो ! श्यामघन स्वरूप श्रीकृष्ण तथा घन की विद्युत-छटा के रूप में गौर वर्ण के दिव्य स्वरूप से युक्त श्रीराधा की जय हो ! रसिक शिरोमणि श्रीकृष्ण तथा रसिक रसीली-नागरी श्रीराधा की जय हो ! मन का मोहन करने वाले छैल-छवीले-दूलह श्रीकृष्ण तथा मनोहर मूर्ति छीवीली दुलहिन श्रीराधा की जय हो ! सदा-सर्वदा-सुख-सागर-स्वरूप श्रीराधिकावल्लभ श्रीकृष्ण और सदा स्वाभाविक सुख-सिन्धु-स्वरूपिणी, श्रीकृष्ण-वल्लभा श्रीराधा की जय हो ! चन्द्रमा से भी सुन्दर मुखारविन्द के कारण श्रीप्रियाजी के मन का मोहन करने वाले पूर्ण पद्म श्रीकृष्ण तथा श्रीकृष्ण के मन का मोहन करने वाली पूर्ण पद्मिनी, अमृत-छवि, चन्द्रमुखी श्रीराधा की जय हो ! तमाल

वृक्ष की छवि-सदृश श्रीकृष्ण तथा स्वर्णलता की छवि के समान श्रीराधा की जय हो ! यदि मोहन मणि के समान मन वाले हैं तो श्रीराधा उनकी जीवनी-स्वरूप निर्मल जल सदृश हैं। कोमलता की सीमा, अमित गुणों की खानि श्रीकृष्ण तथा सौकुमार्य की सीमा, अद्भुत गुणों की खानि श्रीराधा की जय हो ! शुभ तथा सुन्दर सौभाग्य वाले, सूर्य-सदृश देदीप्यमान श्रीकृष्ण तथा सरस-शुभ-सौभाग्यवती, चन्द्रमा की भाँति प्रकाशमान श्रीराधा की जय हो ! नित्य कैशोर वय वाले, कोटि कामदेवों से भी अति दिव्य शोभा से युक्त श्रीकृष्ण तथा करोड़ों रतियों से भी सुन्दर नित्य नवलकिशोरी श्रीराधा की जय हो ! नील-मणि-ज्योति-स्वरूप, सर्व शिरोमणि परम लाड़ले श्रीकृष्ण तथा स्वर्ण-मणि-ज्योति-स्वरूपा सर्व शिरोमणि सुन्दरी, परम लाड़िली श्रीराधा की जय हो ! अखिल ब्रह्माण्डनायक पूर्ण परात्पर सर्वेश्वर श्रीकृष्ण तथा अखिलेश्वरेश्वरी, प्रियतम की प्राणाधिष्ठात्री सर्वेश्वरी श्री राधा की जय हो ! दिव्य कल्प-वृक्ष से भी श्रेष्ठतम श्रीकृष्ण तथा तर-तम प्रत्ययों से भी परे दिव्य कल्पवृक्ष-स्वरूपा श्रीराधा की जय हो ! भगवान् शिव और विष्णु के भी स्वामी श्रीकृष्ण तथा श्रीहरिप्रिया सहचरी की स्वामिनी श्रीराधाकिशोरी की सदा ही जय हो !!! ।।३९।।

दोहा—

मन मोहन मोहन महल, पौढे जाय प्रज्यंक ।

प्यारी सहचरी सब रहीं, प्यारी करत निसंक ।।

पद— राग हमीर

मोहन मोहनि मन रंजन ।
भुजा परस्पर अंसनि दीनें,
चलत हंस गति गंजन ॥
मोहन मंदिर महामनोहर,
करि प्रवेश सुख संजन ।
प्यारी सखी रही न्यारी जहाँ,
श्रीहरिप्रिया भय भंजन ॥४०

भावार्थ—

श्रीमोहन-मोहिनी परस्पर मन-रञ्जन करके ही तृप्त होते हैं। (यही कारण है कि इस समय) ये दोनों परस्पर गलबाँही दिये, मराल-गति को भी लज्जित करने वाली गति से झूमते-से चल रहे हैं। जो सहज में मन का मोहन करने वाला है, ऐसे महा-मनोहर मोहन-महल (रङ्ग-महल) में सुख का संयोजन व संचार करने वाले रसिकदम्पति ने प्रवेश किया। श्रीप्रिया-प्रियतम के नित्य-विहार में किसी प्रकार का व्यवधान न हो अतः उनके संकोच-भय के निवारणार्थ सखियों ने रङ्ग-महल में प्रवेश नहीं किया ॥४०॥

दोहा—

सुख सरसत बरसत रसें, रुचि तरंग नहिं पार ।
श्रीहरिप्रिया दोउ बिलसहीं, सुमन सेज साधार ॥

पद— राग हमीर

बिहरत सुमन सेज पर दोऊ।
अलबेले आनंद की मूरति,
और तहाँ नहिं कोऊ॥
प्यारी के बरनारबिंद को,
लेत बलैया लाल।
पुनि पुनि परम प्रसंसत प्रीतम,
प्रिया प्रेम प्रतिपाल॥
भरि अंकवारि कुंवारि कुंवरवर,
करत बिहार विनोद।
मदनकेलि रसमत्त मगन भये,
मन न समावत मोद॥
नेति नेति बचनामृत सुनि-सुनि,
हिय हिय बढत मनोज।
त्यों-त्यों अति रन धीर,
मिलावत अंसन अरुन सरोज॥
नूपुर मुखर किंकिनी कौ,
अति होत रुनझुनराव।
अमित अनंगन के अंगन में,

उपजत अगनित भाव ॥
सुख सरसावत रस बरसावत,
रुचि तरंग नहिं पार।
श्रीहरिप्रिया निज दासी निरखत,
लता ओट निरवार ॥४१॥

भावार्थ—

रङ्ग-महल की सुमन-सेज पर पौढ़े श्रीरसिकदम्पति नित्य-विलास-क्रीडा कर रहे हैं। आनन्द की मूर्ति अलबेले श्री प्रिया-प्रियतम के अतिरिक्त वहाँ और कोई नहीं हैं। प्रियतम श्रीकृष्ण श्रीप्रियाजी के मुखारविन्द की वलैया लेते हुए बार-बार उनके मुखकमल की प्रशंसा कर रहे हैं। श्रीप्रियाजी भी उन्हें अपने अधर-सुधा-रस का पान कराकर प्रियतम के प्रति अपने प्रेम को पुष्ट कर रही हैं। मदन-केलि-रस में उन्मत्त ये श्रीनागर-नागरी एक-दूसरे को अङ्क में भरकर विहार कर रहे हैं। इस समय का आनन्द इनके हृदय में समाता नहीं है। इस दिव्य केलि में जैसे-जैसे श्रीप्रियाजी के मुखारविन्द से नेति-नेति के वचनामृत प्रस्फुटित होते हैं, वैसे ही वैसे सुरति-रणधीर श्रीलालजी के हृदय में दिव्य काम का वेग बढ़ जाता है। वे श्रीप्रियाजी के लाल-कमल के समान सुन्दर चरण तलों को अपने अंसों से मिला रहे हैं। उस समय श्रीप्रियाजी के चरणों के नूपुर तथा कटि-किंकणी रुन-झुन-रुन-झुन कर बज उठती है।

उनके शब्दायमान होते ही कोटि-कोटि कामदेवों के अङ्ग-प्रत्यङ्गों में भी अगणित भाव प्रकट हो रहे हैं। इस प्रकार सुख के सार-समुद्र श्रीप्रिया-प्रियतम कामोद्दीपन की अवस्था में अपनी अनन्त-अनन्त इच्छा-रूपी तरङ्गों से सुख का संचार एवं रस का वर्षण कर रहे हैं। लता की ओट लेकर खड़ी हुईं निज परिकर की सखियाँ लता को हटा-हटाकर श्रीप्रिया-प्रियतम की दिव्य केलि का दर्शन कर आनन्द-विभोर हो रही हैं ॥४१॥

दोहा—

कहत परस्पर सहचरी, उर में भरी उछाहु।
निरखि-निरखि सुख या समै, लेहु नैनन कौ लाहु॥

पद— राग हमीर

नैनन कौ लाहौ लीजिये।
गोरी-श्याम सलौनी जोरी,
सुरस माधुरी पीजिये॥
छिन-छिन प्रति प्रमुदित चित,
चावहि निज भावहि में भीजिये।
श्रीहरिप्रिया निरखि तन मन धन,
लै न्यौछावर कीजिये॥४२॥

भावार्थ—

क्रीडा-विलास-रत श्रीप्रिया-प्रियतम की रूप माधुरी का रस-पान कर सखियाँ प्रमुदित हो रही हैं। श्रीहरिप्रिया सहचरीजी कहती हैं—

अरी सखियो ! गौर-श्याम की इस सलोनी जोड़ी की सुरस-माधुरी का अपने नेत्र-संपुटों से पान कर इन नेत्रों को सफल मनोरथ कर लो ! क्षण-क्षण में बढ़ती हुई दर्शन की चाव को प्रमुदित चित्त से निज भाव में भर लो ! अर्थात् नित्य-विहार-दर्शन की उत्कण्ठा आज पूरी हो रही है । भाव-विभोर हो जाने का अवसर तो आज ही प्राप्त हुआ है ! अतः अपने मन की अभिलाषा को आज पूरी कर लो ! श्रीप्रिया-प्रियतम की इस दिव्य केलि को (निकुञ्ज के झरोखों से) निरख-निरख कर अपना तन-मन-धन सर्वस्व इस जुगल-जोड़ी पर न्योछावर कर दो ॥४२॥

दोहा—

कोक कला कुल में कुशल, कल किसोर कमनीय।
मन मोहत हैं मोहनी, सूरति अति रमनीय ॥

पद— राग हमीर

मन मोहति मूरति अति मोहनी ।
सब सुख सींव सुरूप सिरोमनि,
सांवरि सूरति सोहिनी ॥
कोक कला कुल कल कमनीय,
किसोर कमल दृग जोहनी ।
श्रीहरिप्रिया प्रान जीवनि धन,
लाड़िलि ललचोहनी ॥४३॥

भावार्थ—

सुरति-क्रीडा-रत श्रीलालजी अपनी श्रीप्रियाजी को सुख प्रदान करते देख सखियाँ कह रही हैं—

प्रियतम श्यामसुन्दर की यह परम मनोहर मूर्ति श्रीप्रियाजी के मन का मोहन कर रही है। श्रीलालजी रसिक शिरोमणि तो हैं ही, स्वरूप शिरोमणि भी हैं। तभी तो अमित सुखों की खानि उनकी यह साँवली-सलोनी सूरत सुरति-विहार के समय परम सुहावन-मन-भावन लग रही है। कोक-कला के ज्ञाताओं में भी परम कमनीय श्रीलालजी के नेत्र-कमल सदैव श्रीप्रियाजी की ओर ही टकटकी लगाये रहते हैं। निश्चय ही श्रीप्रियाजी श्रीलालजी की प्राण-धन-जीवनी हैं, तभी तो उनके रूप-लावण्य के दर्शन की लालसा श्रीलालजी के मन में पुनः पुनः बढ़ रहा है ॥४३॥

दोहा—

कृष्णवल्लभा लाड़िली, राधावल्लभ लाल।
बसहु निरंतर हीय में, आनंद रूप रसाल ॥

पद— राग हमीर

जीवन धन राधावल्लभ लाल।
कृष्णवल्लभा रसिकिनि राधा,
वारिज बदनी बाल ॥

जुगल किसोर किसोरी जोरी,

गोरी श्याम तमाल ।
बसहु निरंतर हियें श्रीहरिप्रिया,
आनंद रूप रसाल ।।४४।।

भावार्थ—

सखियाँ दर्शन-सुख प्राप्त करती हुई पुनः कहती हैं—

परम रसिकिनी, श्रीकृष्णवल्लभा, वारिजवदनी किशोरी श्रीराधा तथा राधावल्लभ श्रीलालजी की यह जोड़ी ही हमारी प्राण-धन-स्वरूपा है। (हमारे मन की यही एक अभिलाषा है कि) युगलकिशोर-किशोरी की यह गौर-श्यामल जोड़ी, जो तमाल-कंचनवत परस्पर आवेष्टित रहती है, निरन्तर हमारे हृदयों में निवास करे ! सचमुच ही इन दोनों के श्रीविग्रह रूप-रस-आनन्द से भरे परम सुखदायी हैं ।।४४।।

दोहा—

अँग अँग आभा हरन मन, सब सुख सींव सुरूप ।
अति अलबेलीं निपटहीं, रँग रसभरी अनूप ।।

पद—

रँग रसभरी निपट अलबेली ।
लाड़लड़े की लाड़लड़ीली ।।
अंग अंग आभा मनहरनी ।
आलिंगन चुंबन आभरनी ।।

नवल नागरी नीरजनैनी ।
कोक कला कोविद पिकबैनी ।।
सब सुख सींव सुरूप अगाधा ।
श्रीहरिप्रिया स्वामिनी राधा ।।४५।।

भावार्थ—

प्रस्तुत पद में सखियाँ श्रीप्रियाजी का यशोगान कर रही हैं—

लाड़ले किशोर श्यामसुन्दर की लाड़लड़ीली श्रीप्रियाजी अत्यन्त अलबेली तथा अनुपम केलि-रस रंग से भरी हुई हैं। वे सर्व सुखों की सीमा तथा परम सुन्दरी हैं। उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गों की आभा सहज ही में प्रियतम के मन का हरण कर लेती है। तभी तो रसिक लालजी गाढ़-आलिगन कर उनके अङ्ग-प्रत्यङ्गों का चुम्बन करते हैं। इन चिह्नों से उनके सभी अङ्ग सदैव भरे रहते हैं। ये श्रीप्रियाजी नित्य नवीनी एवं परम नागरी हैं। कमल सरीखे नेत्र धारण करने वाली ये श्रीप्रियाजी कोक की सभी कलाओं में पारङ्गत हैं। आपकी कोयल के समान मधुर वाणी है। आपका स्वरूप समुद्र की तरह अगाध है। अर्थात् आपका स्वरूप समझना सहज नहीं है। सर्व सुखों की सीमा ये श्रीप्रियाजी ही श्रीहरिप्रिया सहचरीजी की एकमात्र स्वामिनी हैं ।।४५।।

दोहा—

चक्रवर्तिनी जोरि यह, जीवनि प्रान धनीय ।

श्री राधे चूडामनी, रसिक-मुकुटमनि पीय ।।

पद—

रसिक मनि मुकुट श्रीराधे चूड़ामनी।
करत हैं केलि दोउ कंठ भुज मेलिकें,
जोरि चक्रवर्तिनी कनक मर्कततनी॥
मधुर मृदु हँसनि में जगमग दसन,
लसनि अनुराग बस सरस रस बरसनी।
परम परवीन रहे लीन रति-रंग में,
हितू श्रीहरिप्रिया प्रानजीवनि धनी॥४६॥

भावार्थ—

श्रीयुगलकिशोर की विरदावली गाती हुई सखियाँ कहती हैं—

यदि श्रीप्रियाजी श्रीकृष्ण-नायिकाओं की चूड़ामणि हैं तो श्रीलालजी सब रसिकों (अवतारों) के मुकुटमणि हैं। रसिक-चक्र-शिरोमणि की यह जोड़ी अपने श्रीविग्रहों से स्वर्ण तथा नीलमणि की दिव्य आभा को विकीर्ण करती हुई, परस्पर गल-बाँही दिये लीला-विलास-रत है। मन्द-मृदु-मुसकान के कारण बिखरी हुई दन्तावली की दमक से सारा भवन जगमगा रहा है। अनुराग के वशीभूत होकर ये दोनों दिव्य-रस का वर्षण कर रहे हैं। नित्य-विहार-रस में परम प्रवीण रसिकदम्पति की यह जोड़ी श्रीहितुसहचरी तथा श्रीहरिप्रिया सहचरी की तो प्राण-धन-जीवनी ही है! ॥४६॥

दोहा—

यह सुख मुख कहत न बनें, जो सुख सजवति सेज ।
पान अदन रस बदन कौ, देत लेत हियें हेज ।।

स्तोत्र— राग बरवा

यह सुख मुख कहत न बनि आवें ।
नैननि ही के द्वारनि लै लै,
हीयन माँहि बसावें ।।
अदन पान अरबिंद बदन-रस,
मदन सदन सरसावें ।
कमल-कमल प्रतिपालन कै-कै,
अति आनंद बढ़ावें ।।
रमत रहसि रस मन-मन मानें,
बितन बारि बरसावें ।
तहू चोंप चित बढ़त चौगुनी,
खेलत हूँ न अघावें ।।
घरीचारि दिन रह्यो जानिकें,
सहचरि आनि जगावें ।
श्रीहरिप्रिया सुखद सेज्या तें,
सुमनासन पधरावें ।।४७।।

भावार्थ—

श्रीरसिकदम्पति के रस-विलास का दर्शन कर सखियां आनन्द-विभोर हो रही हैं—

श्रीरसिकदम्पति के रस-विलास-दर्शन से जो सुख प्राप्त हो रहा है, मुख से उसका वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है। (यह सुख वर्णन के योग्य है भी नहीं) इस सुख को तो एकमात्र नेत्र-संपुटों के माध्यम से हृदय में ले जाकर बसा लेना चाहिये! देखो तो—रसिकदम्पति द्वारा चबाये गये ताम्बूल तथा अधरामृत के परस्पर पान से इनके अङ्ग-प्रत्यङ्गों में दिव्य काम का संचार हो रहा है। यही कारण है कि इनके मुख-कमल प्रभृति सभी अङ्ग परस्पर मिलकर एक हो गये हैं तथा आनन्द की वृद्धि भी कर रहे हैं। इस प्रकार अपने मन-माने ढङ्ग से रस-विलास विलसते हुए दिव्य-रस का वर्षण कर रहे हैं। फिर भी इस दिव्य केलि से इनकी तृप्ति नहीं होती वरन् चौगुनी तृषा बढ़ती जा रही है। इस रस-पान के लिए मानो परस्पर होड़ लगी हुई है। चार घड़ी दिन शेष रहने पर सखियाँ आकर श्रीयुगलकिशोर को जगाती हैं। वे उन्हें सुरत-सेज से उठाकर फूलों से सुसज्जित आसन पर विराजमान कराती हैं ॥४७॥

* अनुरागिनी गौरमुख मध्याभास *

पञ्चमयाम—उत्थापन-भोग के पद

(अपराह्न ३-२८ से ६ बजे तक)

दोहा—

जै जै आनंदकंदनी, श्रीहरिप्रिया किसोरि।
जै जै राधा रसिकिनी, रसिक बिहारी जोरि ॥

पद— राग दरबारी

जै जै राधा रसिकिनी,
रसिक बिहारी जोरी बनी ॥
जै जै स्यामा लाडिली,
मन मोहन मन चाडिली।
जै जै रूप उजागरी,
नित्य नवीना नागरी ॥
जै जै आनँद कंदनी,
जन जीवनि जग वंदनी ॥
जै जै सब सुख धामिनी,
श्रीहरिप्रिया जै स्वामिनी ॥४८॥

भावार्थ—

उत्थापन के समय श्रीप्रिया प्रियतम की विरदावली गाती हुई सखियाँ कहती हैं—

परम रसिकिनी श्रीप्रियाजी तथा श्रीरसिकविहारीलाल की जोड़ी की सदा ही जय हो! प्रियतम के मन को मोहन

कर उनके मन में चाह उत्पन्न करने वाली लाड़लड़ीली श्री

श्यामाजी की जय हो ! नित्य-नवल-किशोरी, देदीप्यमान मुखमंडल वाली, परम चतुरा श्रीप्रियाजी की जय हो !! जग-वन्दनीय श्रीलालजी की भी जो सदा-सर्वदा वन्दनीय हैं उन आनन्द की मूल-स्वरूपा श्रीलडैंतीजू की जय हो ! श्रीहरि-प्रिया सहचरीजो की स्वामिनी, सर्वं सुख-धाम-स्वरूपा प्यारी जू की सदा ही जय-जयकार हो !! ॥४८॥

दोहा—

उत्थापन के भोग की, विधिवत रचना बानि ॥
अरुणावति श्रीहरिप्रियें, निरखि-निरखि हियें आनि ।

पद— राग दरबारी

तर मेवा अरु विविध मिठाई ।
अरघ देइ सादर सुख सुंदरि,
सुंदर स्वरन थार भरि ल्याई ॥
सब सब रितु की सब सामग्री,
सुखमय सरस सखी सरसाई ।
आरोगत दोऊ अलबेले कहि न,
परत हित की हितवाई ॥
अरस परस गरसा मुख देत,
दिवावति दंपति रुचि उपजाई ।
अति रोचक अमृत अमृतावत,

बिच-बिच बहु विधि विहँसि बढाई ।।
मुदित महामन मंजरि सुंदरि,
सहचरि सखी सहेलि सुहाई ।
श्रीहरिप्रिया को निरखि-निरखि छबि,
हरखि-हरखि हियरें हुलसाई ।।४६।।

भावार्थ—

सखियाँ गायन-वादन के साथ श्रीप्रिया-प्रियतम का उत्थापन कर उनके समक्ष ऋतु-अनुसार फल-भोग की सामग्री रखती हैं।

श्रीप्रिया-प्रियतम की मंगल-कामना करती हुई सखियाँ उनके चरणारविन्दों से जल स्पर्श कर अर्घ्य देती हैं। तत्पश्चात् उनके समक्ष स्वर्ण की थाली में रसीले ताजा फल एवं विविध प्रकार की मिठाई भरकर रखती हैं। सखियाँ प्रत्येक ऋतु में होने वाली सर्व प्रकार की सुखमय-सरस सामग्री ला-लाकर परोस रही हैं। उनके हृदय श्रीयुगल के प्रेम-रस से संप्लावित हो रहे हैं। अनुपम स्नेह से भरे अलबेले श्रीप्रिया-प्रियतम भोग आरोग रहे हैं। इनका इस समय का पारस्परिक स्नेह-भाव कुछ कहने में नहीं आता। रसिकदम्पति एक-दूसरे के मुख में भोजन का ग्रास देते हुए अपनी-अपनी रुचि को बढ़ा रहे हैं। यद्यपि ये रुचिकर अमृतमय पदार्थों को आरोग रहे हैं,

तथापि बीच-बीच में इनकी परस्पर की मुसकान अमृत से भी

अधिक रुचि बढ़ाने वाली लग रही है। उत्थापन-भोग आरोगते समय श्रीयुगलकिशोर की शोभा का पुनः पुनः दर्शन कर सखी-सहेली-मञ्जरी-सुन्दरी आदि सभी प्रमुदित हो रही हैं। इन सभी का हृदय उल्लास से उच्छलित हो रहा है ॥४९॥

दोहा—

अचवन अति मुख-वास लै, दै गरबांह विसाल।
फूल सखी की फूलि में, चले फूलि दोउ लाल ॥

पद— राग दरबारी

फूल चले दोउ लाल बिहारी।
फूल सखी की फूल निहारी ॥
फूली संग सोहें सहचारी।
अप अपनी सब सोंज सँवारी ॥
कोउ कर ढुरवति चोंर सुढारी।
कोउ मोरछलि कोऊ बिजनारी ॥
कोउ कर लियें डबा कोउ झारी।
कोउ लियें सुकर मुकर मन हारी ॥
देखत देखत बन फुलवारी।
सुख आसन बैठे सुखकारी ॥
श्रीहरिप्रिया जोरी जीय जियारी।
प्रान-प्रीतमा पियहि पियारी ॥५०॥

उत्थापन-भोग आरोगने के पश्चात् आचमन कर, मुख में सुगन्धित बीरी लेकर परस्पर गलबाँही दिये श्रीरसिक-दम्पति वन-विहार के लिए पधारते हैं—

वन-विहार करते हुए श्रीप्रियालालजी ने प्रफुल्ल मन से (सर्व प्रथम) फूलसखी की फूलनि-कुञ्ज का दर्शन किया। उनके साथ सहचरियाँ अपनी-अपनी सेवा की सामग्री सजाये प्रसन्न चित्त से शोभायमान लग रही हैं। किसी सखी के हाथ में मोरछल है तो कोई सखी चँवर डुला रही है। कोई सखी पंखा लिए है, तो कोई पानदान, कोई इत्रदान, कोई झारी तो कोई अपने सुन्दर हाथों में मनोहर दर्पण लिये हुए है। इस प्रकार वन-फुलवारी की शोभा देखते हुए सबको आनन्द-प्रदान कर रसिकदम्पति सुख पूर्वक सिंहासन पर विराजमान हुए। प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर को तो अपनी प्राण-वल्लभा प्रियाजी ही सर्वाधिक प्रिय हैं, पर श्रीहरिप्रिया आदि सहचरी-जन के लिये तो ये दोनों ही प्राण-धन-जीवन हैं ॥५०॥

षष्ठयाम—सन्ध्या-आरती के पद

(समय—सायं ६ बजे से ८.२४ तक)

दोहा—

अंग अंग रस रंग में, रली अली अलबेलि।
आरति जानि दुहुन की, आरति करति सहेलि॥

पद— राग कल्याण

संध्या आरति करति सहेली।

स्यामा-स्याम गुन गर्व गहेली ॥
निरखि-निरखि छबि नैंन नवेली ।
अँग अँग रङ्ग रली अलबेली ॥
सोहति उर चौसर चंबेली ।
रस रञ्जन राजति रति रेली ॥
तरु सिंगार प्रेम की बेली ।
श्रीहरिप्रिया हरत मन हेली ॥५१॥

भावार्थ—

सखियाँ वन-विहार के पश्चात् सिंहासनासीन श्रीप्रिया-प्रियतम की सायंकालीन आरती उतारती हैं—

(रजनी का आगमन जान रसिकदम्पति सुरति-विलास के लिये अधीर हो उठते हैं। इनकी इस उतावली को लक्ष्य कर) सखियाँ इनके गुणों से गौरवान्वित हो, इनकी सन्ध्या आरती उतारती हैं। आरती के समय अलबेली, नवेली, रंगीली सखियाँ अनुराग रङ्ग से रञ्जित प्रिया-प्रियतम के अङ्ग-प्रत्यङ्गों को बार-बार निरख-निरख कर प्रमुदित हो रही हैं। इस समय श्रीप्रिया-प्रियतम परस्पर गलबाँही दिये परस्पर सटे हुये सिंहासन पर बैठे हैं। इन दोनों के उर पर चमेली का चार लड़ी का हार बड़ा ही शोभायमान लग रहा है। प्रेम की ऐसी सरस-केलि की मुद्रा में डूबे ये दोनों बड़े ही शोभायमान लग रहे हैं। परस्पर गाढ़-आलिंगन किये ये दोनों ऐसे लग रहे हैं

मानो शृङ्गार-रस-रूपी श्याम तमाल से प्रेम रूपी कञ्चन वेलि लिपटी हुई हो ! इनकी इस समय की यह छवि श्रीहरिप्रिया आदि सहचरियों के मन का सहज ही में हरण कर रही है ॥५१॥

दोहा—

पराभक्ति रतिवर्द्धिनी, स्यामा सब सुख दैनि ।
रसिक मुकुटमनि राधिके, जय नव नीरज नैनि ॥

स्तोत्र—　　राग कल्याण

जयति जय राधा रसिकमनि-मुकुटमनहरनी प्रिये ।
पराभक्ति प्रदायनी करि कृपा करुनानिधि प्रिये ॥
जयति गोरी नवकिसोरी सकल सुख सीमा श्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये॥
जयति रतिरस वर्द्धिनी अति अद्भुता सदया ह्रिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये ॥
जयति आनँद कंदनी जगबंदनी वर बदनिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये॥
जयति स्यामा अमित नामा वेदविधि निर्वाचिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये॥
जयति रासविलासिनी कल कला कोटि प्रकाशिये ।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये॥
जयति विविध विहार करनी रसिकरवनी सुभ धिये।

परा‌भक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति चंचल चारु लोचन दिवि दुकूला भरनिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति प्रेमा प्रेम सीमा कोकिला कल बैनिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति कंचन दिव्यअंगी नवल नीरज नैनिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति वल्लभवल्लभा आनंद कलभा तरुनिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति नागरि गुन उजागरि प्रानधनमन हरनिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति नौतम नित्य लीला नित्यधाम निवासिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति गुण माधुर्य भूपा सिद्धिरूपा शक्तिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति सुद्ध स्वभाव सोला स्यामला सुकुमारिये।
पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा करुणानिधि प्रिये।।
जयति जस जग प्रचुर परिकर,
श्रीहरिप्रिया जीवनि जिये।

पराभक्ति प्रदायिनी करि कृपा,
करुणानिधि प्रिये ।।५२।।

भावार्थ—

सन्ध्या-आरती के पश्चात् सखियाँ श्रीप्रिया-प्रियतम का स्तुति-गान करती हैं। प्रस्तुत स्तोत्र सर्वप्रथम श्रीप्रियाजी का स्तवन करती हुई सखियाँ कहती हैं—

रसिकशिरोमणि श्रीलालजी के मन का हरण करने वाली, सर्व सुखों की खानि, नव-कमलदलनयनी, रसिकलाल की भी मुकुट-मणि स्वरूपा श्रीश्यामाजी की जय हो ! हे परा-भक्ति प्रदायिनी, करुणानिधि प्रियाजी ! मुझ दीन-हीन पर कृपा करिये ! नवलकिशोरी, गौरांगी, रति-रस को बढ़ाने वाली, अद्भुत दया से युक्त हृदय वाली, श्रेष्ठ वदन वाली, आनंद-कन्दिनी, जगवन्दिनी श्रीश्यामाजी की जय हो ! अमित नाम धारण करने वाली, किंवा जिनके अमित नामों का आश्रय ग्रहण करके ही ब्रह्मा ने वेदों का प्रणयन किया है, ऐसी श्री प्रियाजी की जय हो ! करोड़ों मधुर कलाओं को प्रकाशित करने वाली, रास-बिलासिनी, विविध रति-विलास के द्वारा रसिकलाल को सुख प्रदान करने वाली, दिव्य वस्त्राभूषण धारण करने वाली, सुन्दर एवं चपल नेत्रों वाली श्रीश्यामाजू की जय हो ! प्रेम की साक्षात् मूर्ति, प्रेम की सीमा, कोकिल-कल-बैनी, कञ्चन के समान दिव्य अङ्ग वाली, नवल-कमल के समान नेत्रों वाली, प्रियतम की प्राणवल्लभा, आनन्द की

कलाओं को प्रकाशित करने वाली, नित्यकिशोरी श्रीप्रियाजी की जय हो ! परम चतुरा, अपने गुणों से प्राण-धन-स्वरूप लालजी के मन का हरण करने वाली, नित्य नई-नई लीलाओं का विकास करने वाली, नित्यधामवासिनी श्रीप्रियाजी की जय हो ! सर्व-माधुर्य गुणों की अधिष्ठात्री, सर्व शक्तियों को सिद्धि प्रदान करने वाली, विशुद्ध शील-स्वभाव वाली, परम सुकुमारी श्रीश्यामाजू की जय हो ! जिनका अनन्त परिकर है, जिनका यश सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है तथा जो श्रीहरिप्रिया सहचरी की जीवनी स्वरूपा हैं, ऐसी श्रीप्रियाजी की सदा ही जय हो !! श्रीहरिप्रिया सखीजी पुनः कहती हैं—'हे श्रीप्रिया जी ! (प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर की) पराभक्ति प्रदान करने वाली, करुणा की परमनिधि एकमात्र आप ही हैं। मुझे दीन-हीन पर कृपा करिये !! ।।५२।।

दोहा—

नव-नव रङ्गि त्रिभंगि जय, स्याम सुअंगी स्याम।
जै राधे जै हरिप्रिये, श्रीराधे सुखधाम ।।

स्तोत्र— राग कल्याण

जयराधे जयराधे राधे जयराधे जय श्रीराधे।
जैकृष्ण जैकृष्ण कृष्ण जैकृष्ण जय श्रीकृष्ण ।।
श्यामागोरी नित्यकिसोरी प्रीतम जोरीश्रीराधे।
रसिकरसीलो छैलछबीलो गुनगरबीली श्रीकृष्ण।।

रासविहारिनि रसविस्तारिनि,
पिय उर धारिनि श्रीराधे ।
नव-नवरङ्गी नवलत्रिभंगी स्यामसुअंगी श्रीकृष्ण ॥
प्रानपियारी रूपउज्यारी अति सुकुंवारी श्रीराधे ।
मैन मनोहर महामोद कर सुंदर वरतर श्रीकृष्ण ॥
सोभासैनी मोभा मैनी कोकिल बैनी श्रीराधे ।
कीरतिवंता कामिनिकंता श्रीभगवंता श्रीकृष्ण ॥
चंदाबदनी कुंदा रदनी सोभासदनी श्रीराधे ।
परमउदारा प्रभाअपारा अतिसुकुंवारा श्रीकृष्ण ।
हंसा-गमनी राजति रवनी क्रीडाकवनी श्रीराधे ।
रूपरसाला नैनविसाला परम कृपाला श्रीकृष्ण ॥
कंचनबेली रति-रसबेली अतिअलबेली श्रीराधे ।
सब सुखसागर सब गुन आगर,
रूप उजागर श्रीकृष्ण ॥
रवनीरम्या तर-तरतम्या गुण आगम्या श्रीराधे ।
धामनिवासी प्रभाप्रकासी सहजसुहासी श्रीकृष्ण ।
शक्त्याह्लादिनि अति प्रियवादनी,
उर उन्मादिनि श्रीराधे ।
अँग अँग टौंना सरस सलौंना,

सुभग सुठौंना श्रीकृष्ण ॥
राधानामिनि गुण अभिरामिनी,
श्रीहरिप्रिया स्वामिनि श्रीराधे।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि,
हरे हरे हरि श्रीकृष्ण ॥५३॥

भावार्थ—

सखियाँ श्रीप्रियाप्रियतम की सन्ध्याकालीन स्तुति कर रही हैं—

जिनके सुन्दर अङ्ग-प्रत्यङ्ग नये-नये अनुराग-रंग के भार के कारण ललित त्रिभङ्गी मुद्रा लिये हुए हैं, अर्थात् तीन ओर से कुछ झुक से गये हैं, ऐसे त्रिभङ्गीलाल तथा उनकी प्राण-वल्लभा, सर्वसुखों की धाम स्वरूपा श्रीप्रियाजी की जय हो! गौराङ्गी, नित्य कैशोरावस्था के कारण प्रियतम की जोड़ी स्वरूपा, रास-विलास में रस का विस्तार करने वाली, प्रियतम को हृदय में धारण करने वाली, श्रीलालजी की प्राणवल्लभा, उनके रूप का प्रकाश करने वाली, अत्यन्त सुकुमारी, अद्वितीय शोभा धारण करने वाली, अपने सौन्दर्य से काम की स्त्री रति का भी तिरस्कार करने वाली, कोकिल-बैनी, चन्द्रमुखी, कुन्द-पंक्ति के समान दन्त पंक्ति की शोभा से युक्त, हंस जैसी चाल वाली, सुन्दर विहार करने वाली, स्वर्णलता सदृश रति-विहार में आसक्त, अति अलबेली, श्रेष्ठ रमणी, अगणित गुणों से युक्त,

परमाह्लादिनी-शक्ति स्वरूपा, अति-प्रिय-भाषिणी, प्रियतम के प्रेम से उन्मत्त हृदय वाली, श्यामा अवस्था वाली सर्वेश्वरी श्रीराधा की जय हो !!

रास-विलास के समय रस प्रदान करने वाले रसिक सिरमौर, सौन्दर्य-माधुर्यादि गुणों से गर्वित, छैल-छबीले, नये-नये अनुराग से रञ्जित, नवल त्रिभङ्गी मुद्रा धारण करने वाले, काम के भी मन का हरण करने वाले, आनन्द को बढ़ाने वाले, सुन्दरता की सीमा, उदार शिरोमणि, अपार प्रभा से युक्त, अति सुकुमार रसिक-रसीले, कमल के समान विशाल नेत्रों वाले, परम कृपालु, सर्व सुखों के सागर, सर्व गुणों के आकर, श्रीप्रियाजी के रूप का प्रकाश करने वाले, निजधाम वृन्दावन में निवास करने वाले, सुन्दर हास्य से युक्त; अत्यन्त प्रभावशाली, जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्गों में मानो जादू भरा है, रस-युक्त, सौन्दर्य-माधुर्य-मूर्ति श्रीलालजी की जय हो !!

जिनका श्रीराधा नाम है, श्रीहरिप्रिया सहचरीजी की जो स्वामिनी हैं, सुन्दर गुणों की खानि श्रीराधा तथा श्रीराधा का सर्वस्व हरण करने वाले श्रीकृष्ण की जय हो !! ।।५३।।

* अनुरागिनी केलि कौमुदी मध्याभास *

सप्तमयाम—शयन के पद

(समय—प्रदोष रात्रि ८.२४ से १०.४० तक)

दोहा—

संध्यावंदन समय कौ, इहि विधि सुखहिं सजाय।
मधुर गान मिलि गावहीं, मृदु बाज्यंत्र बजाय॥

पद— राग यमन कल्याण

मधुरा मधुर मृदंग बजावैं।
अनुरागनि रागनि गुन गावैं॥
सप्तसुरनि के सजनि सुनावैं।
तोरें तान मान उपजावैं॥
संगीतन की रीति रचावैं।
मूरछना गति ग्राम जमावैं॥
नृत्यक सखी नृत्य दिखरावैं।
लागदाट के थाट थटावैं॥
उरप तिरप हुरमई हुरमावैं।
नई नई निपुनई निरमावैं॥
कुसल कला कृत हस्तक भावैं।
भृकुटि विलासनि विहँसि बढ़ावैं॥
इहि विधि उर अभिलाख पुरावैं।
सब मिलि श्रीहरिप्रियें दुलरावैं॥५४॥

भावार्थ—

सन्ध्या आरती के पश्चात् सखियाँ अपने गायन व नृत्य-

कला से रसिकदम्पति को सुख-विलास में वृद्धि कर रही हैं—

राग-रागिनी स्वरूपा सखियाँ समयानुकूल मधुर राग-रागिनियाँ गा रही हैं। मधुरा सखी मृदङ्ग पर मधुर थाप दे रही हैं। गाने वाली सखियाँ सप्त स्वरों के लय में क्रमशः आलाप कर रही हैं। गीत की समाप्ति पर लय के टूटते ही सब सखियाँ वाह-वाह के साथ उनका मान बढ़ा रही हैं। संगीत-कला की रीति से मूर्छना, गति एवं ग्राम की रचना के साथ ही सखियाँ गीत गा रही हैं। नृत्य कराने वाली सखियाँ विविध प्रकार से लाग-दाट के 'थाट' बनाकर नृत्य दिखला रही हैं। नृत्य-कला के अनेक भेद 'उरप-तिरप' तथा 'हुरमई' दिखलाती हुई बड़ी ही चतुराई से नई-नई गति का निर्माण करती हैं। नृत्य-कला में ये सखियाँ बड़ी ही कुशल हैं। जब ये हाथों से भाव दिखलाकर भृकुटि-विलास करती हैं, तो सभी सखियाँ हँस पड़ती हैं। इस प्रकार श्रीहरिप्रियाजी के साथ सभी सखियों ने श्रीप्रिया-प्रियतम को लाड़लड़ा कर अपने हृदय के सभी मनोरथों का पूर्ण किया ।।५४।।

दोहा—

निरखि हरखि श्रीहरिप्रिया, अँग संगनी सहेलि।
लाल-लाड़िली करत मिलि, रहसि कुंज में केलि ।।

पद— राग यमन कल्याण

लाल-लाड़िली केलि निकुंजे।

कमल कमल क्रीड़ा-कृत कौशल,
रहसि बिहसि रस केलि निकुंजे॥
परस सरस सरसत उरजनि कर,
करसत करजन केलि निकुंजे।
अँग संगनि सहचरि श्रीहरिप्रिया,
हरखि निरखि सुख केलि निकुंजे ॥५५॥

भावार्थ—

श्रीप्रियाप्रियतम रङ्ग-महल में नित्य-विहार-रस में मग्न हैं। श्रीहरिप्रिया सहचरीजी कहती हैं—

श्रीलाड़िलीलाल निकुञ्ज-महल में नित्य-क्रीड़ा-रत हो रहे हैं। इस रस-विलास को वे विविध प्रकार से प्रकट कर रहे हैं। कभी तो वे परस्पर मुख-से-मुख तथा कपोल-से-कपोल मिलाकर बड़े चातुर्य-पूर्ण ढङ्ग से अधर-सुधा-रस का पान करते हैं, तो कभी अपने कर-कमलों से उरोजों का स्पर्श एवं कर्षण करते हुए रहस्य-क्रीड़ा में अनुरक्त हो रहे हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम के निज-परिकर की सखियाँ उनकी इस दिव्य-केलि का दर्शन कर प्रफुल्ल-वदन हो रही हैं ॥५५॥

दोहा—

ऐंन मैंन सुख सैंन दोउ, मूरति मृदुल विहार।
करत रहो निसिदिन विपिन, छिनछिन हूँ बलिहार॥

राग यमन कल्याण

पद—

या वानिक पर हूँ बलिहारी ।
विपिन विहार करत रहौ निसदिन,
छिन-छिन प्रति पर हूँ बलिहारी ।।
ऐंन मैंन सुख सैंन सखिन के,
चैन दैन पर हूँ बलिहारी ।
श्रीहरिप्रिया मनोज मनोहर,
मृदुमूरति पर हूँ बलिहारी ।।५६।।

भावार्थ—

वस्तुतः श्रीरसिकदम्पति का नित्य-रस-विलास ही सखियों का भोग्य है । निकुञ्ज के झरोखों से उनकी केलि-झाँकी का दर्शन करती हुई सखियाँ कहती हैं—

नित्य-विलास-क्रीड़ा-रत श्रीरसिकदम्पति की छवि की बलिहारी है ! ये श्रीयुगलकिशोर अहर्निश ऐसे ही (नित्य-विलास-क्रीड़ा-रत) बने रहें ! प्रतिक्षण बदलने वाली किंवा संवर्धन को प्राप्त होने वाली इनकी रूप-माधुरी की बलिहारी है ! इनका प्रतिक्षण का यह सुरत-विहार ही सखियों का ध्येय है । यही सुख इन्हें आनन्द प्रदान करने वाला है । इसी सुख पर सखियाँ क्षण-प्रति-क्षण बलिहारी जाती हैं । कोटि-कोटि कामदेवों के भी मन का मन्थन करने वाले इन श्रीरसिक-

दम्पति के श्रीविग्रहों से माधुर्य-रस का अजस्र वर्षण हो रहा है ! इस प्रकार सखियाँ श्रीयुगल सरकार की मञ्जुल-मूर्ति का दर्शन कर बार-बार बलिहारी जा रही हैं !! ॥५६॥

दोहा—

या सोभा समकरन को, रति कंदर्प करोरि।
हरन हितू जन हियन की, बनो भांवति जोरि॥

पद— राग यमन कल्याण

बनी भांवती जोरी नवलकिसोर-किसोरी।
साँवरी सलोंनी गोरी सोभा सिंधु में झकोरी,
निरखत छबि होरी पल न लगै पलकोरी॥
रंग रस बोरी मानो ढोरी साँचे एक ही में,
करें चित वित चोरी छबि नहीं थोरी।
हरत हितू श्रीहरिप्रिया मो हियोरी ऐसी,
दुति पर वारों रति कंदर्प करोरी ॥५७॥

भावार्थ—

श्रीरसिकदम्पति की अपूर्व शोभा का वर्णन करती हुई सखियां परस्पर कहती हैं—

श्रीनवलकिशोर-किशोरी की यह गौर-श्यामल मन-भाँवती जोड़ी बड़ी ही सलोनी लग रही है ! ऐसा प्रतोत होता है मानो शोभा रूपी समुद्र में मन्थन कर इन्हें निकाला गया

हो ! अरी सखी ! इन श्रीयुगलवर की छवि का दर्शन कर हमारे नेत्रों के पलक एक पल के लिये भी नहीं झपकते, वरन् एकटक दृष्टि से इन्हें निहारते ही रहते हैं। इस समय ये परस्पर अनुराग-रङ्ग में इस प्रकार सरावोर हो रहे हैं, मानो अनुराग रूपी एक ही साँचे में ढाले गये हों ! निश्चय ही इनकी यह रूप-माधुरी सभी के चित्त-रूपी धन का अपहरण करने वाली है। जिन्होंने श्रीहितु एवं श्रीहरिप्रिया सहचरी के मन को मोह लिया है, उन श्रीयुगलकिशोर की रूप-माधुरी पर कोटि-कोटि रति-कन्दर्प न्योछावर हैं !! ।।५७।।

दोहा—

सिंघासन श्रीहरिप्रिया, सोहत सुढर ढरे।
रसिक बिहारी-बिहारिन, दोउ गुन रूप भरे ।।

पद—   राग यमन कल्याण

बने दोउ रसिकबिहारी-बिहारिन रूप भरे गुन भरे।
अंग अंग सोहें रँगभीने अभरन रतन जरे ।।
पहरें वसन सुबरनी छबि मनहरनी ढरिन ढरे।
श्रीहरिप्रिया बैठे सिंघासन निरखत नैंन ढरे ।।५८

भावार्थ—

सखियाँ सिंहासनासीन श्रीयुगलकिशोर के सौन्दर्य का वर्णन करती हुई कहती हैं—

ये दोनों श्रीरसिकविहारी-विहारिणी रूप-सौन्दर्यादि

सम्पूर्ण गुणों से भरपूर हैं। इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग अनुराग-रङ्ग से रञ्जित तथा रत्न जटित आभूषणों से युक्त हैं। इन पर धारण किये गये सुन्दर रंग-विरंगे वस्त्र अत्यन्त शोभायमान लग रहे हैं। ये अपनी दिव्य छवि से सबके मन का हरण कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो इन दोनों को किसी अनिर्वचनीय सौन्दर्य रूपी साँचे में ढाला गया हो ! सिंहासन पर विराजमान ये श्रीप्रिया-प्रियतम आलस्य भरे नेत्र-कमलों से एक-दूसरे को देखते (हुए मानो शयन-कुञ्ज में पधारने की इच्छा प्रकट कर रहे) हैं ।।५८।।

दोहा—

नख सिख सुंदर बरन वर, अंग अंग आभर्न ।
जोरी श्यामा-श्याम की, बनी मैंन मन हर्न ।।

पद— राग खमाज

श्याम श्यामाबनी जोरी मन हरन री ।
कोटि कंदर्प रति दिव्य दंपति दरश,
सरस अनुराग अंब बर बरन री ।।
मुकुट मंजुल चिकुर चंद्रिका नील पट,
सीस सोभा सुमन मिलि मुकता लरन री ।
तिलक लिल्लाट ताटंक कुंडल श्रवन,
गंड मंडल झलक अलक सौं ढरन री ।।

भोंह सोंहति चपल नैन अंजन सुरति,
रंग रंजन सुकंज गंज खंजरन री।
नासिका अग्रमुक्ता हलनि झलमलति,
देखि दुति दलमलति अमित दुति धरन री ॥
बदन सुख-सदन मधि रदन रस रगमगे,
रद छदन अरुनई हू तें अति अरुन री।
मन्द सस्मित मधुर बत-रसन रस रते,
अति अलंकृत कियें दियें भुज गरन री ॥
कनक केयूर चूरी कटक कंकने पहुँचि,
करपत्र मुंदरी सुकर तरन री।
नखनि मनि जोति लखि होत लोयनि,
ललक पलक चाहत न छबि छलक तें टरन री ॥
कसिब कंचुक कसी अतलसी कंचुकी बसी,
उर-उर बसी स्त्रकनि की सरन री।
पदिक चौकी सरी चौसरी लरी मिलि,
लसत सुंदर तनूदर जु दुख दरन री ॥
कटि निकटि जटित कटि पट पुरट,
सुघटिनी पृथु नितंबनि अटी निज पटावरन री।

जेहरो पान पद परसि पायल परत,
अनुसरत ऐसें आदेस आचरन री॥
परम रमनी महा रंजित नूपुर रतन,
खचित हंसक-नवट नखनि रङ्ग ररन री।
पदतल ललित कोमल कमल दलन सम,
निरखि दृग मधुप गति होत बिसमरन री॥
उदित आनंदमय इन्दु इकरस सदा,
रसिक-सिरमौर पटतर जु वर परन री।
अमित अद्भुत प्रभापुंज श्रीहरिप्रिया,
सकल सोभा स्वकृति सम न कोउ करन री॥५८

भावार्थ—

परस्पर गलबाँही दिये सुख-विलास में आसक्त रसिक-दम्पति की शोभा का वर्णन करती हुई सखियाँ कहती हैं—

जिनके अङ्ग-प्रत्यङ्गों से दिव्य रस का निर्झरण हो रहा है, ऐसे रसिकदम्पति श्रीश्यामा-श्याम की मनोहारिणी शोभा का दर्शन कर करोड़ों रति व काम मोह को प्राप्त हो रहे हैं। परस्पर गलबाँही दिये सिंहासन पर विराजमान श्रीलालजी का सुन्दर मुकुट श्रीप्रियाजी के केशपाश, चन्द्रिका, नीलसाड़ी, शीशफूल तथा (केशपाश में लिपटी) मोतियों की लड़ से मिलकर दिव्य शोभा को प्राप्त हो रहा है। प्रियतम का तिलक

श्रीप्रियाजी के ललाट से तथा श्रीप्रियाजी का कर्णफूल प्रियतम के कुण्डल से मिलकर झिलमिला रहे हैं। कपोलों पर पड़ रही इनकी झलक से अलकावली भी आभा से युक्त हो गई है। यदि लालजी श्रीप्रियाजी की सुन्दर भ्रकुटियों को अपलक दृष्टि से देखते हैं, तो श्रीप्रियाजी भी सुरत रंग से रञ्जित, अञ्जन युक्त अपने चपल नेत्रों से प्रियतम को निरख कर उनकी ओर आसक्त हो रही हैं। उनके नेत्रों की चपलता खञ्जन पक्षी की चञ्चलता को भी मात कर रही है। श्रीप्रियाजी की नकबेसर में लगे अग्रमोती के हिलने से जो आभा विकीर्ण हो रही है, उससे प्रियतम श्यामसुन्दर की अमित अङ्ग-कान्ति भी फीकी पड़ रही है। श्रीप्रियाजी का मुखकमल प्रियतम के लिये सर्व सुखों का सदन है। जिससे श्रीप्रियाजी की दन्तावली (प्रियतम के अधर-सुधा-रस-पान से) सगवगी-सी हो रही है। उनके अधर भी अरुणिमा से भी अधिक अरुण हो रहे हैं। इस प्रकार अधर-सुधा-रस-पान करते-कराते, मन्द-मधुर मुसकान बिखेरते, दिव्य आभूषण धारण किये परस्पर गलबाँही देकर विराजमान हैं। प्रियतम के नेत्र श्रीप्रियाजी के भुजदण्डों में बाजूबन्द, हाथों में चूड़ी, दस्तबन्द, कंकण, पहुँची, हथफूल, मुद्रिका तथा नख-ज्योति की शोभा को देखते नहीं अघाते। परस्पर गलबाँही देकर विराजमान होने के कारण श्रीप्रियाजी की लाल-रेशमी-कंचुकी प्रियतम के अतलसी जामे की कंचुकी से सटी हुई है,

तथा लाड़िलीजी का उरवसी आभूषण श्रीलालजी के उर पर

धारण की गई माला के नीचे दबा हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानो वह उसकी शरण ग्रहण किये हो ! प्रियतम की जुगनीसरी (जाकर) प्रियाजी के चौसर हार से सटी हुई ऐसी मालूम पड़ रही है मानो श्रीयुगलवर के पार्थक्यरूपी अन्तर को यह मिटा रही हो !! श्रीप्रियाजी की कटि के निकट पृथुल नितम्बों पर रत्नजटित स्वर्ण की किंकिणी शोभायमान है। उसकी कान्ति ने उनके वस्त्रां को भी ढक रखा है। उनके चरणारविन्दों में जेहरि आभूषण, पदयान (चरण के ऊपरी भाग पर धारण होने वाला पानी की आकृति का आभूषण) तथा पायलें शोभित हैं। इन आभूषणों को देखकर ऐसा लगता है मानो श्रीहरि के आदेश का अनुसरण करते हुए ये प्रियाजी के चरणकमलों का स्पर्श करने के लिये नीचे की ओर झुके जा रहे हैं ! भाव यह है कि प्रियतम श्यामसुन्दर प्रियाजी के चरणारविन्दों की शोभा को बार-बार निरख रहे हैं। श्रीप्रियाजी के नूपुर चरणों में लगे महावर से रञ्जित हो उठे हैं। चरणों की अँगुलियों में धारण किये गये बिछुये भी नखमणि की आभा से युक्त हो शब्दायमान हो रहे हैं। कमल से भी सुकुमार प्रियाजी की पदतली का दर्शन कर श्रीलालजी के भ्रमर जैसे नेत्र चकित-थकित से रह गये !! कदाचित् कोई अनिर्वचनीय आनन्द से युक्त एकरस रहने वाला चन्द्रमा उदित हो, तो भी उसकी उपमा इन रसिक-सिरमौर (दम्पति) से नहीं दी जा सकती। आदि-अन्त से रहित परम तेज-पुञ्ज-स्वरूपा, श्रीहरि की प्राणवल्लभा श्रीलाड़िलजी

शोभा का वर्णन कर पाना सम्भव नहीं है ! सम्पूर्ण लोकों की शोभा भी इस शोभा के आगे नगण्य है !! ॥५९॥

※ अनुरागिनि कर्नकान्ता मध्याभास ※

दोहा—

इहि प्रकार बीती जबै, घरी चार रजनी ।
अदन सदन आये दोऊ, संग लियें सजनी ॥

पद—

संग लिये सजनी पिय प्यारी ।
इहि विधि घरी चार रजनी सुख,
विलसि चले दोउ करन बियारी ॥
अदन सदन आये मन भाये,
पधराये करि सोंज तियारी ।
श्रीहरिप्रिया प्रवीन परसपर दोउ,
दोउन की जीय-जियारी ॥६०॥

भावार्थ—

चार घड़ी रजनी व्यतीत होने पर व्यारू-भोग आरोगने के लिये सखियाँ श्रीयुगलकिशोर को भोजनशाला में ले जाती हैं—

उक्त प्रकार से सुख-विलास विलसते, चार घड़ी रात्रि व्यतीत हो जाने पर सखियाँ श्रीरसिकदम्पति को व्यारू-भोग आरोगने के लिये भोजन-कुञ्ज में ले गईं । वहाँ पर सखियों ने

भोग की सारी समग्री जुटाकर श्रीप्रिया-प्रियतम को आसन पर पधराया। श्रीरसिकदम्पति की यह मनभाँवती परम प्रवीण जोड़ी एक-दूसरे की प्राण-संजीवनी सदृश है। अर्थात् ये श्रीप्रिया-प्रियतम एक-दूसरे को देख-देखकर ही जीते हैं ॥६०॥

दोहा—

गरस परसपर देत मुख, सरस पुलक अँग अंग।
जिय ज्यारी व्यारीं करत, पिय प्यारी के संग॥

पद—

करत वियारी पिय प्यारी संग।
अरस परस गरसा मुख देत दिवावत,
अति उपजावत रति रंग॥
मधुर दूध संमिलित मिश्री भरि,
कनक-कटोरें पीवत सोमँग।
श्रीहरिप्रिया आरोगत रुचि सों,
विविध पान पकवान पुलक अँग॥६१

भावार्थ—

श्रीप्रिया-प्रियतम व्यारू-भोग आरोग रहे हैं। प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर अपनी प्राणवल्लभा श्रीप्रियाजी के साथ व्यारू करते बड़े प्रसन्न हो रहे हैं। वे एक-दूसरे के मुख में ग्रास देते हुए अपने हृदय के प्रेम-भाव को प्रकट कर रहे हैं। यह प्रेम-

वैचित्र्य ही इनका रति-विहार है। मिश्री सम्मिलित मधुर दुग्ध को स्वर्ण-कटोरों में भर-भरकर बड़ी ही उमङ्ग के साथ ये दोनों पान कर रहे हैं। विविध प्रकार के पान-पकवनों को बड़ी ही रुचिपूर्वक आरोगते हुए श्रीप्रिया-प्रियतम के अङ्ग-प्रत्यङ्ग (परस्पर स्पर्श-सुख के कारण) पुलकायमान हो रहे हैं ॥६१॥

दोहा—

अम्बुज बदनी सहचरी, विधि आचवन अचवाहि ।
बीरी रचि-रचि देत कर, जुगलचंद्र मुख चाहि ॥

पद— राग बिहाग

अंबु अचवावति अम्बुज बदनी ।
कर लियें झारी कनक कटोरनि,
भरि-भरि प्यावति अंबुज बदनी ॥
रचि-रचि बीरी देत दोउन कर,
उर उमगावति अंबुज बदनी ।
श्रीहरिप्रिया चखि चाहि चकित रहि,
कहि नहिं आवत अंबुज बदनी ॥६२

भावार्थ—

ब्यारू-भोग-आरोगन के पश्चात् कमल-वदनी श्रीचम्पकलताजी श्रीप्रिया-प्रियतम को जलाचमन कराती हैं। कमल-वदनी श्रीचित्रासखीजी स्वर्णझारी से कनक कटोरे में जल

भरकर श्रीयुगल को जल-पान कराती हैं। कमलवदनी श्री ललिताजी बीरी बना-बनाकर दोनोंके कर-कमलों देती हुई हृदय में फूली नहीं समाती हैं। इस प्रकार ये सभी कमलवदनी सखियाँ जिस चाह भरी चितवन से श्रीप्रिया-प्रियतम को निरख रही हैं, वह वर्णनातीत है ! ॥६२॥

दोहा—

निज इच्छा अनुसारनी, निज सहचरि मृगनैंनि।
सारति वारति आरती, समझि सैन की सैंनि॥

पद— राग अडाना

आरति बारति अलि मृगनैंनी।
निज सहचरि इच्छा अनुसारनि,
समझि सैंन की सैंनाबैंनी॥
जगमग जोति जगति दीपावलि,
कनक थार मधि सचित सुचैंनी।
श्रीहरिप्रिया हितवाय हियन में,
लै बलाय सनमुख सुखदैंनी॥६३॥

भावार्थ—

सखियाँ श्रीप्रिया-प्रियतम की शयन आरती उतार रही हैं—

श्रीप्रिया-प्रियतम के निज परिकर की ये मृगनैनी सखियाँ

इनकी इच्छा-वृत्ति-स्वरूपा हैं। तभी तो इनके नेत्र-कमलों के संकेतों से शयन-कुञ्ज में पधारने की उत्कट इच्छा जान इनकी आरती उतार रही हैं। स्वर्ण थाल के मध्य में आरती के लिए सजाई गई दीप-ज्योति की जगमग-जगमग करती हुई पँक्ति से सारा निकुञ्ज-भवन जगमगा उठा है! आरती उतारने के पश्चात् सखियाँ परमाह्लाद की मुद्रा में श्रीरसिकदम्पति के सम्मुख खड़ीं होकर बार-बार उनकी बलैयाँ लेती हैं! उस समय युगल-जोड़ी के प्रति उनके हृदयों में समाया हुआ प्रेम उच्छलित होने लगता है !! ॥६३॥

दोहा—

सयन अयन सुखसखी जहाँ, सची सुपेसल सेज।
तापर पौढ़े एक पट, ओढि रँगोले हेज ॥

पद— राग अडाना

सुंदर सुहाई सुखदाई सुखसेज पर हेज,
भरे पौढे पलकें लगि गईं।
भुज सिरहानें दियें हिय सों लगाय,
हियें प्रेम रस पियें पलकें लगि गईं ॥
विपुल पुलक लस अंग आलसबस,
अरसनि परस पलकें लगि गईं।
श्रीहरिप्रिया जू की जोरी नवलकिसोरी,
ओढें पियरि पिछौरी पलकें लगि गईं ॥४६

भावार्थ—

व्यारू के पश्चात् श्रीरसिकदम्पति शयन-कुञ्ज में शयन के लिये पधारते हैं। शयन करते हुए ये कैसे सुन्दर लग रहे हैं-

रङ्ग-महल की सुन्दर-सुखद-शैया पर श्रीरसिकदम्पति उमङ्ग में भरकर एक ही पट ओढ़कर पौढ़ गये! पौढ़ते ही उनकी पलकें लग गई! वे एक-दूसरे की भुजा को ही अपना तकिया बनाये हुए हैं। प्रेम-रस-पान की मुद्रा में हृदय-से-हृदय लगाकर सोते हुए ये बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं। इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग परस्पर स्पर्श-सुख से रोमाञ्चित हो उठे हैं। इस समय ये दोनों आलस्य-वश होकर पौढ़े हुए हैं। पीतवर्ण की चादर ओढ़े श्रीनवलकिशोर-किशोरी की यह जोड़ी परम सुहावन-मन-भावन लग रही है! ॥६४॥

दोहा—

हितू सहचरी हितभरी, चाँपि चरन चित चाय।
हरें हरें हटि पट दिये, झट दै बाहरि आय॥

पद— राग अडाना

हितूसखी हित की हितवाई।
पायँ पलोटि हरें हरें हटकें,
पट दे झट दे बाहर आई॥
रंध्रनि मग लगि रूपमाधुरी,
अवलोकति सहचरि समुदाई।

श्रीहरिप्रिया की सहज-सुरति-रति,
गान करति मधुरे मनभाई ॥६५

भावार्थ—
शयन-कुञ्ज में भलीभाँति शयन कराकर सखियाँ निकुञ्ज-रन्ध्र से श्रीयुगल की रूप-माधुरी का पान कर रही हैं—

श्रीहितु-सहचरी का हृदय निरन्तर श्रीयुगल के प्रेम-रस से सरावोर रहता है। वे उन्हें सेज पर भलीभाँति शयन कराकर उनके चरणारविन्दों का संवाहन कर (उन्हें निद्रा-मग्न हुआ जान) शनैः शनैः निकुञ्ज-द्वार से बाहर निकलकर बड़ी सावधानी पूर्वक निकुञ्ज का द्वार बन्द कर देती हैं। फिर निज परिकर की सहचरी-वृन्द के साथ निकुञ्ज-रन्ध्रों से सेज पर पौढ़े श्रीरसिकदम्पति की रूप-माधुरी का प्रतिक्षण अवलोकन करने लगती हैं। पुनः सबके साथ मिलकर श्रीप्रिया-प्रियतम के स्वाभाविक केलि-जन्य रस का बड़े ही प्रेम के साथ मनभाई वाणी में मधुर-मधुर स्वरों में गान करती हैं ॥६५॥

※ अनुरागिनि अलबेलि केलि मध्याभास ※

दोहा—
अछन अछन उच्चरहु री, ज्यों ए परैं न जागि ।
श्रीहरिप्रिया सुख सेज पर, सोये सुख-श्रम पागि ॥

पद— राग अडाना

सुख सेज श्रमित दोउ स्यामा-स्याम,

रति रँग भरे गरे रहे लागि ।

अंग अंग उरझे अँग अंगनि में,
परम प्रेम रस मध्य पागि ॥
सिथिल बसन रसना रतनावलि,
राजति मुख मुख राग रागि ।
श्रीहरिप्रिया के लछन बरनन करें,
अछन अछन मति परें जागि ॥६६

भावार्थ—

रङ्ग-महल में सेज पर शयन करते हुए श्रीप्रिया-प्रियतम की रूप-माधुरी का पान करती हुई सखियाँ गा रही हैं—

सुरति-विलास के कारण श्रमित प्रेम-रङ्ग में रंगे-पगे श्रीरसिकदम्पति गले-से-गला लगाये, सुखद सेज पर शयन कर रहे हैं। परस्पर प्रेम-रस में डूबे होने के कारण इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग परस्पर उलझ गये हैं। दिव्य-कामोद्दीपन के कारण शरीर पर धारण किये गये इनके वस्त्रादि ढीले पड़ गये हैं। परस्पर अधर-सुधा-रस-पान के कारण इनके मुख-कमल अनु-राग-रङ्ग में रञ्जित हो उठे हैं। श्रीहरिप्रिया सहचरीजी सखियों के प्रति कहती हैं—हे सखियो ! श्रीप्रिया-प्रियतम की इस दिव्य-केलि का वर्णन धीरे-धीरे करो। कहीं ऐसा न हो कि ये हमारी आवाज सुनकर जाग जायँ !! ॥६६॥

दोहा—

देखत ही दृग थकित ह्वै, रहत गहत नहिं चेत ।

श्रीहरिप्रिया के अंक में, अति निशंक छबि देत ॥

पद—

आजु छबी फबी है री मदन मोहन की।
मंद मंद मुसिकनि मोहनि,
तन अधखुली पल जोहन की ॥
देखत ही दृग रहत थकित ह्वै,
सोभा कटोली भोंहन की।
श्रीहरिप्रिया अंक मधि अंकित,
अति निशंक सोंहन की ॥६७॥

भावार्थ—

श्रीहरि अपनी प्राणवल्लभा श्रियाजी के साथ शयन कर रहे हैं। उस समय की शोभा का वर्णन करती हुई एक सखी दूसरी सखी से कहती है—

अरी सखी! देखो तो सही, आज श्रीमदनमोहनलाल की छबि कैसी फब रही है? इस समय श्रीहरि निस्संकोच भाव से श्रीप्रियाजी के अङ्क में शयन करते हुए बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं। ये अपने अधखुले नेत्रों से श्रीप्रियाजी की ओर निरखते हुए कैसे मन्द-मन्द मुसकरा रहे हैं! इस समय हमारे नेत्र तो श्रीलालजी बंक भ्रकुटियों की शोभा का दर्शन कर थके-से जा रहे हैं। हमें अपने शरीर की भी कोई सुध-बुध नहीं है!! ॥६७॥

* अनुरागिनि विचित्र शोभा मध्याभास *

अष्टम्-याम-सेवा—रास-विलास के पद

(समय—नक्तरात्रि १०.४८ से ३.३६ तक)

दोहा—

अर्द्ध सरवरी में रहो, घरी छ सातक आय।
तब ईछा अनुसारिनी, सहचरि दिये जगाय॥

पद— राग खमाच

दिये जगाय जुगलवर जबहीं।
अर्द्ध सरवरी माहिं छ-सताक,
रही जानि निज सहचरि तबहीं॥
इहि प्रकार ईछा अनुसारनि,
उर अभिलाषनि पुरये सबहीं।
श्रीहरिप्रिया के दरस परस बिनु,
निमिख न एक रहत हैं कबहीं॥६८॥

भावार्थ—

अर्धरात्रि होने से छः-सात घड़ी पूर्व सखियाँ रास-विलास विलसने के लिये श्रीरसिकदम्पति को जगाती हैं—

जब अर्धरात्रि होने में छः-सात घड़ी शेष रही, तब (श्रीयुगल की इच्छानुसार) उनके निज परिकर की सहचरियाँ उन्हें जागृत कर देती हैं। जो श्रीप्रिया-प्रियतम के दर्शन व स्पर्शण के बिना एक पल भी जीवित नहीं रह सकतीं तथा जो

श्रीप्रिया-प्रियतम का रुख जानकर उनकी किंवा अपनी इच्छानुसार कार्य सम्पन्न करने वाली हैं, ऐसी सखियाँ उन्हें शयन-सेज से उठाकर मानो अपनी हार्दिक अभिलाषाओं की पूर्ति करने लगीं !! ॥६८॥

दोहा—

सोभा हद सोहत सरस, रद छद चित्र अमंद ।
लै लर मुक्ता वारहीं, लखि जगमग मुख चंद ॥

पद—　　　　राग खमाज

जगमगें चंद्रबदन की जोति ।
अति सुंदर सोभा की सींवां,
लखि चखचौंधी होति ॥
प्रीतम के मुख अंबुज-रस करि,
चित्रित अमित उदोति ।
लखि सुख श्रीहरिप्रिया हितू सखी,
वारति हैं लर मोति ॥६९॥

भावार्थ—

अर्धरात्रि के पूर्व ही सोकर उठे हुए श्रीरसिकदम्पति की छवि पर सखियाँ मोतियों की हारावली न्योछावर करने लगती हैं—

परम शोभा की सीमा श्रीप्रियाजी की मुख-चन्द्र-ज्योति ,

जगमग-जगमग कर रही है। इस समय इनके मुखारविन्द की शोभा का दर्शन कर सखियों के नेत्रों में चकाचौंध सी हो रही है। श्रीलालजी के ताम्बूल-चर्वित मुख द्वारा चुम्बित होने से श्रीप्रियाजी के कपोलादि विचित्र से हो उठे हैं। उनकी इस समय की मुख-छवि का दर्शन कर श्रीहरिप्रिया व श्रीहितु-सहचरीजी मोतियों की हारावली उनके मुख-कमल पर न्योछावर कर रही हैं !! ॥६९॥

दोहा—

निकसे विकसे बदनविधि, विपुल पुलक भुजजोरि।
भई प्रमुदित प्रमदावली, लहि चंदहिं ज्यों चकोरि॥

पद—   राग खमाज

निकसि चले दोऊ बहियाँ जोरी।
प्रमुदित संग लगी प्रमदावलि,
लहि चंदहि ज्यों तृषित चकोरी॥
बिकसित बदन-सदन सुख सोहन,
मन मोहन छबि फबित न थोरी।
श्रीहरिप्रिया सिंगार सिंघासन बैठे,
आनि किसोर किसोरी॥७०॥

भावार्थ—

रास-विलास के उद्देश्य से श्रीरसिकदम्पति श्याम-कुञ्ज

से बाहर निकल रास-मण्डल के मध्य सिंहासन पर विराजमान होते हैं—

रास-विलास के उल्लास में भरकर परस्पर गलबाँही दिये श्रीरसिकदम्पति शयन-कुञ्ज से बाहर पधारते हैं। जिस प्रकार चद्रमा का उदय होने से तृषित चकोरी प्रसन्न हो उठती है, उसी प्रकार श्रीरसिकदम्पति को प्राप्त कर सहचरियाँ भी प्रमुदित हो उठीं ! श्रीश्यामसुन्दर का मुखारविन्द तो मानो सुख का सदन ही है। रास-विलास की उमङ्ग से इनके मुख-कमल की छवि और भी बढ़ गई है ! श्रीहरिप्रिया सहचरी ने श्रीयुगलकिशोर का रास-विलास के अनुरूप शृङ्गार किया। तत्पश्चात् श्रीरसिकदम्पति रास-विलास की इच्छा से सिंहासन पर विराजमान हुए ॥७०॥

दोहा—

प्रान प्रियन के जियन को, जानि मोद मनमानि ।
अली चलो बिमलो जहाँ, रासथली रसदानि ॥

पद—   राग खमाच

रसदैंनी रसथली सुहाई।
प्रान प्रियन के जानि जियन को,
अली चलो बिमलो तहाँ आई ॥
मोहन मदन मनोज चंद्र को,
चटकि चंद्रिका रहि छित छाई।

श्रीहरिप्रिया मंडल प्रवेस करि,
अति सुदेस रस-रहसि रचाई ॥७१॥

भावार्थ—

रास के उद्देश्य से श्रीरसिकदम्पति रास-मण्डल में प्रवेश करते हैं—

श्रीरसिकदम्पति के हृदय की बात को जानकर निर्मल मन वाली सहचरियाँ एकसाथ मिलकर रस-प्रदान करने वाली अति रमणीक रास-स्थली पर पहुँची। कामदेव के भी मन का मन्थन करने वाले, साक्षात् मन्थन स्वरूप चन्द्र की चाँदनी ने छिटक कर सम्पूर्ण वसुन्धरा को रस से आप्लवित कर दिया। इस प्रकार रास-विलास के अनुकूल वातावरण देख श्रीरसिक-दम्पति ने रास-मण्डल में प्रवेश कर वातावरण के अनुकूल ही बड़ी सुन्दर रीति से रास-रहस्य रचाया ॥७१॥

* अनुरागिनि कंदर्प कामा मध्याभास *

विविध भाँति गुनभेद गति, रीझि भीजि अँग अंग।
नचत नवल नागर दोऊ, रहसि रास रस रंग॥

पद— राग खमाज

नचत नवल नागर रहसि रास रंगे।
सुभग वन पुलिन थल कल्पतरु तल,
विमल मंजु मंडल कमल दल अभंगे॥

रुनुनु नूपुर रमकि झमकि हंसक,
झुनुनु कुनुनु किंकिनि कलित कटि सुधंगे।
चरन की धरन उच्चरन ससक सुरन,
हरन मननन करत उर उमंगे॥
भृकुटि मटकें लटें लटकि अटकें,
उझटि झटकि नासा-पुटें चटकि चंगे।
अलग लग दाट अपटें झपट झट रपट,
सुघट सांगीत रट थुंग थुंगे॥
खिरर थिररें तृवट तिर्प उरपें,
उरनि मुरनि सिर ढुरनि अति गति सुढंगे।
चखनि चलवनि चपल चिंदु चाली,
चलनु चर्चरी भेद भ्रुवनि त्रिभंगे॥
रीझि रस भीजि रिझवार दोउ,
रसिक वर परसपर पी सुधाधर समंगे।
मत्त अनुराग अंगे अनंगे रमत रंग,
श्रीहरिप्रिया नित्य संगे॥७२॥

भावार्थ—

श्रीरसिकदम्पति विविध प्रकार से रास-विलास विलसते हुए नृत्य कर रहे हैं—

परम रमणीक श्रीवृन्दावन में श्रीयमुना पुलिन पर कल्प-वृक्ष के नीचे अष्टदल कमल के आकार का एक परम मनोहर रास-मण्डल है, जो नित्य परम-शोभा युक्त रहता है। ऐसे दिव्य रास-मण्डल पर श्रीनवल-नागरी-नागर दिव्य रास-क्रीड़ा करते हैं। विविध प्रकार से नृत्य करने के कारण इनके नूपुरों से रुनुक-झुनुक, विछवों से रमक-झमक तथा सुकुमार कृशकटि में बँधी किंकिणि की क्षुद्र-घन्टिकाओं से झुन-झुन के शब्द शब्दायमान हो रहे हैं। ठुमक-ठुमक कर चलने तथा चरण-कमलों को उठा-उठाकर पटकने की मुद्रा में नृत्य करने से सप्त स्वर प्रकट हो रहे हैं, जिनसे परस्पर मन का हरण होने से हृदय उल्लास से भर रहा है। नृत्य की मुद्रा में कभी तो ये परस्पर भ्रकुटियाँ मटकाते हैं, तो कभी श्री प्रियाजी की लटकी हुई अलकावली हिलती हुई-सी उछलकर उन्हीं की नकबेसर से उलझ जाती है, उनकी इस समय की छवि बड़ी ही फब रही है। कभी पृथक्-पृथक् तो कभी मिलकर दोनों नृत्य करते हैं। कभी रोकने के बहाने एक-दूसरे के सामने आकर खड़े हो जाते हैं, तो कभी एकाएक मिलकर स्थिर हो जाते हैं। कभी शीघ्रता से झपट कर एक-दूसरे का आलिङ्गन करते हैं, तो कभी पृथक् होकर भली प्रकार से गाते, तालियाँ बजाते, थुँग-थुँग की रट लगाते नृत्य करने लगते हैं। जब कभी ये तृपट्-तिर्प आदि नृत्य की विविध मुद्राओं में भली प्रकार से गति लेते हैं, तब इनके नूपुरों तथा किंकिणियों से क्वणित

रुन-भुन के शब्द बड़े ही सुहावने लगते हैं। तान के साथ इन दोनों के वक्षःस्थल तथा मस्तक की ढुरन बड़ी ही मन-भावती लगती है। जब ये नेत्र-कमलों को चञ्चलता से चलाते तथा मत्त गजराज की चाल से भौंहे मटकाते हैं, उस समय भिन्न-भिन्न तानों में गीत गाते हैं। इस प्रकार रास-विलास विलसते ये एक-दूसरे के नृत्य पर रीझ उठते हैं। इस रीझ में उल्लसित हृदय हो परस्पर अधर-सुधा-रस का पान करते हुए दिव्य रस से युक्त अति शोभायमान लगते हैं। परस्पर अनुराग-रङ्ग में अनुरञ्जित श्रीप्रिया-प्रियतम के इस नित्य-रास-का दर्शन कर साक्षात् मन्मथ के मन का भी मन्थन होने लगता है।।७२।।

* अनुरागिनी खंजनाक्षी मध्याभास *

दोहा—

इहि विधि रास रहस्य रमि, श्रीहरिप्रिया सहेत।
विविध भाँति रस रीति सों, ब्याह सदन सुख लेत।।

पद— राग खमाच

दोऊ ए ब्याह सदन सुख लेत।
विविध भाँति की रीति,
भाँति सों लाड़ि लाड़ि सरबेत।।
पहरें बसन सुहानें अभरन,
मौरी मौर छबि देत।

अंग अंग सोहत मनमोहन,
श्रीहरिप्रिया सहेत ॥७३॥

भावार्थ—

रास-विलास के पश्चात् श्रीप्रिया-प्रियतम विवाह-सदन का आनन्द लेते हैं—

दोनों रसिकसिरमौर विविध भाँति की रस-रीति से विवाह-सदन का आनन्द ले रहे हैं। इन दोनों प्रिया-प्रियतम ने विवाह के अनुरूप (दूलह-दुलहन के) सुन्दर वस्त्राभूषण धारण कर लिये हैं। दोनों के मस्तकों पर मौरी-मौर (विवाह के मुकुट) बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं। मन का मोहन करने वाले इनके अङ्ग-प्रत्यङ्ग बड़े ही मनोहर हैं। इन दोनों के रोम-रोम प्रेम-रस से भरा हुआ होने से ये दोनों रसिक सिरमौर बड़े ही मन-भाँवते लग रहे हैं ॥७३॥

दोहा—

ब्याहि विराजें सेज पर, श्रीहरिप्रिया लै संग।
हुलसि हुलसि हिय बिलसहीं, बाढ्यौ अति रति रंग॥

पद— राग खमाच

बाढ्यौ अति रति रंग सेज पर।
दूलह दुलहिन अलक लड़ीले,
अलबेले अंग अंग॥

नित्य नवीन किशोर लाल दोउ,
नित्य नवीन अभंग ।
विलसत विविध विलास हास,
रस श्रीहरिप्रिया के संग ।।७४।।

भावार्थ—

दूलह-दुलहन के वेश में श्रीप्रिया-प्रियतम के सुख-विलास का वर्णन करती हुई सखियाँ कहती हैं—

विवाह के उपरान्त सेज पर विराजमान नव-दम्पति सुख-विलास विलस रहे हैं। अलक-लड़ीले अलबेले दूलह-दुलहन के अङ्ग-प्रत्यङ्ग रति-रङ्ग में समाये हुए हैं। ये श्रीनवल किशोर-किशोरी तो नित्य-नवीन हैं ही, इनका सुख-विलास भी नित्य नवीन है। इस प्रकार श्रीलालजी श्रीप्रियाजी के सङ्ग मिलकर विविध प्रकार से हास्य-रस-विलास से युक्त हो रहे हैं ।।७४।।

दोहा—

अनहोंने सुख लै चले, गौनें के गुन जाल ।
सिंघासन पर आयकें, बैठत भये दोउ लाल ।।

पद— राग खमाच

बैठत भये दोउ लाल सिंघासन ।
अनहोंने गौनें के सुख लै,
दै असन भुज - माल ।।

चहुँदिसि ठाढी अति रति बाढी,
सुखद सहचरी जाल।
श्रीहरिप्रिया की रूपमाधुरी,
निरखत नैंन निहाल ।।७५।।

भावार्थ—

विवाह के बाद गौने का सुख-विलास कर रसिकदम्पति सिंहासन पर विराजमान होते हैं—

अनहोने-गौने के अमित सुखों को विलस कर श्रीप्रिया-प्रियतम परस्पर गलबाँही दिये सिंहासन पर आकर विराजमान होते हैं। सभी सखियाँ इन श्रीयुगल को चारों ओर से घेरकर खड़ी हो जाती हैं। श्रीप्रिया-प्रियतम के नित्य-विलास-सुख दर्शन में रंगी-पगी ये सहचरियाँ नव दूलह-दुलहन की बाँकी-झाँकी कर निहाल हो रही हैं !! ।।७५।।

।। श्री राधारंग–विहारिणीभ्यो नमः ।।

दोहा—

रंग रंगीली सहचरी, रंग रंगीली आदि।
श्रीराधा रंग विहार कौं, बरनति हैं उनमादि ।।

स्तोत्र— रागदेश

श्रीराधा रंगविहारनि, श्रीराधा पिय उरधारनि।
श्रीराधासुखबिसतारनि, श्रीराधा रतिसुखसारनि।।

श्रीराधा अति सुकुँवारी, श्रीराधा स्यामाप्यारी ।
श्रीराधा रूपउज्यारी, श्रीराधा जोवनवारी ॥
श्रीराधा नेह नवीना, श्रीराधा प्रेम प्रवीना ।
श्रीराधा रति रसभीना, श्रीराधा हित आधीना ॥
श्रीराधा गुन-गरबीली, श्रीराधा छैल-छबीली ।
श्रीराधा सोभा सीली, श्रीराधा रसिक-रसीली ॥
श्रीराधा स्याम सहेली, श्रीराधा कंचनबेली ।
श्रीराधा गरब-गहेली, श्रीराधा अति अलबेली ॥
श्रीराधा नित्यकिशोरी, श्रीराधा गुननिधि गोरी ।
श्रीराधा मनमृग डोरी, श्रीराधा प्रीतम जोरी ॥
श्रीराधा सब सुख सागरि, श्रीराधा सब गुन आगरि।
श्रीराधा रूप उजागरि, श्रीराधा नव नित नागरि ॥
श्रीराधा दिव्य सुदामिनि, श्रीराधा भव्यसुभामनि।
श्रीराधा कंताकामिनि, श्रीराधा भा अभिरामिनि॥
श्रीराधा शोभा सैनी, श्रीराधा मोभा मैनी ।
श्रीराधा पंकज नैंनी, श्रीराधा कोकिल बैनी ॥
श्रीराधा मृदु मधु हसिता,
श्रीराधा द्विज दुति लसिता ।

श्रीराधा पियहिय बसिता,
श्रीराधा रति रस रसिता ॥
श्रीराधा कृष्णवल्लभा, श्रीराधा कृपा सुल्लभा ।
श्रीराधा दंभ दुल्लभा, श्रीराधा प्रेम सुल्लभा ॥
श्रीराधा कोमल अंगा, श्रीराधा मैन तरंगा ।
श्रीराधा उरसि उमंगा, श्रीराधा केलि अभंगा ॥
श्रीराधा कुंजनिवासनि, श्रीराधा रासबिलासनि ।
श्रीराधा प्रेमप्रकासिनि, श्रीराधा प्रभा प्रवासिनि ॥
श्रीराधा वारिज वदनी, श्रीराधा सुखमा सदनी ।
श्रीराधा विसद बिरदनी, श्रीराधा मोहन मदनी ॥
श्रीराधा हंसा गवनी, श्रीराधा राजति रवनि ।
श्रीराधा क्रीड़ा कवनी, श्रीराधा दुःखहिं दवनी ॥
श्रीराधा जीवनि जी की, श्रीराधा प्यारी पी की ।
श्रीराधा हितू सुही की, श्रीराधा रहसि रसी की ॥
श्रीराधा लावनि ललिता, श्रीराधा अमृत सलिता ।
श्रीराधा कोमल कलिता, श्रीराधा करुणावलिता ॥
श्रीराधा चंपक बरनी, श्रीराधा चारु अभरनी ।
श्रीराधा पिय चित हरनी, श्रीराधा प्रेम वितरनी ॥

श्रीराधा कुंचितकेसा, श्रीराधा सहज सुवेसा ।

श्रीराधा महा सुदेसा, श्रीराधा पिय प्रानेसा ।।
श्रीराधा वामाभामा, श्रीराधा स्यामा रामा ।
श्रीराधा नित्य सुनामा, श्रीराधा नित्य सुधामा।।
श्रीराधा मोहन मित्रा, श्रीराधा परम पवित्रा ।
श्रीराधा चातुर चित्रा, श्रीराधा चारु चरित्रा ।।
श्रीराधा पराभक्तिदा, श्रीराधा सुद्धसक्तिदा ।
श्रीराधा सानुरक्तिदा, श्रीराधा गुण विरक्तिदा ।।
श्रीराधा रंग रँगीली, श्रीराधा हियें बसीली ।
श्रीराधा बारबडीली, श्रीराधा लाड़-लड़ीली ।।
श्रीराधा मोहनिमूरति, श्रीराधा सोहनि सूरति ।
श्रीराधा परमापूरति, श्रीराधा निति अविछूरति।।
श्रीराधा सुंदरि सोभा, श्रीराधा माधुरिमोभा ।
श्रीराधा आनँद गोभा, श्रीराधा लोचनलोभा ।।
श्रीराधा रूप मंजरी, श्रीराधा रंग मंजरी ।
श्रीराधा नवल मंजरी, श्रीराधा नेह मंजरी ।।
श्रीराधा सब सुख साधा,
श्रीराधा गुणनि अगाधा ।
श्रीराधा हरणी बाधा,

श्रीराधा हरिप्रिया राधा ।।७६।।

भावार्थ—

प्रस्तुत पद में सखियाँ श्रीप्रियाजी के रूप-गुण का गान कर रही हैं—

नित्य-रस-विहारिणी रंगीली श्रीराधा की जय हो ! ये प्रियतम श्यामसुन्दर को सदैव अपने हृदय में धारण किये रहती हैं। अपने प्रियतम के साथ परम-सुख का विस्तार करने वाली, रति-सुख की सार-स्वरूपा, प्रियतम के प्रति नित्य नये स्नेह में नवीन एवं प्रवीण, प्रेमाधीना, रति-रस-भीना, अति सुकुँवारी श्रीश्यामाप्यारी की जय हो ! रूप-शोभा एवं तारुण्य से सदैव एक-सी रहने के कारण गुण-गर्वीली, छैल-छवीली, रसिकरसीली, श्याम-सहेली, कंचनबेली, अति अलबेली, गर्व-गहीली, नित्य-किशोरी, गुणनिधि गोरी, प्रीतमजोरी, मन-मृग-डोरी, रूप उजागरी, नित्य-नव-नागरी, दिव्य-सुदामनी, भव्य-सुभामिनी, कंता-कामिनी, परम-अभिरामनी, शोभा-सीमा, मोभामैनी, पंकजनैनी, कोकिलबैनी, मन्द-मधुर-मुसकान तथा सुन्दर दन्त-पँक्ति की शोभा से युक्त, प्रियतम के हृदय में बसने वाली, प्रियतम की प्राणवल्लभा, प्रेम एवं कृपा से सुलभ होने वाली, दंभ से अति दुर्लभ, कोमलाङ्गी, दिव्य प्रेम-रङ्ग से उच्छलित हृदयवाली, प्रियतम के साथ नित्य-केलि-रत, नित्य-निकुञ्ज-वास करने वाली, नित्य-रास-विलास से युक्त, प्रेम का प्रकाश करने वाली, वारिजवदनी, सर्व सुखों की सदन स्वरूपा, दुःख का विदारण करने वाली, मोहन के मन का आकर्षण करने

वाली, हंस के समान चाल वाली, सब रमणियों में श्रेष्ठ, श्री लालजी की जीवनी स्वरूपा, प्रियतम की प्राणप्यारी, ललित-लावण्य से युक्त, अमृत-सलिला-स्वरूपा, कृपारूपा, चम्पा-पुष्प के समान वर्ण वाली, सुन्दर-सुन्दर आभूषण धारण करने वाली, कैशोरावस्था वाली, वृन्दावनवासिनी, परम पवित्रा, विविध प्रकार के चातुर्य से युक्त, पराभक्ति-प्रदायिनी, त्रिगुणात्मिका प्रकृति से विरति उत्पन्न करने वाली, प्रियतम के अनुराग से रञ्जित, लाड़-लड़ीली, मनोहर मूर्ति धारण करने वाली, सर्व प्रकार से परिपूर्ण, परम सौन्दर्य-माधुर्य से युक्त, रूप-रस-गंध की नवल मञ्जरी स्वरूपा, सर्व सुखों की सिद्धि स्वरूपा, अगाध गुणों से युक्त एवं सब प्रकार की बाधाओं का हरण करने वाली श्रीहरि की प्राणप्रिया श्रीराधिकाजी की सदा ही जय हो !! ॥७६॥

॥ श्रीराधाकृष्णैकात्मभ्यो नमः ॥

दोहा—

कृष्णरूप श्रीराधिका, राधे रूप श्रीस्याम ।
दरसन को ये दोय हैं, हैं एकहि सुखधाम ॥

स्तोत्र—

राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम स्याम स्याम राधे राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण नवघन गोरी राधे ।

राधेस्याम राधेस्याम सुंदर जोरी राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण अद्भुतरूपा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम सहज स्वरूपा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण मोहनि मूरति राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम सोहनि सूरति राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण नवरंगभीना राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम परम प्रवीना राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण कोमल अंगा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम सहज अभंगा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण अति सुकुँवारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम सुखद सुढारा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण अति कमनीया राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम रति रमनीया राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण परमापुंजे राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम रहसि निकुंजे राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण सब सुखसारा राधे ।
राधेस्याम राधेस्याम परम उदारा राधे ॥
राधेकृष्ण राधेकृष्ण प्रिय प्राणेसा राधे ।

राधेस्याम राधेस्याम दिव्य सुवेसा राधे ॥

राधेकृष्ण राधेकृष्ण मनहर मित्रा राधे।
राधेस्याम राधेस्याम विसदविचित्रा राधे।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण मंगल नामा राधे।
राधेस्याम राधेस्याम दिव्यगुणधामा राधे।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण नीरज नैना राधे।
राधेस्याम राधेस्याम आनंद ऐना राधे।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण नित्यविहारा राधे।
राधेस्याम राधेस्याम प्राण अधारा राधे।।
राधेकृष्ण राधेकृष्ण रूप उजारी राधे।
राधेस्याम राधेस्याम हरिप्रिया प्यारी राधे।।७७

भावार्थ—

श्रीरसिकदम्पति का गुणगान करती हुई सखियाँ कहती हैं—

ये श्रीप्रिया-प्रियतम तो सदैव 'एक स्वरूप सदा द्वै नाम' की संज्ञा से बिभूषित रहते हैं। भिन्नता तो इनमें नाम मात्र की है, वस्तुतः इनकी आत्मा एक ही है।

"राधेकृष्ण राधेकृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे। राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे।।" श्रीयुगल नाम-रूपी यह महामन्त्र वैष्णवमात्र को हर घड़ी व हरपल जपनीय है। इसीमें जीवमात्र का कल्याण सम्भव है।

श्रीराधिका श्रीकृष्णरूपा हैं तो श्रीकृष्ण श्रीराधा स्वरूप हैं। दर्शन मात्र को ये दो हैं तत्त्वतः तो ये परम सुख-धाम स्वरूप एक ही हैं। श्रीराधा गौर वर्ण वाली हैं तो श्रीकृष्ण नवघन स्वरूप हैं। सहज स्वरूप श्रीराधाकृष्ण की यह जोड़ी परम अद्‌भुत है। ये दोनों श्रीराधे व श्रीश्याम परस्पर परम अनुराग से भरे, चतुरशिरोमणि, कोमल अङ्गों वाले, सहज रूप में ही परिपूर्ण, अति सुकुमार सुन्दर रीति से सुख प्रदान करने वाले, अति कमनीय, परस्पर रति-विलास-रस में निमज्जित, सर्व श्रेष्ठ वस्तुओं के समूह स्वरूप, निकुञ्ज-रस में डूबे, सर्व सुखों के सारस्वरूप, परमोदार, एक-दूसरे के लिए प्राणाधार, दिव्य-वस्त्राभूषणों से युक्त, मनोहारी, परम मंगलस्वरूप, दिव्य गुणों के धाम स्वरूप, कमल जैसे नेत्रों को धारण करने वाले, परमानन्द के सार स्वरूप, नित्य-वृन्दावनविहारी, सहचरी वर्ग (रसिकजनों) के प्राणाधार तथा एक-दूसरे के स्वरूप का प्रकाश करने वाले परम मनोहर हैं !! ।।७७।।

दोहा—

श्रवन सुने स्तव सुचित, श्रीराधेश्याम सुजान ।
मध्यनिसा मन मानिकें, दियो सबकों सनमान ।।

पद—

रसिकवर दियो सबकों सनमान ।
श्रवननि सुनि निज सुजस,
सुचित श्रीराधेश्याम सुजान ।।

चले मनोहर मोहन मंदिर,
संग सखी सुखदान ।
श्रीहरिप्रिया पौढाय सेज पर,
करन लगी गुन गान ॥७८॥

भावार्थ—

उक्त प्रकार से स्वयश-श्रवण कर रसिकदम्पति सखिय की मनोकामना पूर्ण कर शयन-कुञ्ज में पधारते हैं—

श्रीराधे और सुजान श्रीश्यामसुन्दर ने चित्त लगाकर बड़े ही प्रेम पूर्वक अपने सुयश का अपने कर्णपुटों से श्रवण कर सब सब सखियों को सम्मान दिया, अर्थात् उनकी मनोकामना पूर्ण की। फिर दोनों श्रीरसिकदम्पति सब सखियों को अपने साथ ले शयन के लिये मोहन-महल में पधारे। वहाँ पहुँच कर श्रीप्रिया-प्रीततम सुख-सेज पर पौढ़ गये। उन्हें सेज पर पौढ़ा हुआ देख सखियाँ उन श्रीरसिकदम्पति का गुणगान करने लगीं ॥७८॥

*** अनुरागिनी सुष्ठुसुन्दरी मद्याभास ***

दोहा—

सुख सों, सेज विराजिये, दियें भुजा अंकमाल ।
स्यामा जू के लाड़िले, लाड़-लड़ीले लाल ॥

पद—

स्यामाजू के लाड़िले हो,
लाड़ - लड़ीले लाल ।

लाड़-लड़ी के लाड़-लड़ीले,
सोहैं नैंन विसाल ।।
सुख सों सेज विराजिये हो,
दिये भुजा अंकमाल ।
मोहन मदन वदन की,
शोभा निरखत होंहि निहाल ।।
हौं बलि-बलि या रूप पै,
हो परम अनूप रसाल ।
श्रीहरिप्रिय सुख संपति दंपति,
सदा बसो मम भाल ।।७९।।

भावार्थ—

सेज पर पौढ़े श्रीप्रिया-प्रियतम का गुण-गान करती हुई सखियाँ कह रही हैं—

हे श्रीश्यामाजू के लाड़िले ! हे श्रीलाड़लड़ीले लाल ! निश्चय ही आप लाड़-लड़ीली श्रीप्रियाजी के लाड़-लड़ीले लाल हैं ! आप दोनों के आलस्य-युक्त विशाल नेत्र-कमल बड़े ही सुन्दर लग रहे हैं। आप परस्पर गलबाँही देकर सुख पूर्वक शैया पर विराजमान होइये। काम के भी मन का मन्थन करने वाली इस समय की आपके मुखारविन्द की रूप-माधुरी का दर्शन कर हम सभी सखियाँ निहाल हो रही हैं ! हम आपके इस परम मनोहर अनुपम रूप-लावण्य पर बलिहारी जाती हैं !

श्रीहरिप्रियासहचरीजी कहती हैं—"श्रीरसिकदम्पति का यह नित्य-विहार-रस ही मेरी सुख-सम्पति है, यह सदा मेरे मस्तक को अलंकृत करता रहे ! अर्थात् मैं हर घड़ी, हर पल श्रीप्रिया-प्रियतम की इस दिव्य रस-माधुरी का पान करती रहूँ !! ॥७६॥

दोहा—

कहत बिहारीलाल बलि, सुनिये विहारिनि बैन ।
अर्द्ध-निसा आई यहै, अब कीजै सुख सैन ॥

पद— राग देश

विहारिनि कीजिये सुख सैन ।
श्रमित बदन सोहैं मन मोहैं,
झपकौ हैं नीरज नैन ॥
अलबेली आनंद की,
हो आई अधरैन ।
श्रीहरिप्रिया स्वामिनी हितू,
सहेलिन को सुख दैन ॥८०॥

भावार्थ—

शयन की बेला जानकर श्रीलालजी श्रीप्रियाजी से शयन करने के लिये प्रार्थना करते हैं—

'हे श्रीविहारिणीजू ! आनन्दमय अर्धरात्रि का समय हो गया है, ऐसा जान अब आप कृपाकर सुखपूर्वक शयन कीजिये ! आपके श्रमित मुखारविन्द की शोभा मेरे मन को मोह रही है।

आपके नेत्र-कमल भी निद्रा के वशीभूत होकर झपकी ले रहे हैं। हे अलबेलीजू ! आप हरिप्रियाजू व हितु सहचरीजू की स्वामिनी एवं सुख-प्रदान करने वाली हैं। अतः आपकी इन अन्तरङ्गा प्रिय सखियों की भी यही अभिलाषा है कि अब आप सुख पूर्वक सेज पर शयन करें ।।८०।।

दोहा—

तन मन मिलि बिहरत दोऊ, अति उदार सुकुँवार।
मन मोहन मन मोहनी, भीने रंग अपार ॥

पद— राग देश

मन मोहन मन मोहनि जू भीने रङ्ग अपार।
मोहन मंदिर मध्य करें दोउ सुख सों सुरत बिहार॥
गुणनिधि गोरी सेज पर जू सोये सुकुँवार।
मनहु दबी है अचल चंचला घन स्यामल कैं भार॥
रसिक रसीली राखे जू लै उरजनि के आधार।
अधर-सुधारस प्यावति पियकों प्यारी परम उदार।
तन मन मिलि एकत भये जू बिचि न समावत हार॥
निज दासी जहाँ निकट,
निहारति श्रीहरिप्रिया सुख सार ।।८१

भावार्थ—

परस्पर गलबाँही दिये श्रीप्रियाप्रियतम शयन-कुञ्ज में शयन कर रहे हैं—

मोहन महल के मध्य शयन-कुञ्ज में मनमोहनी श्रीप्रियाजी मनमोहन श्रीलालजी शयन कर रहे हैं। इस समय ये दोनों अपार अनुराग रङ्ग में भीगे हुए सुखपूर्वक सुरत-बिहार-रत हो रहे हैं। कोक आदि गुणों की समुद्र रूपा, सर्वतोभद्रा सेज पर पौढे श्रीयुगल सुकुमार परस्पर आलिङ्गन युक्त हो इस प्रकार दिखाई दे रहे हैं, मानो स्थिर विद्युत-लता श्यामलघन के भार से दबी जा रही हो ! रसिक-रसीली श्रीप्रियाजी प्रियतम श्रीलालजी को अपने हृदय से लगाये हुए बड़ी ही शोभायमान लग रही हैं ! इतना ही नहीं, वे परमोदारा श्रीप्रियाजी अपने प्यारे को अधर-सुधा-रस का पान भी करा रही हैं !! इस समय इन दोनों के तन-से-तन व मन-से-मन इस प्रकार मिले हुए हैं कि बीच में हार का पड़ना भी उन्हें खल रहा है !!! श्रीरसिकदम्पति के सर्व सुखों के सार स्वरूप इस सुख-विहार का अति निकट से दर्शन कर इनके परिकर की सखियाँ भी सफल मनोरथ हो रहीं हैं ।।८१।।

दोहा—

अलक-लड़ैती लाड़िली, अलक लड़ौ सुकुँवार ।
अलक लड़ो मोहन महल, अलक लड़ोइ विहार ।।

पद— राग देश

विहारनि अलक लड़ैती हो,
अलक लड़ौ सुकुँवार ।

अलक लड़े मोहन मंदिर मैं,
अलक लड़ोई बिहार ।।
अलक लड़ी उरझनि दोउन की,
अलक लड़ोई प्यार ।
अलक लड़ी श्रीहरिप्रिया निहारति,
अलक लड़ौ सुखसार ।।८२।।

भावार्थ—

शयन-सेज पर सुखपूर्वक पौढ़े श्रीरसिकदम्पति का गुण-गान करती हुई सखियाँ कह रही हैं—

लाड़ लड़ाने योग्य या तो ये श्रीविहारिणीजी हैं या इनके प्रियतम श्रीलालजी हैं ! ये श्रीयुगलकिशोर जहाँ निवास करते हैं, वह मोहन-महल भी लाड़ करने योग्य है तथा इनका नित्य-विहार भी लाड़ करने योग्य है । इतना ही नहीं इन दोनों की परस्पर की उलझन एवं इनका पारस्परिक प्रेम भी लाड़ करने योग्य है ! श्रीहरिप्रिया सहचरी तो अहर्निश श्रीप्रिया-प्रियतम से लाड़-लड़ाती हुई इनके नित्य-विहार का नित्य दर्शन करती रहती हैं। भला ऐसा क्यों न हो ? ये श्रीयुगल के निज-महल की निजदासी जो ठहरीं ! ।।८२।।

दोहा—

श्रीहरिप्रिया प्रियाजू हरि, हिलमिल हियँ सभीर ।
रहो सदा सुखनिधि सने, सुरत समर रणधीर ।।

कुंवर दोउ सुरत समर रणधीर ।
गुन मंदिर सुंदर वर दोऊ,
विहरत कुंज कुटीर ॥
सुख सागर नागर नागरि,
नव-नित्य उजागर अमृत सीर ।
श्रीहरिप्रिया प्रिया हरि,
हिय में हिलमिल रहो सभीर ॥८३

भावार्थ—

श्रीप्रियाप्रियतम के सुख-विलास का वर्णन करती हुई सखियाँ कह रही हैं—

कोक-कलादि में पारङ्गत, सुरत-समर के रणधीर योद्धा, निकुञ्ज-भवन में नित्य-विलास विलस रहे हैं। ये दोनों सर्व गुणों के आगार तथा परम सौन्दर्यवान हैं। सर्व सुखों के सार स्वरूप परम नागरी-नागर के परस्पर नित्य-विलास से अमृत के भी सार स्वरूप नित्य-रस का प्राकट्य हो रहा है। रसिक-सिरमौर श्रीप्रिया-प्रियतम की यह गौर-श्यामल जोड़ी अपनी अङ्ग-सङ्गिनी सहचरियों समेत हिल-मिलकर अर्थात् एक होकर इसी भाँति हमारे हृदय-मन्दिरों में सदैव निवास करती रहे ! हमारी यही एकमात्र चिर-अभिलाषा है ॥८३॥

दोहा—

सुख फूली आनँद लता, सरस महमही प्रेम ।
रसिक सहेलिन के सदा, रस बरषहि नित नेम ।

रसिकसहेलिम के रस बरषे ।
आनँदलता हिये मधि हरषे ॥
सखी-सहचरी फूलीं तन में ।
सरससुंदरी महमहि मन में ॥
प्रेम-मंजरी परम सुहाई ।
मन मोहनी महा मन भाई ॥
कनक-तनी रति बनी जोबनी ।
चिमतकारिनी सुभ सुदरसनी ॥
एक एक तें अति अलबेली ।
लाड़भरी गुन गरब गहेली ॥
एक बरन तन बैस किशोरी ।
एकरूप रस मांहि झकोरी ॥
झमकि झमकि टहलैं अनुसरहीं ।
जो जो श्रीहरिप्रिया आज्ञा करहीं ॥
श्रीरङ्गदेवी के जुथ महियां ।
कलकंठी नव वासा पहियां ॥
मंगल आरती सैन प्रजंता ।
जुगल चंद्र की केलि अनंता ॥

सूचित सुचि तन रङ्ग बढ़ व ।

रङ्ग रङ्गीली के मन भावें ।।
रङ्गरलीं के रङ्ग रचावें ।
मंगल बिमलो खेल मचावें ।।
चरन चरन पर परनि एक गति ।
कर पर करतारनि की जति अति ।।
मगन भईं तन सुधि न संभारैं ।
आनंद सिंधु बढ्यौ है अपारैं ।।
यह सुख मुख कछु कहत न आवै ।
बिन श्रीहितू कृपा को पावै ।।
श्रीहरिप्रिया सकल सुख सार ।
लाल-लाड़िलो नित्यविहार ।।८४।।

भावार्थ—

श्रीरसिकदम्पति के सुरत-विहार का दर्शन कर सभी सखियाँ आनन्द-विभोर हो रही हैं—

नित्य-विहर-रस के वर्षण से रसिक हृदया सखियाँ परम हर्ष से भर उठती हैं। उनके हृदय में आनन्द-रूपी लता लहराने लगती है। यह रसोल्लास उनके तन में समाता नहीं है। बार-बार उच्छलित हो रहा है। श्रीप्रियाप्रियतम के इस प्रेम-महोत्सव में सम्मान प्राप्त कर रस-भीनी सुन्दरी सखियाँ अपने-अपने मन में मतवाली हो रही हैं। ये प्रेम-मञ्जरी रूप सहचरियाँ प्रेम-रस से

अभिभूत होने के कारण परम सुहावन, मन-भावन लग रही हैं। ये सखियाँ स्वर्ण-कान्ति से युक्त विग्रह वाली, साक्षात् रति के समान सुन्दर कैशोरावस्था से युक्त अति चमत्कृत तथा मंगल स्वरूप वाली हैं। इनमें सभी एक-से-एक बढ़कर अलबेली-छबीली तथा रसिकदम्पति के कोक-कलादि गुणों के अभिमान को गम्भीरता पूर्वक ग्रहण करने वाली हैं। ये सभी समवयस्क किशोरावस्था वाली तथा समान वर्ण वाली हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो ये सभी रूप-रस के एक ही साँचे में ढाली गई हैं! श्रीप्रिया-प्रियतम का रुख देखकर रमक-झमक चाल से उच्छलित हृदय हो अहर्निश उनकी सेवा में डूबी रहती हैं। श्रीरङ्गदेवीजी के यूथ में सुन्दर कण्ठ वाली नववासा आदि सखियाँ हैं, जो श्रीप्रिया-प्रियतम की मंगला से लेकर शयन पर्यन्त उनकी अनन्त केलि का समाधान करती रहती हैं। ये सभी सहचरियाँ अपने संकेतों द्वारा शृङ्गार-रस की साक्षात् मूर्ति श्रीरसिकदम्पति के सुख-विलास का संवर्धन करती रहती हैं। रंग-रंगीली श्रीरङ्गदेवी को श्रीयुगल की यह टहल-महल बड़ी ही अच्छी लगती है। अनुराग रंग से रञ्जित हृदय वाली ये सखियाँ कभी मंगल-विमली नामक खेल रचती हैं, जिसमें ये ठुमुक-ठुमुक कर चलती हुई नृत्य करती हैं तथा संगीत के स्थायी-भाव के साथ करतल ध्वनि करती हुई अलापचारी करती हैं। इस प्रकार नृत्य-क्रीड़ा में मगन ये सखियाँ अपने शरीर की भी सुध-बुध खो जाती हैं। आनन्द का सागर उमड़

पड़ता है। सचमुच ही यह सुख वाणी का विषय नहीं है। श्रीहितु सहचरी की कृपा के बिना भला यह सुख कौन पा सकता है ? श्रीलाड़िली-लाल का यह नित्य-विहार ही श्रीहरिप्रिया सहचरी के सर्व सुखों का मूल है ॥८४॥

❀ अथ फल-स्तुति ❀

दोहा—

रसिक रंगरेली सबै, रसिक सहेली गाय।
आवैं निज निज कुञ्ज में, लालैं लाड़-लड़ाय॥
इहि विधि सेवा-सुख समैं, मंगल सैंन प्रज्यंत।
ध्यावैं सो पावैं सदा, परम तंत को तंत॥

कुण्डलिया—

हीन श्रधा नास्तिक हरि-धर्म बहिर्मुख होइ।
जिनसौं यह जस महारस कहौ सुनौ जिन कोइ॥
कहौ सुनौ जिन कोइ बिना इक अनंनि उपासिक।
ताहूमें यह भाव सखी वृन्दावन बासिक॥
श्रीहरिप्रिया पद पद्मको मनमधुकर जिहि कीन।
सोई सब तें श्रेष्ठ हैं और सबैं जग हीन॥

भावार्थ—

इस प्रकार ग्रन्थ की समाप्ति पर ग्रन्थकार (श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी) प्रस्तुत ग्रन्थ (सेवा-सुख) के कहने व सुनने वाले अधिकारी का निर्णय करते हुए कहते हैं—

श्रीरसिक-रसिकिनी के अनुराग से रञ्जित सभी रसिकिनी सहचरियाँ गायन-वादन के साथ उक्त प्रकार से श्रीलाड़िलीलाल को लाड़-लड़ाकर अपनी-अपनी कुञ्जों में विश्राम करने के लिये पधारती हैं।

इस प्रकार से यह 'सेवा-सुख' जिसमें श्रीप्रिया-प्रियतम की मङ्गला से लेकर शयन पर्यन्त की अष्टकालीन सेवा-विधि का वर्णन है, अब समाप्त होता है। जो कोई भी परम श्रद्धा पूर्वक श्रीयुगलकिशोर की अष्टकालीन-सेवा का ध्यान करेंगे वे निश्चय ही श्रीप्रिया-प्रियतम के नित्य-विहार को प्राप्त होंगे। इसमें किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं है।

जो श्रद्धाहीन, नास्तिक तथा वैष्णव धर्म से बहिर्मुख हों उनके प्रति श्रीप्रिया-प्रियतम के इस 'सेवा-सुख' का (जिसमें शृङ्गार-रस का गूढ़ भाव छिपा है) श्रवण-कथन न करे। अर्थात् अवैष्णवों से न तो सुने और न कहे। श्रीरसिकदम्पति का यह 'सेवा-सुख' एकमात्र उन अनन्य रसोपासकों से ही कहना-सुनना चाहिये जो सखी-भाव से उपासना करने वाले तथा श्रीधाम-वृन्दावन में निवास करने वाले हों। उपरोक्त अधिकारियों में से जिन्होंने अपने मन को श्रीप्रिया-प्रियतम के चरणारविन्दों का मधुप बना दिया है, वे ही सर्वश्रेष्ठ साधक हैं। इस संसार में अन्य प्रकार के साधक उनसे हीन ही हैं।

दोहा—

षट अरु तीस श्लोक सुनि, अरु पुनि दोहा पांच।
चौरासी आभास जुत, पद द्वै दोहा सांच॥

एक कुंडलिया ए सबै, अट्ठाइस सत एक।
अब अनुरागिनि प्रति जु पद, कहत सु बरनि विवेक ॥

कवित्त—

च्यारि सुभरवा मांहि दोय दिवि गंधा में कहि।
रत्नकला में तीन विश्व आभा द्वादश चहि ॥
नव विलास आवली सप्त आनंदा में सुनि।
दस सुरंग अंगा जु गौर मुख्या में षट पुनि ॥
षटहु केलि कौमुदी में कर्नकान्ति षट जानिये।
द्वै अलबेली केलि में रहे जु सो उनमानिये ॥
विचित्र सोभा में च्यार एक कंद्रप कामा में।
खंजनाक्षि षट कहे षटहु सुंदरि सुष्टा में ॥
चौरासी पद इहि प्रकार सेवासुख लहिये।
पन्द्रह अनुरागिनी मांहि संपूरन सहिये ॥

दोहा—

अष्ट काल सेवाजु सुख, अहल महल की बात।
कछू अलभि ताहि न रहे, साधहि सो साछचात ॥

इति श्री पद विलास निंकुञ्ज-रहस्य श्रीमहादिव्य
महाराजेश्वर प्रवर परमहंसवंशाचार्य्य श्रीमद्
हरिव्यासदेवजू कृत-श्रीमहावाणी
अष्टकाल सेवासुख सम्पूर्णम् ॥

भावार्थ—

ग्रन्थ की समाप्ति पर ग्रन्थकार ग्रन्थ (सेवा-सुख) में आये हुए पदों की गणना तथा राग-रागिनियों का वर्णन करते हुये कहते हैं—

इस सेवा-सुख के प्रारम्भ में ३६ श्लोक तथा ५ दोहे हैं। तत्पश्चात् आभास-दोहों सहित ८४ पद हैं। ग्रन्थ समाप्ति पर दो दोहे तथा एक कुण्डलिया है। इस प्रकार कुल मिलाकर १२८ पद हैं। कौन-कौन सी राग-रागिनियों में कितने-कितने पद हैं, उसका वर्णन निम्न प्रकार से है।

आरम्भ के चार पद सुभरवा (भैरव) राग में, दो दिवि-गन्धा (देवगंधार) राग में, तीन रत्नकला (रामकली) में, बारह विश्वाभा (विभास) में, नौ विलसावली (विलावल) में, सात आनन्दा (आसावरी) में, दस सुरंग अंगा (सारँग) में, छः गौरमुखी (गौरी) में, छः केलिकौमुदी (कल्याण) में, छः कर्ण-कान्ति (कान्हरा) में, दो अलवेली-केलि (अडानो) में, चार विचित्रशोभा (विहागरौ) में, एक कन्दर्पकामा (केदारा) में, छः खञ्जनाक्षी (खम्माच) में और छः सुष्ठु सुन्दरी (सोरठा) राग में। इस प्रकार पन्द्रह प्रकार की राग-रागिनियों का प्रयोग किया गया है। सेवा-सुख में कुल पदों की संख्या ८४ है।

प्रस्तुत ग्रन्थ की फल-स्तुति का वर्णन करते हुए ग्रन्थकार श्रीहरिव्यासदेवाचर्यं (श्रीहरिप्रियासहचरी) कहते हैं—

'इस अष्टकालीन सेवा-सुख में अहल-महल अर्थात् मोहन=

महल में बसने वाले श्रीप्रिया-प्रियतम तथा उनकी परिकर की सभी सहचरियों की सभी बातों का साङ्गोपाङ्ग वर्णन किया गया है। इसका निरन्तर सेवन करने से श्रीप्रिया-प्रियतम के मोहन-महल की कोई भी बात अलभ्य नहीं रहेगी। श्रद्धापूर्वक इसकी साधना करने से निश्चय ही श्रीरसिकदम्पति के नित्य-विहार के साक्षात् दर्शन होंगे—इसमें किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं करना चाहिये ।। इति फल-स्तुति ।।

इति श्रीपदविलास निकुञ्ज-रहस्य श्रीमहादिव्य महाराज राजेश्वर प्रवर परमहंसवंशाचार्य श्रीमद्हरिव्यासदेवा-चार्यजी विरचित—श्रीमहावाणी के अष्टयाम "सेवा-सुख" का रसिकचरणरज प्रेम-प्रियादास (प्रेमनारायण श्रीवास्तव 'प्रियादास') कृत सरल हिन्दी अनुवाद सम्पूर्णम् ।।

* इति शुभम् *



❀ षोडशाक्षरी-युगलनाम-महामन्त्र-संकीर्त्तन ❀

राधे कृष्ण राधे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण राधे राधे ।
राधेश्याम राधेश्याम, श्याम श्याम राधे राधे ॥

❀ श्रीभगवत्-भागवत-संकीर्त्तन ❀

राधा सर्वेश्वर सुखरास, श्रीनिम्बारक श्रीहरिव्यास ।
सनक सनन्दन सनत्कुमार, श्रीनारद मुनि परम उदार ॥
श्रीरंगदेविजू हरिप्रिया पास, युगलकिशोर सदा सुखरास।
जय वृन्दावन जय जमुना, जय वंशीवट जय पुलिना ॥
जयजय श्यामा जयजय श्याम, जयजय श्रीवृन्दावनधाम ।
श्रीहरिप्रिया सकल सुखसार, सर्व वेद को सारोद्धार ॥

❀ श्रीवृन्दावन-माधुरी ❀

रे मन वृन्दाविपिन निहार ।
यद्यपि मिलै कोटि चिन्तामणि तदपि न हाथ पसार ॥
बिपिन राज सीमा के बाहर हरिहू कों न निहार ।

जय श्रीभट्ट धूरि धूसर-तन यह आसा उर धार ॥

श्रीसर्वेश्वर कार्यालय, श्रीजी मन्दिर

वृन्दावन से सम्प्राप्य ग्रन्थ—

हिन्दी प्रकाशन

१. महावाणी ३०)
२. श्रीनिम्बार्काचार्य और उनका सम्प्रदाय २५)
३. श्रीभट्टदेवाचार्य और उनका युगलशतक २०)
४. वृन्दावनाङ्क २०)
५. व्रजलीला-अङ्क २०)
६. श्रीराधा-अङ्क २०)
७. रसोपासना-अङ्क २०)
८. भक्तगाथा-अङ्क २०)
९. श्रीसर्वेश्वर-अङ्क ११)
१०. श्रीनारायण स्वामी की वाणी १०)
११. श्रीनागरीदासजी की वाणी १५)
१२. श्रीगोविन्दशरदेवाचार्यजी की वाणी ५)
१३. लाल बलबीर का हजारा ५)
१४. गीतामृत गङ्गा ५)
१५. व्रजरस सर्वस्व ४)
१६. सेवासुख २)
१७. सेवासुख (सटीक) ५)
१८. उत्सव-सुख २)५०
१९. युगलरस-माधुरी)५०
२०. युगलशतक (मूल) १)
२१. श्रीभगवतरसिकजी की वाणी ५)
२२. श्रीस्वामी हरिदासजी की वाणी 'केलिमाल')५०
२३. युगल-संकीर्त्तन)२५
२४. स्तुति-संकीर्त्तन (मन्त्र जप विधि सहित))७५
२५. श्रीसर्वेश्वर-चालीसा)१०
२६. निगमसार)७५
२७. श्रीनिम्बार्क भजनमाला)५०
२८. श्रीराधा-कृष्ण-कृपा-कटाक्ष-स्तोत्र)१०
२९. युगल सम्बन्ध पत्र)५०